सं. RNI-1275103

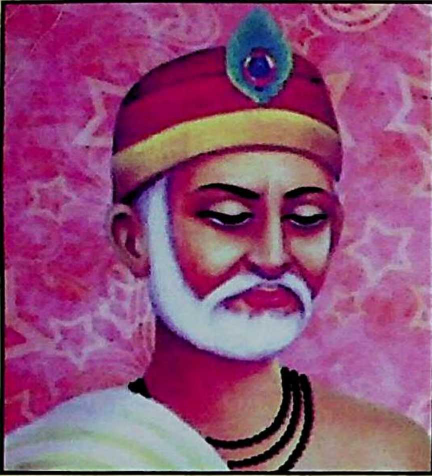
ISSN 2348-9685
अप्रैल - जून, 2017 - वर्ष - 1, अंक -3
सहयोग राशि - 35/-

समकालीन

स्पंदन



काशी से प्रकाशित त्रैमासिक



कबीर

(1398-1518)

राम तेरी माया दुंद मचावे।
गति मति वाकी समझि परै नहिं, सुरवर मुनिहि नचावै
का सेमर के तरबर बढ़ये, फूल अनूपम बानी।
केतिक चातक लागि रहे हैं, चाखत सबा उड़ानी।
कहा खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै।
गीखम ऋतु आई तुलानी, छाया काम न आवै।
अपना चतुर और का सिखवै, कामिनी, कनक सयानी।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, राम चरण रति मानी।



संतो धोखा कासों कहिए।
गुन में निरगुन, निरगुन में गुन, बाट छाँडि क्यों चहिए।
अजरा अमर कथै सब कोई अलख ना कथणा जाई।।
नाहिं स्वरूप बरण नहिं जाके घट घट रह्यो समाई।।
प्यंड, ब्रह्मांड कहै सब कोई, वाके आदि अरु अंत न होई।।
प्यंड ब्रह्मंड छाँडिके कथिये कहै कबीरा सोई।।



निर्गुण राम जपहु रे भाई अविगति की गति लखी न जाई
चारि वेद जाके सुभृत पुराणा, नौ व्याकरना मरम न जाना।।
शेष नाग जाके गरुड़ समाना, चरन कँवल कँवला नहि जाना।
कहै कबीर जाके मद नाहीं निज जन बैठे हरि की छाँहीं।।

सं. RNI-1275103


शंखनाद की परिकल्पना

समकालीन स्पंदन

(काव्य केन्द्रित त्रैमासिक)

वर्ष-1 : अंक 3 (अप्रैल-जून) 2017



संरक्षक

पं. हरिराम द्विवेदी, डॉ. दरवेश भारती

राजेन्द्र बेरी



प्रधान संपादक

वासुदेव उबेराय - (09452207888)



प्रबन्ध संपादक

गौतम अरोड़ा 'सरस' - (09415303224)



संपादक

धर्मेन्द्र कुमार गुप्त

(धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल')

08935065229, 08004550837



कार्यालय

के. 3/10 ए, माँ शीतला भवन

गायघाट, वाराणसी-221001

email : samkaleen.spandan@gmail.com



अर्थ सहयोग

इस अंक की सहयोग राशि : 35/-

त्रैवार्षिक : 350/-, पंचवार्षिक : 600/-, आजीवन : 2100/-



चित्रांकन : विज्ञान व्रत



शब्द संयोजन : बृजेश पाण्डेय

(एस०एस० कम्प्यूटर), वाराणसी

मुद्रक : श्रीजी प्रिण्टर्स, नाटी इमली, वाराणसी

इस अंक में

सम्पादकीय

परिवर्तन चिरन्तन सत्य है। संसृति में परिवर्तन अपरिहार्य है, वह चाहे मानव के निजी जीवन में हो, समाज अथवा राष्ट्र में हो या वैश्विक स्तर पर हो। प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि लार्ड टेनीसन का मानना है कि 'कोई भी विधान अथवा नियम कितना ही अच्छा क्यों न हो दीर्घकाल के उपरान्त विकारयुक्त हो जाता है और समाज को भ्रष्ट करने लगता है।' इसलिए मानव समाज में परिवर्तन होते रहना चाहिए। आनन्द नव्यता में है। एकरसता नीरसता एवं शुष्कता की स्थिति उत्पन्न करने लगती है। अल्प परिवर्तन का अनुभव तो हम प्रतिदिन करते हैं- प्रातः-संध्या, सुख-दुख, आशा-निराशा, सफलता-विफलता आदि परिवर्तन के लघु रूप हैं।

परिवर्तन का प्रत्येक रूप मानव को प्रभावित करता है और उसके आन्तरिक व्यक्तित्व पर अपनी छाप छोड़ जाता है। परिवर्तन का भव्य एवं सुन्दर रूप मन को हर्षित करता है तो उसका भयंकर स्वरूप हृदय को विचलित कर देता है। प्रकृति के महाविनाशकारी परिवर्तन लम्बे समय तक मन-मस्तिष्क को विदीर्ण किये रहते हैं।

कविवर पंत ने परिवर्तन को सत्य, शिव एवं सुन्दर माना है, तभी तो आरम्भ से ही मानव विनाश के उपरान्त भी अस्त-व्यस्त शक्ति, ऊर्जा एवं संसाधन को समन्वित कर नव निर्माण अथवा पुनर्निमाण के लिए प्रयासरत रहा है। महाकवि प्रसाद के शब्दों में-

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त / विकल बिखरे हैं हो निरूपाय।
समन्वय उसका करे समस्त / विजयनी मानवता हो जाय।

समय-समय पर भौतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन होते रहे हैं, होते रहेंगे।

यह त्रिमास भारतीय धर्म संस्कृति एवं साहित्य में आस्था रखने वाले जन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, महावीर हनुमान, महाप्रभु वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य, महर्षि परशुराम, वीर शिवाजी, जगद्गुरु शंकराचार्य, महाकवि सूरदास, महात्मा बुद्ध, महाराणा प्रताप एवं संत कबीर के प्राकट्य उत्सव सहित भगवान शनिश्चर जयन्ती एवं गंगा दशहरा का पावन पर्व भी इसी त्रिमास में हैं। इसी त्रिमास में जनकवि नागार्जुन, निबन्धकार पं. बालकृष्ण भट्ट जैसी साहित्यिक विभूतियों के जन्मदिवस भी आयोजित होते हैं।

श्रमिक दिवस (1 मई) श्रमजीवियों एवं मजदूरों के अधिकारों एवं उनकी सुख-सुविधा के लिए उचित प्रयास की अपेक्षा करता है तो विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) हमें पर्यावरण संरक्षण एवं ग्लोबल वार्मिंग को न्यून करने के उपक्रम के लिए प्रेरित करता है। वृक्ष, जल एवं मृदा का संरक्षण मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक जन का जागरुक होना आवश्यक है। विकास के लिए प्रकृति का दोहन कितना समीचीन है यह प्रश्न विचारणीय हैं।

महापुरुषों, संतों एवं साहित्यकारों की जयन्ती का आयोजन कर हमें युवा पीढ़ी को उनके व्यक्तिगत एवं कृतित्व से सुपरिचित कराना है ताकि वे समाज, राष्ट्र एवं विश्वहित के लिए चिंतन करें एवं इसके लिए सार्थक प्रयास करे। महापुरुषों का अनुसरण करके ही विश्व कुटुम्ब का कल्याण सम्भव है। विश्व शान्ति एवं अभ्युदय के लिए प्रत्येक व्यक्ति की कामना होनी चाहिए-

सर्वे भवन्तु सुखिनः / सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु / मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्

दृष्टिकोण

रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर', फिरोजाबाद

पत्रिका का नया अंक मिल गया। कुछ चीजों पर ध्यान गया। सम्मान्य ज़हीर कुरेशी साहब ने हिन्दी और उर्दू-ग़ज़ल की तुलना करते हुए बहुत महत्वपूर्ण बातें कहीं हैं परन्तु आश्चर्यजनक रूप से वे हिन्दी ग़ज़ल का प्रारम्भ दुष्यंत कुमार त्यागी से मानते हैं। कबीर, अमीर खुसरो का या भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' जैसे तमाम रचनाधर्मियों के अतिरिक्त गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' जैसे द्विवेदीयुगीन कवियों की ग़ज़लों को दरकिनार कर दिया जाए, निराला के ग़ज़ल-प्रयोगों को छोड़ दिया जाए तो भी दुष्यंत से बहुत पहले रामस्वरूप 'सिन्दूर' ने लाल किले के कवि सम्मेलन से ग़ज़लें पढ़ी थीं और स्व० बलवीर सिंह 'रंग' की ग़ज़लें तो लोकप्रसिद्ध हैं। रंग की एक ग़ज़ल दे रहा हूँ-

आग पानी हुई हुई न हुई
मेहरबानी हुई हुई न हुई
कौन जाने फ़िज़ा-ए-जन्नत में
ज़िंदगानी हुई हुई न हुई
आप हों, हम हों, सारा आलम हो
ऋतु सुहानी हुई हुई न हुई
सरफिरे दिल के बादशाहों की
राजधानी हुई हुई न हुई
'रंग' हाज़िर है बज़्मे-दाना में
कद्रदानी हुई हुई न हुई

रंग औघड़ और फक्कड़ थे। इसलिए अपने प्रचार पर कम ध्यान दे पाए परन्तु साहित्य के विद्यार्थी उनसे परिचित हैं, इस तथ्य से भी कि वे दुष्यंत से बहुत पहले ग़ज़लें कह और सुना रहे थे और जहाँ दुष्यंत की ग़ज़लें अनेक स्थलों पर भाषा और शिल्प के स्तर पर मात खाती दिखाई पड़ती हैं, वहाँ रंग की ग़ज़लें नोक-ओ-पलक दुरुस्त हैं।

दुष्यंत कुमार से कुछ पहले तो स्व० राजेश दीक्षित ने भी ग़ज़ल में एक विलक्षण प्रयोग किया था। उन्होंने उर्दू की ग़ज़लें लिखीं और स्वयं ही हिंदी में उसी छंद, उसी बहर और पूर्णतः हिंदीकरण करते हुए उसका अनुवाद स्वयं किया। एक उदाहरण देता हूँ।

उर्दू	हिंदी
जब्त इतना रहे आलमे-हिज्र में	यों विरह की कथा पर नियंत्रण रहे
आह निकले न फिर कोई आवाज़ हो	एक उच्छ्वास ही मात्र अवशिष्ट हो
शहजहाँ की नजर थर-थराए नहीं	हो प्रकंपित नहीं दृष्टि श्रीराम की
कब्र में दफ़्न जब उसकी मुम्ताज हो	प्रियतमा जानकी जबकि भूमिष्ठ हो

ऐसे एक दो नहीं, स्व. दीक्षित जी ने 10 ग़ज़लों के प्रयोग किए थे और यह दुष्यंत के ग़ज़ल के क्षेत्र में उतरने से पहले की बात है। ज़हीर साहब से इस इतिहास को विस्मृत व उपेक्षित कर देने की उम्मीद नहीं थी।

निराला के भिक्षुक की नितांत नई और युक्तिसंगत व्याख्या के लिए भारत यायावर बधाई के पात्र हैं। डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ने हिन्दी ग़ज़ल पर बहुत शोधपरक एवं उपयोगी आलेख लिखा है। नवगीत ने इधर गृहरति के बड़े मोहक और आत्मीय बिम्ब उकेरना प्रारम्भ कर दिया है। यश मालवीय जी के गीत वही साक्षी देते हैं। अच्छे व प्रभावी नवगीत, ग़ज़लें और अन्य सभी रचनाएँ अच्छी हैं। आपका चयन पत्रिका को अत्यंत उपयोगी बनाता है।

चन्द्रसेन विराट, इन्दौर

अंक अत्यंत समृद्ध, पठनीय एवं मननीय है। चारों विद्वानों के आलेख प्रभावी हैं। गीत और ग़ज़लें बराबरी से तुल रही हैं। अंक की प्रस्तुति भी सुंदर है। प्रतिबिंब में साहित्यिक गतिविधियों के सार समाचार ज्ञात हो गए। संक्षिप्त समीक्षाएँ देनी पड़ी हैं। पुस्तकों की आवक अपेक्षा से अधिक दिख रही है।

राजेन्द्र तिवारी, कानपुर

समकालीन स्पंदन का नया अंक प्राप्त हुआ। आभार। आपने अंक में शामिल किया एतदर्थ धन्यवाद अंक में सहभागिता के कारण ग़ज़लों पर "नो कमेन्ट" ही कहा जा सकता है, ज़हीर कुरैशी की हिन्दी और उर्दू ग़ज़ल का रिश्ता जोड़ने की कोशिश पत्रिका के उद्देश्य को समर्थन देती है, मयंक श्रीवास्तव के गीत अपनी कहन का प्रभाव छोड़ते है, संक्षेप में एक संवेदन को स्पंदित करने में सफल अंक हेतु स्पंदन परिवार को हार्दिक बधाई।

अशोक मिज़ाज, सागर

अभी 2 अंक ही मुझे प्राप्त हुए हैं, लेकिन पत्रिका ने हाथ में आते ही पूरा पढ़ जाने को मजबूर किया। यह बड़ी बात है। गीत, नवगीत, ग़ज़लें, नज़्में, कवित्त, कुंडलियाँ, दोहे, कविताएँ, हाइकु और अच्छे-अच्छे आलेखों से सजी-धजी पत्रिका अच्छे कवि और ग़ज़लकारों की रचनाओं का संगम एक ही अंक में देखने को मिला। यह एक परिपूर्ण पत्रिका है, जो सभी विधाओं का सम्मान करती प्रतीत हुई। रचनाओं का स्तर भी पसंद आया। यह आपके कुशल संपादन, आपकी सोच, पारखी नज़र और आपकी मेहनत का ही प्रतिफल है। ऐसा लगा जैसे सुबह-सुबह किसी भरपूर उद्यान में 2 घंटे सैर की हो और तरह-तरह के फूलों की ख़ुशबू का आनंद लिया हो। आशा करता हूँ कि ये सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा। साधुवाद!

डॉ. मधुर नज्मी, मऊ

समकालीन स्पंदन के जनवरी-मार्च अंक से मुख़ातिब हूँ। संपादकीय में आप का दो टूक विचार "कविता लिखना अपराध नहीं है किन्तु अ-कारण कविता लिखना बुद्धिमानी भी नहीं है। सच्चा कवि तब तक लेखनी नहीं उठाता जब तक वह कुछ लिखने को विवश नहीं हो जाता" लेखन के लिए नसीहत आमेज़ है, बग़ैर आन्दोलित हुए लेखन की स्थितियाँ बनती ही नहीं। रचनाशीलता एक संवेदनात्मक 'जुनून' है, बग़ैर 'जुनून' के कुछ भी सार्थक संभव नहीं हो पाता। 'स्पंदन' के सारस्वत प्रयास से कविता-साहित्य की दिशा सुनिश्चित होगी, ऐसा विश्वास है। भारत यायावर का आलेख निराला की 'भिक्षुक' कविता को लेकर काफ़ी आधार-फ़लक से समन्वित है। साहित्य की प्रगतिशील विचारधारा ने साहित्य का सिर्फ़ अवमूल्यन ही नहीं किया है, विराट विस्तृति भी दी है। आलेख को पढ़कर ऐसी अनुभूति होती है। डॉ० वेदप्रकाश 'अमिताभ' का आलेख 'हिन्दी-ग़ज़ल का पहला ग़ज़ल-संग्रह : गुलबहार' अपनी कथन-अभिव्यक्ति और तार्किक कसौटी पर काफ़ी वाजिब है। हिन्दी ग़ज़ल का बुनियादी सूत्र 'गुलबहार' में पोशीदा है, डॉ० अभिताभ के इस अभिमत "....जब तक कोई प्रामाणिक शोध-कार्य सामने नहीं आता, तब तक 'गुलबहार' को पहले ग़ज़ल-संग्रह की मान्यता समीचीन है।" पर हिन्दी-ग़ज़लकारों-समीक्षकों को संजीदगी से विचार करना चाहिए। 'वातायन' स्तम्भ से नई-नई साहित्यिक जानकारियाँ मिलती है, नए लेखकों के लिए जो समझ-सम्पन्न है 'स्पंदन' एक बड़ा प्लेटफॉर्म है। सधे हुए रचनाकारों की उपस्थिति से पत्रिका की आंतरिकता ऊर्जस्वल है। समय-समय पर पत्रिका के सौजन्य से होने वाली विचार-संगोष्ठियाँ, कविता के सरोकारियों को अ-क्षर गति देती हैं। ईश्वर यह अदबी सिलसिला काइम रक्खे।

डॉ. अनुराधा चंदेल ओस, मिर्ज़ापुर

समकालीन स्पंदन का अक्टूबर-दिसम्बर अंक 16, प्राप्त हुआ। आभार। अंक में सभी विधाओं को बराबर स्थान दिया गया है। ग़ज़ल सीखने वालों के लिए ग़ज़लों का शास्त्रीय अध्ययन उपयोगी है। सभी कवियों, ग़ज़लकारों की कविताएँ, ग़ज़लें उम्दा हैं। कविता अपने मन के सच्चे भावों को व्यक्त करती हुई सामाजिक चेतना का विकास करती है। आगे भी अच्छी रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगीं इसी उम्मीद के साथ......।

दीपक गोस्वामी 'चिराग़', बहजोई

समकालीन स्पंदन का जनवरी-मार्च 2017 अंक मिला। आभार। आपने संपादकीय में काव्यं यशसेर्थ कृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षये सद्यः परमिर्वृत्तये कांता सम्मित तयोपदेशयुजे।। इस श्लोक द्वारा आज की कविता में संप्रेषणीयता के गिरते स्तर व आधुनिक कविता की पाठकों से बढ़ती दूरी पर अपना गहन चिंतन व विवेचन दिया है। आचार्य मम्मट ने काव्य में भाव, विचार, कल्पना एवं शैली, चार तत्वों की प्रमुखता स्वीकार की है, परन्तु आज की कविता दिल के बजाए दिमाग से लिखी जा रही है। आपकी यह चिंता वाजिब है, जो आप जैसे संपादक व साहित्यकार ही कर सकते है।

इस अंक के सभी आलेख बहुत रुचिपूर्ण व ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से यह निराला का 'भिक्षुक' कौन है और हिंदी और उर्दू ग़ज़ल का रिश्ता। 'थाती' में हरिवंश राय बच्चन व प्रेरक स्पंदन में महेन्द्र सिंह नीलम की प्रभावपूर्ण रचनाएँ हैं। पुण्य स्मरण में पिछले वर्ष में ही दिवंगत हुए साहित्यकारों डॉ. विवेकी राय, बेकल उत्साही, भवेशचंद्र जायसवाल आदि का भी स्मरण उनकी रचनाओं के माध्यम से किया है। देदीप्यमान नक्षत्र में मुक्त छंद कविता के सशक्त हस्ताक्षर मुक्तिबोध की भी दो रचनाएँ पढ़ने को मिलीं। साधुवाद। इस अंक के सभी गीत/नवगीत, ग़ज़ल, छंद, मुक्तछंद रचनाएँ अच्छी लगीं।

मोतीप्रसाद साहू, अल्मोड़ा

समकालीन स्पंदन का जनवरी-मार्च 2017 अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर मन आनंदित हुआ। गीत/नवगीत में यश मालवीय की रचना मन को छू गई। समसामयिक में गौतम अरोड़ा 'सरस' की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। डॉ. ब्रह्मजीत गौतम का कवित्त रीतिकालीन काव्य से अभिभूत लगा। इसके अतिरिक्त 'थाती' तथा प्रेरक स्पंदन तो आप हर बार लगाते ही हैं। वे तो अतुलनीय हैं, जिनका कोई साम्य नहीं। आपके संपादकत्व को प्रणाम!

वसन्त हेतमसरिया, रामगढ़, कैण्ट (झार.)

समकालीन स्पंदन पत्रिका का जनवरी-मार्च 2017 अंक मिला। आभार। अंक सुन्दर बन पड़ा है। कविताओं का चयन काफी अच्छा है। वातायन के अंतर्गत पुस्तक संबंधी संक्षिप्त परिचय बहुत उपयोगी है। शुभकामनाएँ।

निवेदन

- **आगामी अंकों हेतु रचनाएँ (सपरिचय-सचित्र) सादर आमंत्रित हैं।**
- **काव्य की किसी भी विद्या पर आलेखों का भी स्वागत है।**
- **ई-मेल द्वारा प्रकाशनार्थ रचनाएँ/आलेख ''APS प्रियंका रोमन फॉण्ट'' में ही फोटो सहित भेजें तथा उसकी टंकित प्रति व अपनी नवीनतम फोटो डाक/कोरियर द्वारा अवश्य भेजें।**
- **छंद शास्त्र की कसौटी पर खरी उतरने वाली ग़ज़लें ही प्रकाशनार्थ भेजें।**
- **आपकी रचनाएँ अमूल्य हैं। मानदेय हमारी क्षमता में नहीं है।**
- **पत्रिका प्राप्ति की सूचना दें तथा अपनी प्रतिक्रिया से हमारा मार्गदर्शन करने की कृपा करें।**

- **कृपया सहयोग राशि (सदस्यता/विज्ञापन) इलाहाबाद बैंक में ''समकालीन स्पंदन'' के खाता सं. 50273124148 (IFSC No. -ALLA 0212142) में जमा करें। बैंक खाते में राशि जमा करने की सूचना मो. नं. 08935065229, 08004550837 अथवा 09415303224 पर अवश्य देने की कृपा करें। चेक अथवा ड्राफ्ट ''समकालीन स्पंदन'' के नाम से ज़ारी करें।**

त्रिलोचन : काव्य के विविध आयाम



- डॉ. राजेश कुमार

आधुनिक हिन्दी-कविता के जाज्वल्यमान प्रगतिशील कवि त्रिलोचन के काव्य में विविध आयाम अंगीभूत हैं। जीवन-यथार्थ का स्पन्दन, अंधजड़ता का विच्छेदन तथा जगत् को शिवत्व प्रदान करने का उनका भावोद्वेलन रमणीय अर्थ का बोधक है। सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत उनके काव्य में लोकजीवन के गहरे यथार्थ का सम्मोहन है, जिसे पढ़कर जीवन-स्वर के क्रांतदर्शी साधक अपना पथ प्रशस्त करते हैं। त्रिलोचन के काव्य में सांस्कृतिक नवजागरण की विराट् चेतना का स्वर मनुष्यता के उन्नयन का संवर्द्धक है। एक साथ इतनी विशेषताएँ समाहित कर अपने काव्य को सहजता से आगे बढ़ाना त्रिलोचन जैसे काव्य-साधक के ही वश की बात है। त्रिलोचन के यहाँ धरती का अनुराग घनीभूत है। इसी कारण उनकी कविताएँ जीवन-संघर्ष के निरूपण का स्वर निनादित करती हैं। अपने काव्य की वैचारिक संचेतना को कवि ने अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'धरती' में अभिव्यक्त किया है, जहाँ जीवन-संघर्ष के महानायक उसके लिए प्रेरक आलंबन की भूमिका में आते हैं। त्रिलोचन की कविता उस वर्ग की हिमायत करती है, जो अत्याचारों का प्रतिवाद करता है। अत्याचार न करना और न सहना दोनों स्थितियाँ कवि के लिए ग्राह्य हैं। उसकी कविता में संघर्षशील आलंबन का स्तुतिगान है, जहाँ जीवन-स्वर की साधना का ओजस्वी बिम्ब है। कवि बिना नाम लिये चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा भगतसिंह जैसे महानायकों को याद करता है तथा कविता के स्तर को नूतन तेज से आलोकित करते हुए अपने विचारों और भावों की ओजस्विता का उद्घोष करता है--

"जिन लोगों ने संघर्षों में कभी हार को हार न माना
मरते रहे परंतु जिन्होंने मृत्यु-प्रहार प्रहार न माना
जिनके अप्रतिहत साहस की क्षण-क्षण लिखते रहे कहानी
मैं सगर्व-सोल्लास निरंतर उन लोगों का गुण गाता हूँ।
जिन लोगों ने जीवित रहते कभी न अत्याचार सहा है
अत्याचार से नहीं जिनका रंच मात्र सम्बन्ध रहा है
जिनका तेज तेज औरों का बन्धु-भाव से रहा बढ़ाता
मैं सगर्व सोल्लास निरंतर उन लोगों का गुण गाता हूं।"[1]

आज कविता और आलोचना में विमर्श की पुकार गूँज रही है। तथाकथित देहवादी स्त्री के नग्न रूप के उपभोग की बात करने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। स्त्री की सामाजिक भूमिका के प्रति इन बुद्धिवादियों का विचारोद्वेलन मौन साध लेता है। भारत में नर-नारी के स्वस्थ प्रेम को गार्हस्थ्य जीवन में अनुभूत करने की परंपरा रही है। यह परंपरा नर-नारी के सामाजिक उन्नयन को अनुशासित करती रही है।

नर-नारी के पारस्परिक आकर्षण को प्रेम की भाषा में 'रति' कहा जाता है। त्रिलोचन के काव्य में एक ओर नारी के स्वस्थ स्वरूप का चित्रण है, तो दूसरी ओर नारी के प्रति उनका श्रमशील दृष्टिकोण भी ओजस्विता के साथ भासमान है। 'पत्नी' को लेकर लिखी गई उनकी कुछ कविताएँ आधुनिक हिन्दी-कविता में बेजोड़ हैं। भारतीय नारी अपने अर्थाभाव में अपने पति के पास बैठकर चिंता का इज़हार करती है। त्रिलोचन स्वयं भुक्त-भोगी हैं। तभी उन्हें

अपने मित्र की परिणीता की फोटो देखकर पत्नी शास्त्राणी की याद आती है। खाट के सिरहाने बैठकर माथे पर हाथ पसारने का बिंब लाक्षणिक भाषा में सब कुछ कह देता है--

"मैं जब कभी अकेला बिलकुल हो जाता हूँ
ध्यान तुम्हारा आता है लय हो जाता हूँ
आँखें मूँदे तुम्हें देखता हूँ :
तुम आती हो
पास खड़ी हो कर
मुसकाती कहती हो :
कहो कहाँ से आये हो परदेसी
कैसा है घर-बार तुम्हारा
तुम्हें ख़बर है?

दृश्य बदलता है
कि देखता हूँ फिर
मैं बीमार खाट पर लेटा हूँ मन-मारे
सिरहाने बैठी हो तुम माथे पर अपना हाथ पसारे
पूछ रही हो
(दृग में चिंता, वाणी में विश्वास अटल है)
अब कैसी तबियत है!

आज तुम्हारी याद मुझे आई है
बहुत दिनों के बाद तुम्हारी याद आज आई है
एक मित्र हैं
अभी-अभी बस ब्याह हुआ है
अपनी परिणीता का फ़ोटो दिखा रहे थे
दिखा रहे थे, बता रहे थे
आज तुम्हारी याद मुझे आई है
देख गया इतिहास कि जब से एक सूत्र में हम दोनों हैं।"[2]

त्रिलोचनजी ने अपनी कई कविताओं में स्वयं का आलोचन किया है। उनके संघर्षशील कवि-हृदय की तान उन्हें पढ़कर सुनी जा सकती है। 'विरोधाभास' सॉनेट में कवि स्वयं के संघर्ष को तटस्थता से व्यक्त करता है, जहाँ समाज के कुत्सित लोगों को सांकेतिक लाक्षणिक भाषा में विरूपित किया गया है। यहाँ कवि का उत्साह जीवन-शक्ति से आप्लावित है। गहनतम निराशा में प्रगतिशील बने रहने का ढंग कवि की जिजीविषा का बोधक है। संघर्षशील बिम्बों से जीवन-यथार्थ का निरूपण करने में कवि दक्ष है। प्रस्तुत 'सॉनेट' कवि के संघर्ष का साक्षी है--

"एक विरोधाभास त्रिलोचन है, मैं उसका
रंग-ढंग देखता रहा हूँ, बात कुछ नई
नहीं मिली है, घोर निराशा में भी मुसका
कर बोला, कुछ बात नहीं है, अभी तो कई

और तमाशे मैं देखूँगा, मेरी छाती
वज्र की बनी है, प्रहार हो, फिर प्रहार हो,
बस न कहूँगा, अधीरता है मुझे न भाती,
दुख की चढ़ी दही का स्वाभाविक उतार हो,

संवत् पर संवत् बीते, वह कहीं न टिहटा,
पाँवों में चक्कर था, द्रवित देखने वाले थे,
परास्त हो यहाँ से हटा, वहाँ से हटा,
खुश थे जलते घर से हाथ सेंकने वाले,

औरों का दुख-दर्द वह नहीं सह पाता है
यथाशक्ति जितना बनता है कर जाता है,"[3]

ऐसे बहुत कम कवि होंगे, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व का यथार्थ सादगी से व्यक्त किया हो। त्रिलोचन ने स्वयं को लक्षित कर कुछ सॉनेट लिखे हैं, तो कहीं उन्होंने 'त्रिलोचन' नामका अन्य पुरुष में प्रयोग किया है। चीर भरा पाजामा, छेदों वाला कुर्ता, रूखे बाल, यह सब होते हुए भी कवि की वाग्धारा का प्रवेग प्रेरित करता है। देह की दीनता के बावजूद कवि के मन की शक्ति अपरिमित है। उसकी वाग्धारा भ्रमग्रस्त मनुष्यों को पार करती है--

"चीर भरा पाजामा, लट-लट कर गलने से
छेदों वाला कुर्ता, रूखे बाल, उपेक्षित
दाढ़ी-मूँछ, सफाई कुछ भी नहीं, अपेक्षित
यह था वह था, कौन रुके ठहरे, ढलने से

पथ पर फुर्सत कहाँ, सभा हो या सूनापन
अथवा भरी सड़क हो जन-जीवन-प्रवाह से
झिझक कहीं भी नहीं, कहीं भी समुत्साह से
जाता है, दीनता देह से लिपटी है, मन

तो अदीन है, नेत्र सामना करते हैं, पथ
पर कोई भी आए, ओजस्वी वाग्धारा
बहती है, भ्रम-ग्रस्त जनों को पार उतारा
करती है, खर आवर्तों में ले ले कर मथ

देती है मिथ्याभिमान को, यही त्रिलोचन
है, सबमें, अलगाया भी, प्रिय है आलोचन,"[4]

त्रिलोचन ने कहीं-कहीं 'त्रिलोचन' शब्द का प्रतीक रूप में प्रयोग किया है। त्रिलोचन ने संघर्ष किया, अपराजेय जिजीविषा से जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास किया, लेकिन कभी भीख नहीं माँगी। इसके बावजूद त्रिलोचन ने एक सॉनेट में रहस्य के रूप में स्वयं के नाम का उपयोग किया है। यहाँ 'त्रिलोचन' प्रतीकात्मक है, जो किसी और के लिए है। दूसरे के नाम देने से कविता का स्तर नीचा होता। त्रिलोचन ने अपना नाम देकर दूसरों की चोट को खुद झेला है, यह उनके बड़प्पन की बात हैं--

"भीख माँगते उसी त्रिलोचन को देखा कल
जिसको समझे था है तो है यह फ़ौलादी,
ठेस-सी लगी मुझे, क्योंकि यह मन था आदी
नहीं, झेल जाता श्रद्धा की चोट अचंचल,
नहीं सँभाल सका अपने को, जा कर पूछा
'भिक्षा से क्या मिलता है,' 'दुनिया में जिसको
अच्छा नहीं समझते हैं करते हैं, छूछा
पेट काम तो नहीं करेगा,' 'मुझे आपसे
ऐसी आशा न थी,' 'आप ही कहें क्या करूँ,
खाली पेट भरूँ, कुछ काम करूँ कि चुप मरूँ,
क्या अच्छा है,' जीवन जीवन है प्रताप से,
स्वाभिमान ज्योतिष्क लोचनों में उतरा था,
यह मनुष्य था, इतने पर भी नहीं मरा था,"[5]

आत्म-व्यंग्य करना अति दुष्कर कर्म है, क्योंकि आत्म-व्यंग्य में तटस्थता रख पाना चुनौती की तरह है। त्रिलोचन सत्यं, शिवं तथा सुन्दरम् के पक्षधर हैं। यथार्थ के प्रति उनका प्रेम गहरा है। आडंबर और अंधश्रद्धा का प्रतिवाद उनकी कविताओं में प्रखरता से ध्वनित है। समाज के जीवन में जो अवरोध हैं, उन्हें दूर करने की प्रबल इच्छा कवि के लिए अभीष्ट है--

"औरों की ही नहीं, हँसी मैंने अपनी भी
खूब उड़ाई है, मैं तो खोजा करता हूँ
किधर बढ़ रहा है आडंबर, कब डरता हूँ कहीं किसी से,
कुछ ऐसा है अपना जी भी
झूठ, दंभ, छल, द्वेष, घृणा का क़ाला पर्दा
फाड़े बिना नहीं सुख पाता, मैं यथार्थ का
संग चाहता हूँ, जो जमा हुआ है गर्दा
सामाजिक जीवन समाज पर वह झड़ जाए,
सहज प्रसन्न रूप सबका हो, सब की भाषा

कंठ कंठ से खुले और पूजे अभिलाषा
निर्विरोध नूतन जीवन की छवि गढ़ जाए
बाल किरण सी आँख आँख में, भूले-भटके
रास्ता पाए, गत्वर कोई कहीं न अटके,''[6]

त्रिलोचन की छोटी कविताओं में भी पुरुषार्थ को व्यंजित करने की प्रबल स्पर्धा है। मन को प्रबल रखने से शरीर की जिजीविषा विकसित होती है। बड़े-बड़े मनोविज्ञानी तथा दार्शनिक मन की अपराजेय जिजीविषा को जीवन के लिए अनिवार्य मानते हैं। त्रिलोचन की कविता थके-हारे व्यक्तियों के लिए संजीवन-मंत्र की तरह है। पथ पर निरंतर चलते रहने से ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त होता है। मनःशक्ति के उद्‌बोधन से ही सिद्धि-सफलता संभव है, क्योंकि संसार में मन से ही विजयश्री का वरण किया जा सकता है--

"अगर हार कर विचलित हो कर तुम उद्यम को छोड़ न बैठे
यह जीवन है, इसे जीवनी-शक्ति कहा करती है दुनिया
बाधाएँ तो पथ का धन हैं
बंधु, पराजय भी मिलती है किसी वीर को समर-भूमि में
उद्योगी को जीवन में क्षण-क्षण प्रयोग करना पड़ता है
गिर-गिर कर उठना पड़ता है, उठ-उठ कर चलना पड़ता है।
तुम्हें तुम्हारी साँसें ही आने-जाने का अर्थ बतातीं
पूर्ण चेतना से जीवन का संजीवन प्रिय मंत्र सिखातीं
संग साँस के चलते-चलते, हाथ चला कर, पैर चला कर
अपने प्रेय श्रेय तक, प्रिय हे, बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ
तन तो मन का एक यंत्र है
सिद्धि-सफलता, मनःशक्ति के उद्‌बोधन का मूल मंत्र है
तुम मन को निर्बल न बनाओ, हारो तो मत उसे हराओ
गिर कर स्वयं उसे न गिराओ
उसे उठाओ सबल बनाओ
मन से ही संचालित जग के निखिल तंत्र है।''[7]

त्रिलोचन की कविताएँ लोकधर्मी चेतना से ओत-प्रोत हैं। उनको किसी संकुचित घेरे में नहीं बाँधा जा सकता है। सम्पूर्ण पृथ्वी कवि का घर है, जो विश्व-दृष्टि की उसकी चेतना है। उसका स्वरधारा में आर्ष ऋषियों की-भी व्यंजना है। सबके सुख की कामना कवि को प्रिय है--

"लंबी साँस लेकर
बैठ जाता हूँ और
ऊँचे स्वर में
बोल पड़ता हूँ मैं
सर्वे भवन्तु सुखिनः।''[8]

कविताओं से जीवन में ऊर्जा का संचार होता है। शब्दों की अर्थच्छाया से मानव आगे बढ़ता है। शब्द की शक्ति से ही मानव विराट् से संबंध जोड़ता है। शब्द की शक्ति अपरिमित है। ऊर्जस्वित कविताओं की अनिवार्यता जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है। कविताओं से त्रिलोचन को बहुत प्यार है। कविताओं को हाथ और पाँव मानना त्रिलोचन के कवि-व्यक्तित्व की सार्थकता है--

"कविताएँ
सपनों के संग ही
जीवन के साथ हैं
कभी-कभी पाँव हैं
कभी-कभी हाथ हैं।"[9]

काव्यरूपों में विविध प्रयोग करने वाले त्रिलोचन ने पुराने तथा क्लासकीय काव्यरूपों में भी सर्जना की है। महात्मा तुलसीदास की तरह उनका जीवन-दर्शन विश्व-मानवता के अभ्युदय का है। कवि शमशेर के शब्दों में वे धरती के कवि हैं, सहजता जिसका प्राण है--

"तुमने 'धरती' का पद्य पढ़ा है, उसकी सहजता प्राण है।"[10]

छन्दों के क्षेत्र में भी कवि के निजी मौलिक प्रयोग हैं, जिन पर पाठकों को गर्व होना चाहिए। 'चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता मुक्त छन्द की उत्कृष्ट कविता है, जिसका बनाव और कसाव 'रोला' छंद के आधार पर शास्त्रीय है। मुक्त छंद भी वही लिख सकता है, जो छंद के सिद्धांत को जानता हो। 'धरती' में त्रिलोचन ने प्रोज़ पोएट्री के भी विविध प्रयोग प्रस्तुत किए हैं। मेरी दृष्टि में 'धरती' श्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ है। छोटी से छोटी कविता में भावों-विचारों को विस्तृत अर्थ देने की कला में कवि सिद्धहस्त है। त्रिलोचन ने सॉनेट में भी मौलिक प्रयोग किए हैं। आधुनिक हिन्दी-कविता के इस कवि को आधुनिक तुलसीदास कहना तात्त्विक दृष्टि से औचित्यपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'धरती' - त्रिलोचन, नीलाभ प्रकाशन, 5, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1977, मूल्य 15/-, पृ० 108
2. वही, पृष्ठ 52
3. 'ताप के ताए हुए दिन' - त्रिलोचन, साहित्यवाणी, 28, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-211006, द्वितीय आवृत्ति, 1996, मूल्य : 70/-, पृष्ठ 47
4. 'उस जनपद का कवि हूँ'- त्रिलोचन, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, द्वितीय आवृत्ति, 1982, पृष्ठ 12
5. वही, पृष्ठ 13
6. वही, पृष्ठ 86
7. 'धरती' - त्रिलोचन, नीलाभ प्रकाशन, 5, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1977, मूल्य : 15/- पृष्ठ 105
8. 'मेरा घर'- त्रिलोचन, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, पहला संस्करण, 2002, मूल्य 95/-, पृष्ठ 14
9. वही, पृष्ठ 15
10. 'धरती' - त्रिलोचन, नीलाभ प्रकाशन, 5, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1977, मूल्य : 15/- पृष्ठ 2

❑ एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), सेठ पी.सी.बागला (पी.जी.) कॉलेज, हाथरस-204101 (उ.प्र.)
वार्ता : 09897172160

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल : परम्परा एवं प्रयोग

- जसदीप मोहन



'ग़ज़ल शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ प्रेमिका से वार्तालाप है। इसमें प्रायः 5 से 11 शे'र होते हैं। सारे शे'र एक ही रदीफ़ और विभिन्न काफ़ियों में होते हैं। हर शे'र का मज़मून अलग होता है। पहला शे'र मतला कहलाता है जिसके दोनों मिसरे सानुप्रास होते हैं और अन्तिम शे'र मक्ता कहलाता है। जिसमें शायर अपना उपनाम लाता है।'[1]

भारतीय परिवेश में ग़ज़ल की उक्त परिभाषा पाँच-छः दशक पहले तक तो उचित प्रतीत होती थी, परन्तु कालान्तर में ग़ज़ल ने अपने विषय क्षेत्र में अभूतपूर्व व्यापकता हासिल कर ली और यह परिभाषा केवल शब्दार्थ हो कर रह गई क्योंकि अब हर उस भाव और विषय पर ग़ज़ल लिखी जा रही है जो मानवीय संवेदना तथा जीवन को प्रभावित करता है। अतः नई परिभाषा श्री वीनस केसरी के शब्दों में इस प्रकार दी जा सकती है-

"ग़ज़ल वह पद्य रचना है जिसमे अरुज़ के अनुसार बहर और वज़न का ध्यान रखते हुए रदीफ़, काफ़िया को निभाते हुए कुछ अशआर हों जो कहन के लिहाज़ से स्वतंत्र हों व जिसका भाव पक्ष मानवीय संवेदना और जीवन दर्शन के किसी एक या अनेक पक्षों को इंगितों में प्रकट करता हो। इंगितों से आशय यह है कि नियमों को निभाते हुए जो बात कही जाए वह बिल्कुल स्पष्ट न होकर रुपकों, प्रतीकों के एक झीने पर्दे से ढकी हो।"[2]

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल - परम्परा

ग़ज़ल काव्य विधा ने भारत में 1000 वर्षों का लंबा सफ़र तय किया है। अरबी-फ़ारसी से उर्दू में होती हुई ग़ज़ल हिन्दी में प्रविष्ट हुई। भारत में ग़ज़ल को अवतरित करने वालों में अमीर खुसरो का नाम सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। तुगलक वंश के राजदरबार के राजकवि अमीर खुसरो की ग़ज़लों पर सादी शीराजी का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। सईद नफीस ने सर्वप्रथम 'दीवान-ए-कामिल' अमीर खुसरो शीर्षक से उनकी ग़ज़लें संपादित की। इन ग़ज़लों में से डॉ. भोलानाथ मिवारी ने अमीर खुसरो की एक ग़ज़ल का उल्लेख किया है जिसमें एक पंक्ति फ़ारसी में की है और एक हिन्दी में है। इस ग़ज़ल की मधुरता और सुकोमलता उल्लेखनीय है-

जे हाले मिसकीं मकुन तग़ाफ़ुल, दुराय नैना बनाय बतियाँ
कि ताबे हिजराँ न दारमे जाँ, न लेहु काहे लगाय छतियाँ
शबाने-हिजराँ दराज चूँ ज़ुल्फ़े-रोज़े-वसलत चूँ उम्र कोतह
सखी पिया को जो मैं न देखूँ ते कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ ।[3]

एम. ए. गनी ने 'हिस्ट्री ऑफ पर्शियन लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर एट दि मुग़ल कोर्ट' में कबीर को हिन्दी का पहला ऐसा कवि माना है जिसने ग़ज़ल की रचना की। कबीर की ग़ज़ल की संक्षिप्त बानगी द्रष्टव्य हैं-

हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या
रहें आज़ाद या जग में हमन दुनिया ये यारी क्या
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से
जो चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या[4]

हिन्दी ग़ज़लों के वर्तमान (आधुनिक) काल में ग़ज़ल लेखन का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काल से माना जा सकता है (1850-1885 ई०) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त उस काल खण्ड में प्रताप नारायण मिश्र, चौधरी प्रेमधन तथा गोपाल लाल 'गुल' ने भी हिन्दी की ग़ज़लें लिखीं। भारतेन्दु 'हरिचन्द' और 'रसा' दो नामों से ग़ज़लें लिखते रहे। चन्द अशआर प्रस्तुत हैं-

वक़्ते रुख़सत जो आए वाली पर
खूब रोये गले लगा करके
दोस्तो कौन मेरी तुरबत पर
रो रहा है रसा-रसा करके (रसा उपनाम का प्रयोग)
मिल जाएंगे हम कुंज में मौका जो मिलेगा
गलियों में हमारे सदा आना नहीं अच्छा
हरि चन्द तुम्हारे ही हैं हम सभी तरह से
यों अपने गुलामों को सताना नहीं अच्छा[5] (हरिचन्द उपनाम का प्रयोग)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' (1855-1930 ई०) प्रसाद, श्रीधर पाठक, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त (1889-1964 ई०) और हिन्दी के विद्रोही कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (1896-1961 ई०) ने भी हिन्दी ग़ज़लें लिखीं। इन कवियों के कुछ शे'र निम्नलिखित हैं-

तेरे इश्क़ में हमने दिल को जलाया
क़सम सर की तेरे, मज़ा कुछ न आया[6] ...... प्रेमधन
सरासर भूल करते हैं, उन्हें जो प्यार करते हैं
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं
उन्हें अवकाश ही इतना कहाँ है मुझसे मिलने का
किसी से पूछ लेते हैं, यही उपकार करते हैं[7] .... जयशंकर प्रसाद
अगर तू डर के पीछे हट गया तो काम रहने दे
अगर बढ़ना है आगे की ओर तो आराम रहने दे
बिगड़ कर, बनते और बनकर बिगड़ते एक युग बीता
परी और शाम रहने दे, शराब और जाम रहने दे।[8] .... निराला

दुष्यन्त से पूर्व बलबीर सिंह रंग, त्रिलोचन शास्त्री, रामावतार त्यागी (1925-19) और शमशेर बहादुर सिंह के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी ग़ज़लों पर भी उर्दू भाषा की छाप रही है और उर्दू ग़ज़लों की तरह उनकी ग़ज़लों का भी मूल स्वर रोमानी था। उनकी ग़ज़लों के अशआर के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं-

अब मुझे प्यार से डर लगता है
उसके इज़हार से डर लगता है
वक्त का क्या है गुज़र जाएगा
उसकी रफ्तार से डर लगता है[9] .... बलबीर सिंह 'रंग'
अंधेरी रात है, मैं हूँ अकेला दीप जलता है
हवा जग-जग के सोती है पथिक अब कौन चलता है[10] ....त्रिलोचन शास्त्री

अपने दिल का हाल यारो, हम किसी से क्या कहें
कोई भी ऐसा नहीं मिलता जिसे अपना कहें
हो चुकी अब खत्म अपनी ज़िंदगी की दास्ताँ
उनकी फरमाइश हुई, फिर इसको दोबारा कहें''[11] ...... शमशेर बहादुर सिंह

हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिकयुग (जिसका रचना काल 1960 ई0 से शुरु हुआ उसकी विकास यात्रा का अत्यधिक महत्वपूर्ण युग रहा है। इस युग के ग़ज़लकारों ने उर्दू, हिन्दुस्तानी एवं शुद्ध हिन्दी भाषा में ग़ज़लें रचीं। इस युग में हिन्दी ग़ज़ल की अगुवाई (प्रतिनिधित्व) दुष्यंत कुमार ने की। उनकी ग़ज़लें लोकप्रिय हुई। उन्होंने हिन्दी ग़ज़ल की पहचान ही नहीं बनाई बल्कि उनके भविष्य की नींव भी रखी। दुष्यंत, शब्दों को जिन्दा इंसानों जैसी शख़्सियत प्रदान करते हैं।

डॉ० सरदार मुजाबर ने अपनी समीक्षा एवं शोध परक पुस्तक 'दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन' में दुष्यन्त कुमार के ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' के विषय में लिखा है, 'साये में धूप' का नामकरण ही अपने आप में एक प्रतीकात्मक नामकरण लगता है। प्रतीकात्मकता के साथ-साथ उसमें एक तरह का व्यंग्य भी छिपा हुआ है। दरख़्त भी है और उसका साया भी है फिर भी उसमें धूप लगती है। मूलतः साया व्यवस्था का प्रतीक बन कर आया है तो 'धूप' अव्यवस्था एवं अशान्ति का माहौल को दर्शाती है।[12]

"इस ग़ज़ल संग्रह में 52 ग़ज़लें संग्रहित हैं। इस संग्रह के प्रकाशन से दुष्यंत कुमार ग़ज़ल के क्षेत्र में छा गए हैं। आम आदमी की पीड़ा, राष्ट्र चिंतन, लोकतन्त्र का गला घोंटने वाली परिस्थितियों एवं सामाजिक विद्रूपताओं को दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों का केन्द्र बनाया।''[13]

कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है।''[14]
हो गई है पीर परबत सी, पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से नई गंगा निकलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।''[15]

भारतेन्दु रसा से लेकर शमशेर बहादुर सिंह तक की ग़ज़लें हिन्दी ग़ज़ल की ज़मीन तैयार जरुर करती हैं। लेकिन वे परम्परा नहीं बनती, परम्परा बनती है दुष्यंत की ग़ज़लें। चूंकि दुष्यंत की ग़ज़लों से हिन्दी ग़ज़ल प्रभावित होती है और इसी मुक़ाम से हिन्दी ग़ज़लों का सफर शुरु होता है।

समकालीन हिन्दी ग़ज़ल : प्रयोग

दुष्यन्त कुमार के बाद के काल में हिन्दी ग़ज़लों के लेखन में तीव्र गति से विकास हुआ है। जहाँ उर्दू की नेस्तालीक लिपि में लिखी जा रही ग़ज़ल को बिना किसी विशेषण के मात्रः ग़ज़ल ही कहा गया है। वहाँ इसी के समानान्तर देवनागरी लिपि में लिखी जा रही ग़ज़ल को हिन्दी विशेषण लगाकर पुकारा जाता रहा है। इस विधि के लिए एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का भी आविष्कार अपने आप होता चला गया है। इस काल में हिन्दी

ग़ज़ल लिखने वालों की संख्या हजारों तक जा पहुँची है। जैसा कि पहले कहा गया है शिल्प की दृष्टि से कुछ ग़ज़लकार उर्दू की बहरों को आधार बनाते हैं और अधिकतर ग़ज़लकार हिन्दी के परम्परागत छन्दों को। कुछ प्रमुख और उल्लेखनीय हिन्दी, ग़ज़लकारों के नाम इस प्रकार हैं, सर्वश्री गोपाल दास नीरज, रामदरश मिश्र, शेरजंग गर्ग, त्रिलोचन शास्त्री, रुद्रकाशिकेय, भवानी शंकर, कुँअर बेचैन, चंद्रसेन विराट, बेढब बनारसी, सूर्यभानु गुप्त, जहीर कुरैशी, जानकी वल्लभ शास्त्री, ज्ञान प्रकाश विवेक, गिरिराज शरण, अग्रवाल, नूर मुहम्मद नूर, विज्ञान व्रत, अदम गौंडवी, ओम प्रकाश सिंह, उपेन्द्र कुमार, माधव कौशिक़, वशिष्ट अनूप, डा. उर्मिलेश, डा. रोहिताश्व अस्थाना, कमलेश भट्ट 'कमल', हरे राम समीप, केशव शरण, रउफ, देवेन्द्र आर्य, धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल', डा. भारत गौड़, महेश जोशी, राजगोपाल सिंह, राजेश रेड्डी, विनय मिश्र, अशोक अंजुम, दरवेश भारती, श्याम सखा श्याम, अनिरुद्ध सिन्हा, ओम प्रकाश, इन्दिरा शबनम, गौतम राजरिशी, महेश कटारे 'सुगम', दीक्षित दनकौरी, अनु जसरोटिया, वीनस केसरी, मयंक अवस्थी, तुफैल चतुर्वेदी, अशोक रावत, राकेश मधुर सोनी, हस्ती आदि उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। कुछ अशआर देखिए-

भाव ऊँचा चढ़ा देख कर
लोग रिश्ते भुनाने लगे। - चन्द्रसेन विराट

इस शहर में एक टुकड़ा धूप मुश्किल हो गई
आस्था रद्दी में बिक जाने के काबिल हो गई। - जहीर कुरेशी

रिश्तों के आइने जहाँ टूटे हैं बार बार।
उन स्वार्थों की एक बेरहम चट्टान है शहर। - गिरिराज शरण अग्रवाल

जहां इन्सान की औकात से दौलत बड़ी होगी
महल तनकर खड़े होंगे, झुकी हर झोंपड़ी होगी। - कुँअर बेचैन

मेरे दिल के किसी कोने में, इक मासूम सा बच्चा
बड़ों को देखकर दुनिया, बड़ा होने से डरता है। - राजेश रेड्डी

जब हम समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में प्रयोग की बात करते हैं तो देखते हैं कि आज ग़ज़ल की स्थितियों में तेजी से बदलाव आ रहा है। वह देश की ज्वलंत समस्याओं से सीधे सामना ही नहीं कर रही बल्कि इस परिवर्तनकारी समाज की गतिविधियों, सीमाओं और समस्याओं में भी हिस्सा ले रही है। देश में कम्प्यूटर क्रान्ति, केबल और इलैक्ट्रानिक मीडिया का अनन्त प्रचार-प्रसार, भू-मंडलीकरण के बढ़ते हुए दबावं, राजनीति में छोटे-छोटे दलों का (क्षेत्रीय) उदय, दलित आन्दोलन का समाज, राजनीति और साहित्य में विस्तार, अंडरवर्ल्ड और माफियाओं का बढ़ता प्रभुत्व क्रमशः पत्नोन्मुख व्यवस्था, चाटुकारिता का बोलबाला, प्रशासन की नपुसंकता, कानून व्यवसथा की दुर्गति, सामाजिक स्तर पर आदमी का आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी होते चलना इस तरह के नाना बदलाव समकालीन ग़ज़ल के परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिन्दी के ग़ज़लकार न केवल इन सारी स्थितियों से सीधे रु-ब-रु होते हैं वरन् उन्हें संवेदना का अभिन्न हिस्सा बनाकर ग़ज़लों में अभिव्यक्त कर रहे हैं। मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासदी का पग-पग पर ग़ज़लकार को गहरा अनुभव है-

रोज खाली हाथ जब घर लौटा जाता हूँ मैं
मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं राजेश रेड्डी

आज हिन्दी ग़ज़ल में जो प्रयोगधर्मिता अपनाई जा रही है उसने ग़ज़ल को एक नई दिशा प्रदान की है। बदलाव प्रकृति का नियम है। समय के साथ साथ आज की ग़ज़ल समाज के आर्थिक, धार्मिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, वैज्ञानिक इत्यादि सरोकारों से वा-बस्ता हो रही है जो कि ग़ज़ल के लिए शुभ और सुखद अनुभव ही है। आज हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री-विमर्श सरीखे विषयों पर शोध होने लगे हैं जिससे हिन्दी ग़ज़ल आलोचना के क्षेत्र में बेहतर अपेक्षाएँ की जा सकती है, इसी तरह ग़ज़ल जो, औरतों के बारे में बातचीत के अर्थ में पैदा हुई थी आज स्त्री की अस्मिता के लिए मुखर हो रही है।

धीरे-धीरे वो कुशल नृत्यांगना बन गई
वक्त ने उस एक औरत को नचाया है बहुत - ज़हीर कुरैशी
औरत टांगी गयी, शो-केस में रखी गयी
लोग थे खामोश पर बाजार मुस्कराता रहा - ज्ञान प्रकाश विवेक

"इसी प्रकार सोशल मीडिया में हिन्दी ग़ज़ल का पदार्पण और फेसबुक व ब्लॉग्ज़ पर विद्यमान हिन्दी ग़ज़लकारों में प्रिण्ट मीडिया के स्थापित ग़ज़लकारों से लेकर बिल्कुल नयी पीढ़ी के युवा ग़ज़लकार तक हजारों की संख्या में मौजूद हैं। ये ग़ज़लें शोषित उत्पीड़ित भारतीय जनता के दुख-दर्द को वाचा देती हैं। अमीरी-गरीबी के फर्क, साम्प्रदायवाद, उपभोक्तावाद, भाषावाद, महानगरवाद और नगरवाद, अन्धविश्वास, रुढ़ियां, उद्योगवाद, व्यापारवाद, धार्मिक कट्टरता, रिश्वत, सरकारी शोषण, भ्रष्टाचार, आदि को खुलेआम बेनकाब करती है। साथ ही आम आदमी की लाचारियाँ, घुटन, अजनबीपन, महानगरीय त्रासदी, असन्तोष, आक्रोश, अपनों की अपनों से जद्दोजहद व तथाकथित उजालों के पीछे के सच भी इनमें दृष्टिगोचर होते है।"[16]

सोशल मीडिया ने हिन्दी ग़ज़ल को न केवल सुधी पाठक दिये अपितु उत्सावहर्धन के लिए प्रशंसक और टिप्पणीकार, परिमार्जन के लिए समीक्षक, संवर्धन के लिए स्त्रोत और ग़ज़ल गोष्ठी के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान किया। इण्टरनेट पर हिन्दी की वेब पत्रिकाओं, हिन्दी ब्लाग्ज़ व फेसबुक, ट्विटर, गूगल प्लस, लिंकडइन, माय स्पेस, आरकुट जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स की शुरुआत के माध्यम से साहित्य समृद्ध हुआ। हिन्दी ग़ज़ल के विकास में ये वेब पत्रिकाएं योगदान दे रही हैं- समालोचना, छन्द प्रभा, रचनाकार, अनुभूति, अक्षर पर्व, जानकीपुल, आखर कलश, परिकल्पना, नव्या, हिन्द-युग्म, अभिव्यक्ति, सृजनगाथा, वटवृक्ष, सृजन, लेखनी, गर्भनाल, साहित्यशिल्पी आदि।

फेसबुक व ब्लागज़ के जरिये कई प्रवासी ग़ज़लकार भी हिन्दी ग़ज़ल यात्रा में अपना योगदान दे रहे हैं जिनमें चाँद हदियाबादी, महावीर शर्मा, प्राण शर्मा, पूर्णिमा वर्मन, श्रद्धा जैन, तेजेन्द्र शर्मा इत्यादि प्रमुख है।

"आज हिन्दी ग़ज़लकार बेचैन हैं। वे अपने नये समय के बदलते मिजाज को ग़ज़ल में प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसलिए पहले वे हिन्दी ग़ज़ल की उस जड़ता को तोड़ रहे हैं जो एक जैसा पन पैदा कर रही थी। जो बेचेहरा और दोहराव का चेहरा बन गई थी। इन ग़ज़लकारों ने सीमाओं और कमजोरियों और ग़ज़ल के बीच पुराने पड़ चुके

विषयों को जांचा-परखा। इस तरह ग़ज़ल में बदलाव की सूरत पैदा की।''[17] नवोदित ग़ज़लकारों का भी यह फर्ज बनता है कि वे अपने पुरोधाओं से ग़ज़ल की बारीकियों को समझने में कोताही न करें क्योंकि ग़ज़ल वह विद्या है जो हमें इश्क करना सिखाती है। बकौल कृष्ण बिहारी नूर साहब- ''मैं तो ग़ज़ल सुना के अकेला खड़ा रहा। सब अपने-अपने चाहने वालों में खो गए।''

सन्दर्भ सूची

1. 'मद्दाह' मुहम्मद मुस्तफा खां, उर्दू-हिन्दी शब्दकोश उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ
2. वीनस केसरी, 'ग़ज़ल की बाबत', अंजुमन प्रकाशन इलाहाबाद, पृ० 49, संस्करण प्रथम 2015
3. तिवारी, भोला नाथ, संपादक, अमीर खुसरो और उनकी हिन्दी रचनाएं, पृ० 38
4. हरिगंधा, अप्रैल-मई 2013, नवछंद विशेषांक, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूल, पृ० 48
5. हरिगंधा, अप्रैल-मई 2013, हरिगंधा नवछंद विशेषांक, हरि.सा.अका.पंचकूला, पृ० 90
6. वहीं, पृ० 90
7. वही, पृ० 88
8. वही, पृ० 83
9. ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा, लेख हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, पृ० 61, प्रथम सं. 2006
10. वही
11. हरिगंधा, अप्रैल-मई 2013, नवछन्द विशेषांक, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला
12. मुजावर, सरदार दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण सन् 2012, पृ० 22
13. वागदरे अलका निगम, 'दुष्यंत कुमार और सुरेश भट्ट की ग़ज़लों में सामाजिक चिंतन, कानपुर, अभय प्रकाशन, सन् 2008 संस्करण, पृ० 19
14. वही, पृ० 57
15. वही, पृ० 13
16. ग़ज़लकार, जनवरी-जून 2015, मालिनी गौतम का लेख, सोशल मीडिया में हिन्दी ग़ज़ल, पृ० 142, अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद।
17. ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा, लेख 'हिन्दी ग़ज़ल में नये प्रयोग, पृ० 132, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, प्रथम संस्करण 2006

❑ प्रधानाचार्य- लायलपुर खालसा, सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, नकोदर रोड, जालन्धर-1144003 (पंजाब)
वार्ता : 09915366693, E-mail : layallkhalsa31@gmail.com

गीत/नवगीत

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र



चैती गुलाब की

वैसे तो गमले में फूले
नागफनी भी चैत महीने
किंतु सुवासित छुअन कहाँ से
लाए वह चैती गुलाब की!

कुछ ना कुछ तो जादू-टोना
हुआ हमारे गाँव-नगर पर
सब के सब भागते जा रहे
आँख मूँद अनजान डगर पर।

पेड़ों पर पालते मछलियाँ
जलधारों में तोते-मैने,
सड़कों पर उतरे सवाल, पर
बंद खिड़कियाँ हैं जवाब की।

एक ओर हय-शावक गरजे-
तरजे लालकिले के अंदर
और दूसरी ओर गीर के शेर
हिनहिनाते मजबूरन

जैसे रंगभवक के रसिये
जैसे डोमिन के मनबसिये
संसद के बिसखपरों से हैं
मात हुईं नस्लें नवाब की।

शिकमी हैं वाचालों के घर
वीरों का सिंहासन जबतक
वंशीटट तो मौन, रहेगा
शंखों का अनुशासन तब तक

सोचो, फिर सोचो, फिर सोचो
दिन क्यों लगते रात सरीखे
ले कुदाल पलटाओ कीचड़
मरे हुए राजा-तलाब की।



दिन गिनती के

जिन पेड़ों पर बैठे बगुले
उन पेड़ों के दिन गिनती के।

कैसे-कैसे लोग पालते
कैसी-कैसी आकांक्षाएँ
एक-एक कर टूट रही हैं
इन्द्रधनुष की प्रत्यंचाएँ

जिन नातों के नेह अचीन्हे
उन नातों के दिन गिनती के।

फसलें उजड़ गयीं खेतों की
घर-आँगन छाया सन्नाटा
गाय बेच, गिरवी जमीन रख
हरखू तीर्थाटन से लौटा

जिस बामी के साँप पहरुए
उस बामी के दिन गिनती के।

प्रतिभा को दरसाए जबतक
लोकतंत्र फाँसी के फंदे
ढाबे पर बर्तन माँजेंगे
तबतक सूर्यवंश के बंदे

जिस कुर्सी पर दीमक रीझे
उस कुर्सी के दिन गिनती के।

□ देवधा हाउस, 5/2, वसंत विहार एन्क्लेव
देहरादून-248006 (उत्तराखण्ड)
वार्ता : 09412992244

रमेश गौतम



दिन हताहत

अब कहाँ जाएँ
निकलकर दिन हताहत
पाँव में छाले पड़े हैं
मन-मुटावों के।

यह नगर कैसा
जहाँ रिश्ते नहीं रहते
आदमी अलगाव के
किस्से यहाँ कहते
घोलते कैसे
अधर पर हम बताशे
भाव मिलते ही
नहीं हैं
महानुभावों के।

जातियों-उपजातियों के
हम कबीले हैं
लोग जठरानल लिए
बैठे अकेले हैं
पीठ पर कच्ची गृहस्थी
को उठाए अबे
चक्रव्यूह तोड़ें
कहाँ तक
इन तनावों के।

पृष्ठ जनप्रश्नावली के
फड़फड़ाते हैं
संतजन परलोक की
महिमा सुनाते हैं

चाहते हैं सब
नदी के पार जाना
किन्तु केवट हैं कहाँ
अब पास नावों के।



इस हवा को क्या हुआ

सच न जाने
इस हवा को क्या हुआ।

तितलियों की देह पर
चाकू चलाती यह हवा
जुगनुओं को धर्म के
रिश्ते बताती यह हवा
किस दिशा ने
इस हवा का तन छुआ।

यह हवा जो कल फिरी
हर एक माथा चूमती
आज सड़कों पर यहाँ
कर्फ्यू लगाती घूमती
लग गई इसको
किसी की बद्दुआ।

इस हवा ने कातिलाना
दाँव कुछ ऐसे चले
मार डाला भाईचारे को
गली में दिन ढले
अब कहे
मामू किसे, किसको बुआ।

❑ 78 बी, संजयनगर बाईपास, बरेली-243005 (उ.प्र.)
वार्ता : 09411470604

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी

अमलतास विश्वासों का

अरहर के खेतों-से फैले जीवन में
दुबक गया खरगोश कहीं उल्लासों का।

स्वप्न-हिरन की शोख़ कुलाँचें बन्द हुईं
आश्वासन की दीपशिखाएँ मंद हुईं
पल-पल घायल होना मन की नियति बना
पीड़ाएँ शब्दों में ढलकर छंद हुईं

संशय और घृणा की गर्म बयारों में
झुलस रहा है अमलतास विश्वासों का।

उम्मीदों पर करुण रुदन के पहरे हैं
हर लोचन में सिन्धु हज़ारों ठहरे हैं
जीवन की ऊँची-नीची पगडंडी पर
चिन्ता के पदचिह्न बहुत ही गहरे हैं

उबल रहा हैं पलकों में यों कड़वापन
छूट रहा सिन्दूर अभागी साँसों का।

जल से कोसों दूर तृषाओं का घर है
बुझी राख-सा मानव का अभ्यंतर है
टूट रहे हैं खुशियों के कच्चे टाँके,
मन अतृप्तियों के कोठे पर नौकर है।

कसक, कचोट और क्रन्दन के मौसम में
कैसे महकेगा महुआ उच्छ्वासों का?



मौसम के व्यूह

कर रही हैं गुदगुदी मन-प्राण में
फिर हवा की गन्ध वाली उँगलियाँ।

परिमलों के चिरप्रतीक्षित
पत्र आये आज
रातरानी की चुहल से
लोग आये बाज़

टहनियों पर कर रही हैं टोटका
फिर सुनहले पंख वाली तितलियाँ।

हर जगह फैले हुए हैं
मौसमों के व्यूह
स्वयं ही ढहने लगे हैं
संयमों के ढूह

हो गयीं हर ओर चर्चा का विषय
फिर सुपरिचित स्वाद वाली इमलियाँ।

□ 205, आर्चिड ब्लॉक, पार्क एवेन्यू अपार्टमेन्ट्स
नवीन गल्ला मण्डी के पास, सीतापुर रोड
लखनऊ-226024 (उ०प्र०)
वार्ता : 09918165747

सुरेन्द्र बाजपेयी



मौसम को तार

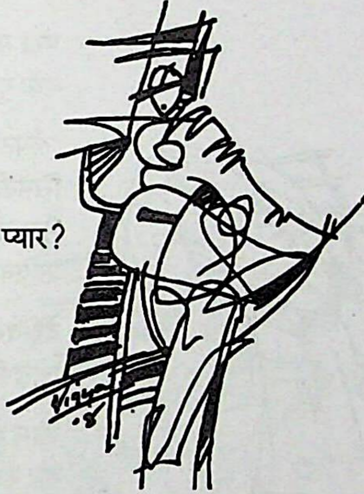
गरमी के दिन बोझिल,
रात के समय
नींद नहीं आती है,
पौधों ने भेजा है मौसम को तार।

चूता है भाल से
पसीना जब महुआ-सा,
मिलजुल कर माटी से
मन उड़े धुआँ-सा,

निकल गई जेब से,
रूमाल हुई तर,
समझ नहीं आती है
कैसी यह दुनिया है सूरज का प्यार?

थके-थके पाँव हैं
शहरों में गाँवों के,
ऊँघ रहे नगर-नगर
ठाँव नहीं छाँवों के,

लू हुई बदचलन बड़ी,
घुटन, बदहवास,
लौट-लौट आती है
ऐसे में बिकता है जल का संसार।



प्रदूषण

अपने ही घर
अनपढ़ चेहरे,
दीवारों से प्रश्न खड़े हैं।

हुई शरारतबाज खिड़कियाँ
जिद्दी बहुत सलाखें,
देहरी पर लिख गई बपौती
लाल नशीली आँखें,

हवा प्रदूषित
भीतर-बाहर,
मन को मारे चित्त पड़े हैं।

कुत्ते जो कुर्सी पर बैठे
देख मेज घबराई,
खुली हाथ में रम की बोतल
मुँह में आग लगाई,

गाभिन कुतिया
दर-दर रोती,
सिर पर कितने पाप मढ़े हैं?

दौलत की है प्यास
ऐश की भूख लगी है,
फर्शों पर उन्माद-स्खलन
आँखें लड़ी सगी हैं,

करतूतें हैं
काले धन-सी,
सपने पाले लोग बड़े हैं।

□ हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिचाशमोचन, वाराणसी
वार्ता - 09889985696

अजय पाठक



इतिहास

वर्तमान बिल्कुल वैसा है
जैसा था, इतिहास।

वही दिवस है, रात्रि वही है,
वही साँझ, वह भोर
वही चंद्रमा दूर गगन में
वही घटा घनघोर

अपने सूरज को डसता है
पूर्ण-ग्रहण खग्रास।

चाल-चलन में शेष अभी है
उलझी हुई कहानी
जीवन का है अर्थ परस्पर
भीषण खींचा-तानी

राजा को बर्दाश्त नहीं है
लोगों का उल्लास।

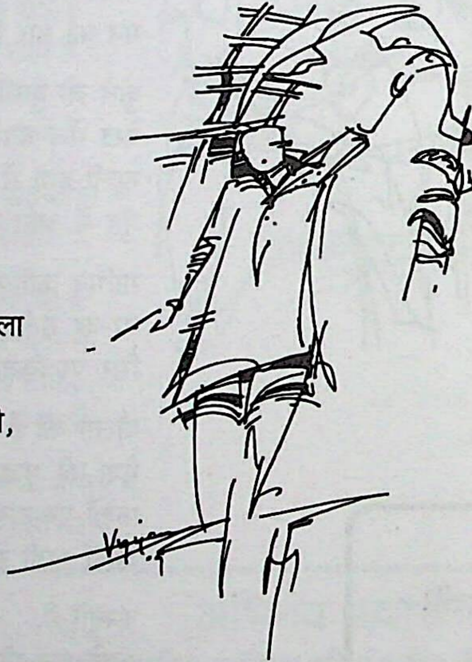
मानवता का वृक्ष समूचा
जड़ से काट दिया
ॠतुओं को आहत कर डाला
मौसम बाँट लिया

निर्बल को दी घाम जेठ की,
समरथ को मधुमास।

कथा बाँचते धर्मनीति की
करती में हैं भेद
मन के भीतर कामसूत्र है
उद्धरणों में वेद

धूल फाँकते दास कबीरा
जमींदोज रैदास।

वर्तमान बिल्कुल वैसा है
जैसा था, इतिहास।



प्रश्न

पूछ रहे थे पन्ने-पन्ने
प्रश्न, किताबों के।

कहाँ गये वह दिन पढ़ने के
लिखने के वह दिन
परियों के जादुई किस्से
प्रेमकथा अनगिन?

पंख मोर के, पर तितली के
बर्क गुलाबों के।

'लैपटॉप' से 'नेटवर्क' तक
सिमटी दिनचर्या
भूल गये तुम कथा-कहानी
कविता-परिचर्या

देर-देर तक सुलझाते हो
जोड़ हिसाबों के।

शाम हुए ही किस दुनिया में
तुम खो जाते हो
बिस्तर में पड़ते ही पल भर
में सो जाते हो

तुमने कब से पाल लिये
यह शौक नवाबों के।

पूछ रहे थे पन्ने-पन्ने
प्रश्न, किताबों के।

□ एल-3, विनोबा नगर,
बिलासपुर-495004 (छत्तीसगढ़)
वार्ता : 09827185785

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'



'छठुआ' पास हुआ

कई साल के
बाद आठवीं
'छठुआ' पास हुआ।

सोमवार व्रत
व्रत एकादशी
सालों तक आय
शनि-मंदिर के
सभी चढ़ावे
खुशबू पहुँचाय
तब कुछ थोड़ी
बात बनी है
मौसम खास हुआ।

संगत ही कुछ
ठीक नहीं थी
मदिरा पीता था
और भाँग की
टिकिया खाकर
जीवन जीता था
बीड़ी-खैनी
बुरा लतों का
था अनुप्रास हुआ।

हर की पौड़ी
पहुँच गई है
माँ काँवड़ लाने
भीड़भाड़ में
भक्तिभाव का
कुछ धक्का खाने
'काली पलटन'
के मंदिर पर
है विश्वास हुआ।



बंधु बताओ

बंधु बताओ।
बदलें कैसे?
चलें समय के साथ।

बचपन की
आचार संहिता
आड़े आती रोज
निडर परिस्थिति
गड़हा खोदी
गाड़े जाती ओज
अवसरवादी
वह चौराहा
बढ़ा रहा है हाथ।

अंकगणित का
यह सिखलाना
सोलह आधा आठ
बीज गणित का
मानक अक्षर
संख्या जैसा पाठ
रेखाओं का
गणित हथेली
खींच रही है नाथ।

परिवर्तन पर
वर्तमान का
पूरा है अधिकार
लोकलीक से
लगा हटाने
पश्चिम का सिंगार
अँधियारे में
कौन दिखाये?
कोई सच्चा पाथ।

❑ 'शिवाभा', ए-233, गंगानगर, मेरठ-250001 (उ०प्र०) वार्ता : 09412212255

डॉ. ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी 'शैलेश'

आओ बैठो........

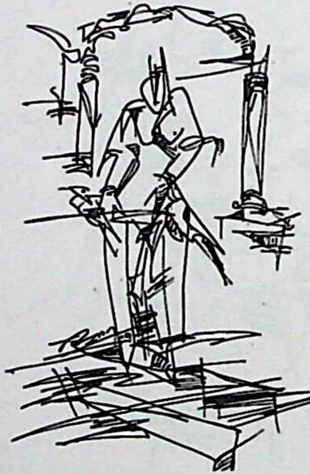


बँधे हुए हैं एक दूजे से
हम तुम ताने-बाने में,
आओ बैठो क्या रक्खा है
सिरहाने पैताने में...

पर्वत के पंछी आ जाते हैं
इक पल में अपने घर
कितनी देर लगा दी तुमने
भटक गए जाने किस दर

और न उलझाओ मन मेरा
मिथ्या-सत्य बहाने में. आओ बैठो....

संभव नहीं कि पल दो पल में
दूर शिकायत हो जाये
पारिजात की शाखाओं से
बार-बार सौरभ आये
आधी रात गई कुछ कहने-
सुनने और मनाने में. आओ बैठो...



यह मत पूछो कितने दिन के-
बाद मिला है यह अवसर
जाने कितनी बार जिए हैं
नयनों के सपने मरकर
आज पा रही हैं सुख पलकें
गुपचुप नीर बहाने में. आओ बैठो....

प्यार के पंछी को तो जग से
पीड़ा का उपहार मिला
किरण एक दिनकर की आयी
अभिलाषा का पुष्प खिला।
सुख मिलता मन को अकथनीय
मिलकर समय बिताने मे.. आओ बैठो...

बोलो...

पटरी पर पसर गया पूरा परिवार
फाइलों में बंद हुआ सारा घरबार
मानवता ढूँढ़ती ठिकाना
बोलो है कहाँ हमें जाना

नहरों ने नदिया का सोख लिया पानी
फसलों ने खेतों से कर ली बेईमानी
मेड़ों पर खड़े-खड़े देख रहे चरवाहे
कैसा युग आया मनमाना.. बोलो है कहाँ...

लीपो या पोतो अपनी ऊँची कोठी
मुश्किल है दे पाना घर-भर को रोटी
भीख और भिक्षाटन दाएँ-बाएँ कन्धे
देखो मत अब कोई ताना.. बोलो है कहाँ....

सागर का खारापन कैसे पी जायें
बूढ़े-बच्चे कैसे जीवन जी पायें
सड़ते गोदामों में गेहूँ के बोरे
बिखर रहा है दाना-दाना.. बोलो है कहाँ....

मौसम के नखरों से नहीं हुई खेती
धरती के आँचल में उतर गई रेती
सन-सन-सन सभागार में दौड़े बोली
सच का चेहरा सबने जाना.. बोलो है क़हाँ..

□ 'अंशनिलयम्' 500/1, सत्यम् नगर
भगवानपुर, वाराणसी-221005
वार्ता : 09450186712



हरीलाल 'मिलन'

कागज़ के टुकड़े-सी ज़िंदगी

सपनों के मानचित्र
अपनों ने फाड़ दिए
यादों के ढेर पर रह गई
कागज़ के टुकड़े-सी ज़िंदगी।
बंधन के मरुस्थल में,
चंचल हरियाली-सी।
सुधियों के सावन में,
बनती मेघाली-सी
हल्की-सी भारी-सी
झोंके हर मौसम के
आँसू के आखर में सह गई
कागज़ के टुकड़े-सी ज़िंदगी।
मन के अँधियारे में,
आशाएँ फूटी हैं।
बुनियादें जीवित हैं,
दीवारें टूटी हैं।
चंदन की घाटी में,
विषधर भी होते हैं
चुपके-से सच्चाई कह गई,
कागज़ के टुकड़े-सी ज़िंदगी।
पीछे से दूषित है,
आगे से दर्पण है।
हँसना क्या रोना क्या
सुख-दुःख ही जीवन है।
फूलों की गलियों में,
काँटे भी होते हैं,
भावों की धार में बह गई
कागज़ कें टुकड़े-सी ज़िंदगी।

❑ 300ए/2 (प्लॉट-16 बी), हनुमन्त नगर, नौबस्ता,
कानपुर-208021, वार्ता : 09935299939





डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी

कहने भर से

कहने भर से काम न चलता

क्रियाहीन हैं अतिवादी जो,
शब्दों के हैं वज्र गिराते।
जल का मंथन करने वाले
रई उसी में रहे फिराते।
बुद्धिहीनता की बातों से
ऐसा नर जिन को है छलता।

कोयला सोना बनकर चमके
ऐसी करते रहे कल्पना।
इच्छा के प्रतिकूल देखकर
आकृतिमय हो गई जल्पना।
हों पत्थर की आँखें मोहक
दीप दृष्टि का जहाँ न जलता।

आघातों को भी सह सहकर
ऊर्ध्वमुखी पर्वत हैं रहते।
संत सदा गंगाजल शीतल,
भले उन्हें खलहन हैं दहते।
जितना मिटा बीज मिट्टी में
पादप बन उतना है फलता।

❑ 24, आँचल कॉलोनी, श्यामगंज
बरेली-243005 (उ०प्र०), वार्ता : 09411007050



कृष्ण मोहन अम्भोज

चूल्हे : धुँधवाते

वो चूड़ियाँ खनकतीं
वो पनघट बतियाते
सुधियों में आते है
वो चूल्हे धुधँवाते।

साँझ, सबेरे लगते
चौपालों पर जमघट,
राह किसी की तकते
चंचल नयना नटखट,
वो आते-जाते कुछ
मुखड़े बहुत सुहाते।..

वो नदी खेत सिवान हरे
प्यारे लगते थे,
देख-देख कर फसलें
यह सपने पकते थे,
मुसीबतों के दिन भी
हम हँसकर सह जाते।..



माँ की नर्म हथेली
क्या जादू करती थी,
वो रूखी-सूखी भी
मन कितना भरती थी,
अब पकवानों में भी
स्वाद कहाँ हैं आते।...

❑ नर्मदा निवास, न्यू कॉलोनी, पचोर-465683
जिला- राजगढ़ (म.प्र.)
वार्ता : 07566695910



मालिनी गौतम

रतजगा काजल

समय के बिखरे हुए हर ओर निर्मल पल
टीसता है मन कि जैसे
सुआ कोई चुभ गया है
ओढ़ पंखों का दुशाला
क्यों हुई गुमसुम बया है

इन सवालों के कहीं मिलते नहीं हैं हल
एक हाँड़ी आँच पर
संबंध पल-पल जाँचती है
अधपके-से सूत्र सब
बेचैन होकर ताकती है

गगन छूने को धुँआ है हो रहा बेकल
मोरपंखी ओढ़नी में
संदली कुछ याद महकें
पर, कशीदों मे कढ़े
कोयल-पपीहे अब न चहकें

दृगों में ठहरा हुआ है रतजगा काजल

❑ 574, मंगल ज्योत सोसाइटी, संतरामपुर-389260,
जिला- महीसागर (गुजरात)
वार्ता : 09427078711

ग़ज़लें



ज़की तारिक़

सिमटे हुए जज़्बों को बिखरने नहीं देता
ये आस का लम्हा हमें मरने नहीं देता

किस्मत मिरी रातों की सँवरने नहीं देता
वो चाँद को इस घर में उतरने नहीं देता

करती हैं सहर, ज़र्द गुलाबों की तिजारत
मैयार-ए-हुनर ज़ख्म को भरने नहीं देता

बादल के सिवा कौन है हमदर्द रफीको
त्रिशूल-सी किरनों को बिखरने नहीं देता

आँखों के दरीचे भी 'ज़की' उसने किए बन्द
सूरज को समुन्दर में उतरने नहीं देता

•••

तितलियों-सा सँवर गया वो शख़्स
रंग बनकर बिखर गया वो शख़्स

क्या हुनर है कि आँख से होकर
मेरे दिल में उतर गया वो शख़्स

लुत्फ की चाह थी कि सीने में
दर्द ही दर्द भर गया वो शख़्स

वहम था, या हवा का झोंका था
सामने से गुज़र गया वो शख़्स

मेरी आँखों की ख़ुश्क झीलों में
चाँद बनकर उतर गया वह शख़्स

जुस्तुजू में हैं देर से आँखें
जाने 'तारिक़' किधर गया वो शख़्स

□ 564, गौशाला फाटक, गाजियाबाद- 201009
वार्ता : 09818860029



चन्द्रभाल सुकुमार

धूप में, जल में, हवाओं में ग़ज़ल,
अनकही संवेदनाओं में ग़ज़ल।

मंदिरों में, मस्जिदों में, चर्च में
प्रार्थना-पूजा-दुआओं में ग़ज़ल।

है हकीकत आज के इंसान की
अब नहीं जंचती कथाओं में ग़ज़ल।

ख़ुद भगीरथ बन रहे हैं आजकल
बंद है जिनकी जटाओं में ग़ज़ल।

लेखनी नम हो भले 'सुकुमार' की,
खौलती तो है शिराओं में ग़ज़ल।

•••

प्रीति का परिणाम है मेरी ग़ज़ल
आज तेरे नाम है मेरी ग़ज़ल

गीत तरूवर की सुहानी छांह, तो
चिलचिलाती घाम है मेरी ग़ज़ल

हो नदी का तीर या एकान्त पथ
गूंजती हर शाम है मेरी ग़ज़ल

अग्नि-शर सन्धान करने के लिए
सिन्धु-तट पर राम है मेरी ग़ज़ल

ये घटाएं, ये भुजाएं, यह हसीं
किसलिए बदनाम है मेरी ग़ज़ल

□ लीलायतन, डी-215, वी.डी.ए. कॉलोनी
फेज़-1, बड़ालालपुर, वाराणसी
वार्ता : 09415610781



दीपक 'दानिश'

दिल लगाना मेरा ज़ुरूरी था
ग़म उठाना मेरा ज़ुरूरी था

था मैं रुस्वा पर अंजुमन के लिए
मुस्कुराना मेरा ज़ुरूरी था

कर के आदाब उनकी नज़रों पर
हक़ जताना मेरा ज़ुरूरी था

उनकी रंजिश पे आह भरने से
जी चुराना मेरा ज़ुरूरी था

कुछ रक़ीबों से अपनी रुख़सत पर
मिल के आना मेरा ज़ुरूरी था

शह्र में कुछ तो है कि हिज्रत से
लौट आना मेरा जरूरी था

रस्मे-उल्फ़त में रस्मे-महफ़िल को
भूल जाना मेरा ज़ुरुरी था

सब को एक शख़्स की ख़बर के लिए
याद आना मेरा ज़ुरूरी था

इक इबादत को अपनी वहशत में
ले के आना मेरा ज़ुरूरी था

उस फ़साने की दिलकशी के लिए
हार जाना मेरा ज़ुरूरी था

इश्क़ भी क्या जो सर हुआ 'दानिश'
ये बताना मेरा ज़ुरूरी था

□ डी-62, कावेरी विहार, एन. टी.पी.सी. परिसर
जमनीपाली, कोरबा-495450 (झारखंड)
वार्ता : 09425283135



सुशील 'साहिल'

फ़रिश्ता हूँ न कोई देवता हूँ
खिलौना हूँ मैं मिट्टी से बना हूँ

दग़ा खाने में तू रहता है आगे
दिले-नादान मैं तुझसे ख़फा हूँ

सिला मुझको भलाई का भला दे
ज़ियादा कुछ नहीं मैं माँगता हूँ

मैं जबसे लौटा हूँ दैरो-हरम से
पता सबसे ख़ुदा का पूछता हूँ

मेरा चेहरा किताबे-जिन्दगी है
ज़ुबाँ से मैं कहाँ कुछ बोलता हूँ

●●●

किसी मासूम की बेचारगी आवाज़ देती है
मुझे मजबूर होठों की हँसी आवाज़ देती है

कोई हंगामा कर डाले न मेरी लफ़्ज़े-ख़ामोशी
मेरी बहनों की मुझको बेबसी आवाज़ देती है

तुम्हारे वास्ते वो रेत का ज़रिया सही, लेकिन
कभी जाकर सुनो, कैसी नदी आवाज़ देती है

मेरे हमराह चलकर ग़म के सहरा में तू क्यों तड़पे
तुझे ऐ ज़िंदगी, तेरी ख़ुशी आवाज़ देती है

□ सी. 11/22, ऊर्जानगर कॉलोनी, महागामा,
गोड्डा- 814154 (झारखण्ड)
वार्ता : 09955379103



हस्तीमल हस्ती

जिस शख़्स को ग़म अपने भुलाने नहीं आते
उसके लिए ख़ुशियों के ज़माने नहीं आते

कतरा के न चलिएगा कभी सख़्त डगर से
आसान सी राहों में ख़जाने नहीं आते

मुश्किल में फ़कत ग़ैर ही दुश्मन नहीं बनते
अपने भी तो अपनों को बचाने नहीं आते

आ जाए अगर वक़्त तो है जान भी हाज़िर
हम उनमें से हैं जिनको बहाने नहीं आते

दुनिया की नज़र में जो बुरा हूँ तो बुरा हूँ
मुझको तो मेरे ऐब छुपाने नहीं आते

❑ 28, कालिका निवास, पोस्ट ऑफिस के सामने
नेहरू रोड, सांताक्रुझ (पूर्व), मुंबई - 400055
वार्ता : 022-26122866



डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

दिल में इक दर्दे-आरजू अब तक
हर कहीं सामने है तू अब तक

तेरे जल्वों की आंच में झुलसे
आग बरसी थी और लू अब तक

आप बचकर निकल गये मुझसे
कर रहा हूँ मैं गुफ़्तगू अब तक

शाम से करवटें बदलती हैं
ज़ह्न में शोख़ जुस्तजू अब तक

बंद कमरे में जागती रातें
तेरी आहट है चारसू अब तक

❑ सदर बाजार शिवपुरी - 473551 (म.प्र.)
वार्ता : 09425766485



महेन्द्र जैन

परस्पर अब नहीं वो प्यार क्यों है, सोचना होगा
चमन में फूल के संग ख़ार क्यों है, सोचना होगा

लुटा दी ज़िंदगी सारी पिता ने अपने बेटों पर
उन्ही के सामने लाचार क्यों है, सोचना होगा

कभी इसकी कभी उसकी, कभी उसकी कभी इसकी
बदलती रोज़ अब सरकार क्यों है, सोचना होगा

लगा कर जो मुखौटा संत का व्यभिचार में डूबे
उन्ही का हो रहा जयकार क्यों है, सोचना होगा

ख़बर कोई ख़ुशी की अब नहीं मिलती है पढ़ने को
कि हिंसा से भरा अख़बार क्यों है, सोचना होगा

जिसे हम मान कर देवी 'महिन्दर' पूजते निश-दिन
उसी का कोख में संहार क्यों है, सोचना होगा

❑ 'जैन सदन', कोठी नं० 871, सेक्टर-13, हिसार - 125001 (हरियाणा), वार्ता : 09416674411



अजय 'अज्ञात'

दोस्तों की बात कर कुछ राज़दाँ की बात कर
जिसने लूटा था तुझे उस कारवाँ की बात कर

चाँद तारों से जड़े इस आसमाँ की बात कर
खूबसूरत और दिलकश से समाँ की बात कर

मूर्खों या बुजदिलों के किस्से हमको मत सुना
चेतना जिस से जगे उस दास्ताँ की वात कर

छोड़ कर तू रोना-धोना अपने ही दुःख-दर्द का
ऐ जबाँ वाले कभी तो बेज़बाँ की बात कर

ज़िक्र मत कर रोशनी में साथ चलने वालों का
तीरगी में साथ चलते सायबों की बात कर

●●●

जो न अब तक हो सका, इस बार होना चाहिए
स्वप्न पूरे राष्ट्र का साकार होना चाहिए

इश्क़ के इस मर्ज़ का उपचार होना चाहिए
मुसकुराते चेहरों का दीदार होना चाहिए

हर तरफ चैनों अमन का खुशनुमा माहौल हो
प्यार की खुशबू भरा घरबार होना चाहिए

खास दिन का क्यूँ भला रहता है तुमको इंतिज़ार
ज़िंदगी में रोज़ ही त्यौहार होना चाहिए

कोई भी मज़हब हो सबका एक ही पैगाम है
प्रेम औ सद्भाव का व्यवहार होना चाहिए

घर की चौखट तक न हरगिज़ आने पाये ये कभी
घर से थोड़ी दूरी पर बाज़ार होना चाहिए

इन सबूतों की बिना पर ऐसा लगता है मुझे
फ़ैसला हक़ में मेरे इस बार होना चाहिए

❑ 37/31, सैक्टर-31, फरीदाबाद-121003 (हरियाणा)
वार्ता : 09810561782, 09650994445



ज्ञानप्रकाश पाण्डेय

मुझको मेरा जहान कब देगा
दर्द को आसमान कब देगा

कुलबुलाते हुए अँधेरों को
नूर का सायबान कब देगा

हमनें साँसों की सीपियाँ रख दीं
मौत अपने निशान कब देगा

ख़ंजरों ने तो कह दिया अपना
ज़ख़्म अपने बयान कब देगा

एक मुद्दत हुई ग़ज़ल कहते
मीर जैसी ज़ुबान कब देगा

●●●

ख़्वाब देखा जो मर रहा दिल में
शोर कितना है कर रहा दिल में

पर ख़यालों के काट दूँ कैसे
एक पैकर उभर रहा दिल में

रात-दिन ये कफ़स की सूरत हैं
वक्त परवाज भर रहा दिल में

बे-यक़ीनी के घुप अँधेरे में
धूप-सा कुछ उतर रहा दिल में

तल्ख़ मंजर लहू-लहू सब कुछ
टूट कर क्या बिखर रहा दिल में

❑ 96, टी.एन.बनर्जी रोड, पो. सुखचर (घोषपाड़ा)
सोदपुर, 24 परगना (उत्तर), कोलकाता- 700115 (प.ब.)
वार्ता : 09681307939



वफ़ा गोरखपुरी

खिड़कियाँ खोल दीं बहाने की
बात की जब भी उनसे आने की

जो बनानी थी बन गई तजवीज़
देर है फ़ैसला सुनाने की

कुछ करो बात ऐ क़लमकारो
अपनी तख़लीक़ में ज़माने की

बर्क़ को रास्ता दिखायेगी
रौशनी मेरे आशियाने की

मुझ से मुफ़लिस की बात सुन-सुन कर
उनकी आदत है मुस्कुराने की

जब मिली है 'वफा' तो कर लो कुछ
उम्र यूँ ही नहीं गँवाने की

•••

साथ होता जो हमसफ़र कोई
मुझको ठगता न राहबर कोई

जिसमें एख़लास हो, मुहब्बत हो
ढूँढ लूँगा वह रहगुज़र कोई

दे जो मुझको पता सदाक़त का
ऐसी होती नहीं सहर कोई

मेरी तक़दीर भी निराली है
मुझ पे करता नहीं नज़र कोई

उस से कह दूँगा हाले-दिल अपना
गर मिला शख़्स मोतबर कोई

आह जो निकली है मेरे दिल से
अपना छोड़ेगी वह असर कोई

बात कुछ भी नहीं है देख 'वफ़ा'
फिर भी करता है मुश्तहर कोई

□ 597/वाय, सेठ गुलाम अली कैम्पस, असूरन चुंगी,
मेडिकल कॉलेज रोड, गीता वाटिका
गोरखपुर (उ.प्र.), वार्ता : 09450885485



कमल किशोर 'भावुक'

पाक़ रिश्तों को सज़ा देना नहीं अच्छा
दोस्ती करके दग़ा देना नहीं अच्छा

फूल ने फौलाद से ख़ुद रार जब ठानी
फिर उसे कुछ मशवरा देना नहीं अच्छा

वक्त ने जो दर्द की जागीर दी उसको-
आँसुओं में यों बहा देना नहीं अच्छा

आज मैं कमज़ोर था तो छल किया तुमने
तर्क से सच को दबा देना नहीं अच्छा

स्वयं ही सम्पूर्ण है 'माँ' शब्द अपने में
नाम इसको दूसरा देना नहीं अच्छा

□ 'भावुक-भवन', 545क/ई 59, प्रभातपुरम्
(आलमनगर रेलवे स्टेशन के सामने), राजाजीपुरम्
लखनऊ - 17 (उ.प्र.), वार्ता : 09807321133



मंजरी पाण्डेय

कोई फिर नया गीत गाने लगे हैं
वो सपनों में आ के जगाने लगे हैं

ये सच है उन्हें प्यार करती हूँ दिल से
न जाने वो क्यों आज़माने लगे हैं

खिले फूल ने वो इशारा किया है
समझने में जिसको ज़माने लगे हैं

हुए हम ग़ज़ल अब तो कविता, कथा से
ग़ज़ल को सभी गुनगुनाने लगे हैं

□ सा. 14/70 एम., बरईपुर, सारनाथ
वाराणसी -221007 (उ.प्र.)
वार्ता : 09307488087



मनशाह 'नायक'

अभावों के मारे अँधेरों के पाले
ज़माने में करते हैं इक दिन उजाले

मेरे सामने इक सुनामी खड़ा है
मगर मैं नहीं वो जो क़श्ती घुमाले

हमारे सिवा कौन तुमको मिलेगा
जो पलकों से पाँवों के काँटे निकाले

दिए इश्क़ के इम्तिहाँ हमने लाखों
ज़माना हमें आज फिर आजमाले

किए जा तू मन की मगर सुनले ये भी
वो बेटा नहीं है जो पगड़ी उछाले

मुझे अपनी औलाद पर गर्व होगा
मेरे बाद जो मेरी थाती सँभाले

बचाएगा कैसे तू ख़ुद अपना दामन
अगर चाँद पर तूने छींटे उछाले

तेरे पास जो भी है सरमाया 'नायक'
वो जिसका है कर दे उसी के हवाले

❑ कल्पना लोक, सूरसागर, जोधपुर- 342024 (राज.)
वार्ता : 08890162146



दानिश भारती

क्या-क्या अजीब ख़्वाब दिखाती है ज़िंदगी
खुद नाचती है, सबको नचाती है ज़िंदगी

खुशियाँ, सुरूर, रंग, तमाशे, कहानियाँ
ख़्वाहिश जगा-जगा के लुभाती है ज़िंदगी

नासाज़गार वक़्त परखने लगे अगर
लेती है इम्तिहान, सताती है ज़िंदगी

फ़िक्रो-अमल का सबको दिखाती है आईना
अंदाज़ ज़िंदगी के सिखाती हैं ज़िंदगी

लाए नई बहार, नया जन्म ले अगर
रुख़सत कभी हुई, तो रुलाती हैं ज़िंदगी

दर्दो अलम हो, या हो ख़ुशी, सब कुबूल हो
यूँ ज़िंदगी का पाठ पढ़ाती है ज़िंदगी

ज़िंदा दिली के साथ जो जीते हैं उम्र-भर
'दानिश' उन्हीं के नाज़ उठाती है ज़िंदगी

●●●

करो उन्हीं का ही जीवन में तुम वरण मित्रो
यथार्थ-भाव से हों पूर्ण जो भी क्षण मित्रो

जो दूर कर दे तुम्हें सत्य के उजालों से
हटा दो आँखों से अपनी वो आवरण मित्रो

यूँ अग्रसर ही रहा काल-चक्र जीवन का
कहीं विरक्ति बहुत हैं, कहीं रमण मित्रो

स्वयं जो बन के भ्रमर खेलता है फूलों से
'वो तितलियों को सिखाता है व्याकरण मित्रो'

कभी तुकांत, कभी छंद, तो कभी गणना
बहुत कठिन है निभाना 'तगण-मगण' मित्रो

चलो प्रकाश भरें शब्द-शब्द में 'दानिश'
कभी न होने दें साहित्य का क्षरण मित्रो

❑ 614/33, स्ट्रीट-2 शामनगर, लुधियाना-141001 (पंजाब)
वार्ता : 09872211411



ख़ुर्शीद शेख़ 'ख़ुर्शीद'

राज़ को हर हाल में, बस राज़ रहना है ज़रूरी
चेहरे पर एक सा अंदाज़, रखना है ज़रूरी

मौत का आये बुलावा, ग़म कभी करना नहीं तुम
दिल दिमाग़ो-जान से, तैयार करना है जरूरी

ज़िंदगी की चाह भी, बेकार है अब तो यक़ीनी
आयेंगे वो लाश पर, तो मौत सहना है ज़रूरी

इक शमा काफ़ी न, दिल के अँधियारों को मिटाने
चाहते जो ख़ुशनुमाई, दिल का जलना है ज़रूरी

रात दिन 'ख़ुर्शीद', काफ़ी सो चुके, अब जागना है
नींद की अब बदनुमा दीवार, ढहना है ज़रूरी

●●●

हादसे भी अजीब होते हैं
दूर वाले क़रीब होते हैं

बाग़ में फूल और काँटे भी
ख़ार गुल के नसीब होते हैं

छूटते हमसफ़र भी आख़िर को
रास्ते जब सलीब होते हैं

दुश्मनी भी यहाँ निराली है
ख़ार गुल से हबीब होते हैं

इश्क़ में तक हो, तअल्लुक़ तो
ख़त्म क़िस्से, अजीब होते हैं

❑ 1च 16, सेक्टर-4 (रामेश्वर पार्क), हिरणमगरी
उदयपुर (राज.), वार्ता: 09950678815



सलाम बनारसी

अहम हैं, ख़ास हैं, लालो गुहर से
वो ख़ुद को देख ले मेरी नज़र से

उन्हें जब देख लूँ देखे ही जाऊँ
कोई मतलब नहीं शामो-सहर से

बड़ा पुरकैफ़ हैं जामे मुहब्बत
अलग है, ज़ायक़ा शीरो-शकर से

उड़ानों के लिए लाज़िम है जज़्बा
फुदुकना है फुदुक ले बालोंपर से

उसी के पाँव मंजिल तक बढ़ेंगे
जो मक़सद के तहत निकलेगा घर से

न पूछो इन दिनों हाले-ज़माना
दहल जायगा दिल उसकी ख़बर से

'सलाम' उस बज़्म में जा-जा के देखा
नहीं देखा गया अच्छी नज़र से

●●●

कोई काबू नहीं अगर दिल पर
क्या भरोसा करें मुकाबिल पर

वो सफ़ीरे रहे वफ़ा ही था
लुट गया जो पहुँच के मंज़िल पर

ज़ख़्में दिल की न पूछिये लज़्ज़त
मारिये और तीर बिस्मिल पर

खेलिये खेल शर्त इतनी है
बाल आए न शीशा-ए-दिल पर

कश्ती तूफ़ान से निकल कर भी
डूब जाती है आके साहिल पर

याद आने लगी 'सलाम' उसकी
पड़ गई क्या निगाह मुश्किल पर

❑ जे 21/235, रसूलपुरा, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
वार्ता : 09389080765



संतोष कुमार 'तस्कीन'

ताउम्र अपनी ज़िंदगी उलझन में रह गयी
ख़ुशबू तुम्हारी याद की बस मन में रह गयी

ख़्वाहिश की झील बन गयी मैदान रेत का
तन्हाइयों की आग ही जीवन में रह गयी

सारा जहान झूठ के आकाश के तले
सच्चाई बस ज़मीन के दरपन में रह गयी

जद्दोजहद के बाद भी मंजिल न मिल सकी
गुमराहियों की फाँस ही जीवन मे रह गयी

जलता रहा किसी से बिछड़कर मैं रात-दिन
तश्नालबी की आग ही सावन मे रह गयी

●●●

अपना चिंतन अपना दर्द
सुनने वाले हो गये सर्द

जिसका कोई नाम न काम
मैं हूँ उस जनपद का फ़र्द

आँखों-आँखों देख रहा
दहशत की छायी है ग़र्द

कहने को सब हैं साथी
दर्द में कोई नहीं हमदर्द

पैनी आँखों से 'तस्कीन'
दिखता है सब कुछ बेपर्द

❑ ग्राम- महाराजगंज, पोस्ट- रामगढ़
जिला- चन्दौली- 232107 (उ०प्र०)
वार्ता : 09889410123



सुभाष पाठक 'ज़िया'

ऐं चराग़ों तुम्हें ख़बर होगी
कब शबे हिज्र की सहर होगी

इश्क़ का मर्ज़ है ये चारागर
हर दवा तेरी बे असर होगी

आयेगा फिर से दर्द का मौसम
ये हँसी फिर से दर ब दर होगी

बेवफ़ा तुझ पे फिर यक़ीं कर लें
भूल ये अब न भूलकर होगी

हैं तलब जिसकी ऐ 'ज़िया' तुमको
ये यक़ीं है वो ख़ूबतर होगी

●●●

लुत्फ़ सारा मुहब्बत का जाता रहा
मैं उसे वो मुझे आज़माता रहा

अपना ग़म तो वो हँस कर उठाता रहा
मेरा ख़ुश रहना उसको सताता रहा

टुकड़े-टुकड़े बिखर तो गया आईना
सच दिखाता था सच ही दिखाता रहा

जीत में भी मज़ा जीत का था कहाँ
हारने वाला जब मुस्कुराता रहा

छू न पाई हँसीं होंठ उसके कभी
उम्र भर जो सभी को हँसाता रहा

ऐ 'ज़िया' इन्तिहा है ये तन्हाई की'
एक दर्दे जिगर था सो जाता रहा

❑ ग्रा.व पो. समोहा, तहसील करेरा
ज़िला- शिवपुरी-473660 (म.प्र.)
वार्ता : 08878355676



किशन स्वरुप

न जाने किस तरह का सिलसिला था
ज़मीं से आसमाँ कितना जुदा था

जुबाँ जिसकी क़लम कर दी गई है
सुना, वो आदमी सच बोलता था

समय की धूप ने लम्बा किया है
हमारे दरमियाँ जो फ़ासला था

मुसीबत मोल ली नेता बना है
नहीं तो आदमी अच्छा भला था

अभी जितना चले काफ़ी नहीं है
इरादा तो ज़ियादा दूर का था

मुसल्सल था सफ़र में जो मुसाफ़िर
ये उसका अज़्म था और हौसला था

•••

कुछ कहने से पहले थोड़ा सोचा कर
अच्छा अच्छा कर चाहे थोड़ा सा कर

कितनी देर चला शायद बेमानी है
कितनी दूर चला इसका अंदाज़ा कर

प्यार, मुहब्बत मोल नहीं मिल सकते हैं
तू इसकी ख़ातिर ख़ुद को आमादा कर

लोग तुझे तुझसे भी ज़्यादा चाहेंगे
पहले ख़ुद से प्यार ज़रा-सा ज़्यादा कर

❑ 108/3, मंगल पांडेय नगर, मेरठ-250004 (उ.प्र.)
वार्ता : 012-12603523, 09837003216



'ख़ुरशीद' खैराड़ी

गाँवों की हर बात निराली सच कहता हूँ
सूरत सीरत भोली भाली सच कहता हूँ

सपने टूटे अपने रूठे जग सूना है
सबकी नज़रें आज सवाली सच कहता हूँ

नेह तुम्हारा चौमासे की रिमझिम रिमझिम
हर दिन होली रात दिवाली सच कहता हूँ

होठों पर मधु मिसरी मन में विष की गाँठें
दुनिया मेरी देखी भाली सच कहता हूँ

बाली बाली मोती निपजाते हैं फिर भी
भूखे हैं खेतों के हाली सच कहता हूँ

जिनने दीपक बाले राहों में औरों की
उनकी अपने रातें काली सच कहता हूँ

इक दिन वे ही लूट ख़ज़ाना ले जायेंगे
सौंपी है जिनको रखवाली सच कहता हूँ

बदमाशों का अभिनंदन होगा मंचों पर
और शराफ़त होगी गाली सच कहता हूँ

तुम 'खुरशीद' ग़ज़ल छोड़ो अब जोक सुनाओ
लोग बजायेंगे फिर ताली सच कहता हूँ

❑ 4045, नेहरु पार्क, रेलवे कॉलोनी, रेसीडेन्सी रोड़
जोधपुर-342003 (राज.), वार्ता : 09413408422



भावना

बस, तड़प औ' तिश्नगी है और क्या
ज़िंदगी इक बेबसी है और क्या

डूबना औ' तैरना फिर धार-संग
इश्क़ तो इक बंदगी है और क्या

वह फ़रिश्ता-सा है ये कहते सभी
किन्तु, वो भी आदमी है और क्या

जिसके पर में हौसला परवाज़ का
शान उसकी लाज़िमी है और क्या

कुछ कहो तो मुस्कुरा देते हैं वो
बस, यही तो सादगी है और क्या

●●●

कैसा अपना है ये सफ़र, मालिक
कुछ न आता है अब नज़र, मालिक

आ ही जाता है सबके चेहरे पर
बीतती उम्र का असर, मालिक

धूप से बच भी कैसे सकते हो?
ज़िंदगी में है दोपहर, मालिक

वक़्त ने साथ दे दिया मेरा
उसने छोड़ी कहाँ कसर, मालिक

रात-दिन इक लगन-सी रहती है
जब भी देता है कुछ हुनर मालिक

❑ बलुआ निवास, आवास नगर, रोड नं० 2
(न्यू पुलिस लाइन के पास) बैरिया
मुजफ्फरपुर-842003 (बिहार)
वार्ता : 08235108551

अल्पेश 'पागल'

आँसुओं का असर..
जिन्दगी तरबतर

साँस चलती रही..
एक इम्कान पर

लफ़्ज पर चल गया
खामशीं का असर

ख़ुद से बाहर निकल
मान मेरी अगर!

एक 'पागल' रहा
एक अल्पेश पर।

●●●

ज़ुबा आँख की कुद असरदार भी है
यहाँ ख़ामशीं एक गुफ़्तार भी है

कि साँसों से आगे निकलना पड़ेगा
बड़ी तेज़ जीवन की रफ़्तार भी है

भटकना मुकद्दर नहीं शौक है बस
मेरा शहर में एक घर-बार भी है

मुझे दोस्ती भी उन्होंने सिखाई
मुझे दुश्मनों से ज़रा प्यार भी है

मुझे जीतकर तू कभी हँस न पाया
मेरी जीत है ये, तेरी हार भी है

ये अल्पेश तो एक 'पागल' हैं सच में
वो शायर ज़रा सा समझदार भी हैं

❑ अमिप्रभा, प्लॉट नं० 101 ए, किदवई नगर
मेन रोड, माधव रेसिडेंसी के पास
राजकोट-360005 (गुजरात)



राशिद ख़ान 'नामी'

मुहब्बत धर्म हो जाये वफ़ा ईमान हो जाये
सही माने में हर इंसान फिर इंसान हो जाये

वो मुझको चाहता तो है मगर वो चाहता ये है
कि जब मैं सामने आऊँ तो वो अनजान हो जाये

गुलों से प्यार करते हो तो फिर ये भी करो कोशिश
कि फ़स्ले गुल चमन में मुस्तकिल मेहमान हो जाये

कोई मुश्किल जो आ जाये तो हल करनी ही पड़ती है
नही मुमकिन कि मुश्किल ख़ुद ब़ खुद आसान हो जाये

ग़ज़ल राशिद भी कहता है अभी कम उम्र है लेकिन
बुरा क्या है अगर वो साहिबे दीवान हो जाये

●●●

बहुत बड़े हैं वो क्या-क्या कमाल रखते हैं
मगर कहाँ वो हमारा ख़याल रखते हैं

ख़ुदा की देन का शिकवा-गिला नहीं करते
ख़ुशी या ग़म मिले जो भी सम्भाल रखते हैं

किसी को चोट न पहुँचे हमारी बातों से
हम अपने ज़ह्न में इसका ख़याल रखते हैं

तुम्हारी बात से नाराज़ हम नहीं होते
वो और होंगे जो दिल में मलाल रखते हैं

❑ ग्राम + पोस्ट- हरहुआ. वाराणसी-221105 (उ.प्र.)
वार्ता : 08960334590



डा० क़मर रईस 'बहराइची'

मेरा हर एक ग़म जो उठाने की ज़िद में है
दुनिया उसी को दार पे लाने की ज़िद में है

वो चाहता नहीं हैं कोई उसकी हो मिसाल
सूरज हर इक चिराग़ बुझाने की ज़िद में है

पर्दे से जो निगाहों में आया नहीं कभी
सूरज को उँगलियों पे नचाने की ज़िद में है

हैरत नहीं है अपने जुनूँ पर उसे कोई
दरिया तमाम शहर को पाने की ज़िद में है

पहचान अपनी कोई बना ले 'क़मर रईस'
आईना तेरे सामने आने की ज़िद में है

❑ 339, बड़ीहाट, बहराइच-271801 (उ०प्र०)
वार्ता : 08874656384



मुन्ना लाल ठाकुर

दाद देना या न देना तुम मेरे अशआर पर
मैं ग़ज़ल फिर भी लिखूँगा बेकसी की मार पर

आपने देखा नहीं उस घर के बच्चों को कभी
भूल जाते हैं चहकना जो कि हर त्योहार पर

भूख से दम तोड़ती तस्वीरे-मुफ़लिस देख लो
हैं अमीरों के घरों में मरमरी दीवार पर

शोषितों के वास्ते भी कुछ तो जिम्मेदारियाँ
शोषकों के दौर में आतीं हैं रचनाकार पर

मर गई जिस शख़्स की संवेदना वो क्यूँ लिखे
भूख रोटी मौत मुफ़लिस या किसी लाचार पर

❑ हुकुलगंज, वाराणसी (उ.प्र.), वार्ता : 08115204704



विनय साग़र जायसवाल

मेरे कद को कर गया ऐसा वो ज़माने में
आज तक हैं तुहमतें मेरे सर उठाने में

पहले बैठिये ज़रा दिल के शामियाने में
फिर सुरूर आयेगा रूठने-मनाने में

इक अजब सा लुत्फ़ था उन पलों के दर्मियाँ
आज तक हैं हलचलें दिल के कारखाने में

उसकी ज़िद के सामने सोचता भी क्या भला
ज़हरे-ग़म को पी लिया राज़े-ग़म छुपाने में

मेरे चेहरे की ख़ुशी का सबब न पूछना
तुम क्या जानो क्या मिला मुझको हार जाने में

जाने कितने मरहले ज़िन्दगी से जुड़ गये
इक नज़र मिलाने में इक नज़र चुराने में

आज तेरे ही लिये मुन्तज़िर है यह नज़र
लौट कर तो देख तू दिल के आशियाने में

क्या कहें ये रोशनी किस तरह हुई 'साग़र'
सौ दिये बुझा लिये इक दिया जलाने में

❑ 846, शाहबाद, गोंदनी चौक, बरेली-243003 (उ.प्र.)
वार्ता : 07520298865



अजय विश्वकर्मा 'शान'

और कोई नज़ीर मत बनिए
पीर होकर फ़कीर मत बनिए

आपको भी ख़ुदा तराशेगा
आप पत्थर हैं नीर मत बनिए

इस सियासत को खूब देखा हैं
मानिएगा वज़ीर मत बनिए

रेंग चलिए कि चिकनी मिट्टी है
पाँव फिसलेगा वीर मत बनिए

लोग जिस पर बहाते हैं आँसू
हाथ की वो लकीर मत बनिए

चाहकर भी ख़ता नही होगी
फूल सा बनिए तीर मत बनिए

झोंपड़ी में महल से आएँ अब
नींद खोकर अमीर मत बनिए

घोंसले जो उजाड़ देता है
'शान' ऐसा समीर मत बनिए

❑ ग्राम- गहली, पो०- मलाई
जनपद- जौनपुर-222162 (उ.प्र.)
वार्ता : 09451336600

देदीप्यमान नक्षत्र



शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय'

(27 सितम्बर 1911 - 31 अगस्त 1970)

जो कहीं प्रेम राज-पथ होता
क्या सभी का उधर न रथ होता

नेह की जब बिसात बिछती हैं
प्राण ही है सदैव गथ होता

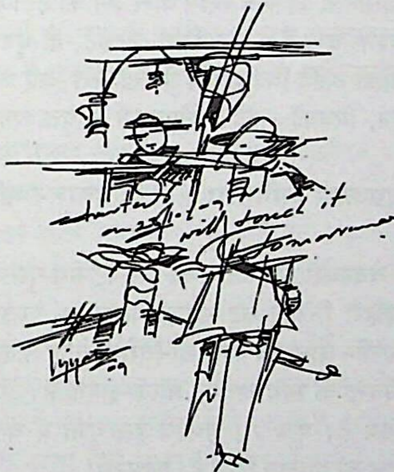
जो हृदय है मथित, दुखी मत हो
दिव्य नवनीत दूध मथ होता

पथ मिले तो कि बढ़ सकूँ उसपर
फिर सुपथ या कि यह कुपथ होता

गोप्य होते रहस्य तो यों सब
प्राण का भेद पर अकथ होता

जो कि करबद्ध हो कहा, पग छू,
देवि! कहता, वही शपथ होता।।

'रुद्र' प्रायः जहाँ सभी की इति।
क्या तुम्हारा वहीं न अथ होता?



इन दिनों मन मलीन ज्यादा हैं
आह के ही अधीन ज्यादा हैं

चाह उनकी सता रही है जो
शील में कम, हसीन ज्यादा है

हैं कमल नेत्र तो अधिक उनके
और मेरे कि मीन ज्यादा हैं

प्रेम का है प्रपंच, दिल दो ही
शत्रु तो तीन-तीन ज्यादा हैं

नैन भी क्या प्रवीण वक्ता हैं
कम न कहते, कभी न ज्यादा हैं

दीन कम थे कि दान ज्यादा तब
दान अब कम कि दीन ज्यादा हैं

आदमीयत गयी, घिसे पुरजे
आदमी कम; मशीन ज्यादा हैं

धन्य! प्राचीन कम न वय से जो
किन्तु मन से नवीन ज्यादा हैं

दोष से पूर्ण 'रुद्र' की ग़ज़लें
हीन कम हैं, महीन ज्यादा हैं

हास्य-व्यंग्य के पंच महाभूतों में से एक 'बहती गंगा' सहित अनेक कृतियों के अमर रचयिता 'रुद्र काशिकेय' का हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। उनकी ग़ज़लों में अद्भुत व्यंजना शक्ति है।

पुस्तकें

गीत संग्रह

इस हवा को क्या हुआ : रमेश गौतम * अमन प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-110030, पृष्ठ : 208 मूल्य : 400/- मात्र

वरिष्ठ कवि रमेश गौतम नवगीतों के माध्यम से युगीन पीड़ा एवं सामयिक संदर्भों को प्रतिबिंबित करने वाले महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। इस नवीनतम कृति का शीर्षक 'इस हवा को क्या हुआ' सम्पूर्ण पुस्तक की विषयवस्तु को इंगित करता है। 'हवा' शब्द अपने-आपने में अनेक भावार्थ से युक्त है। गीतकार की प्रबल जनपक्षधरता इस बात के लिए सतत जागरूक है कि जन के मध्य प्रवाहित होने वाली प्रतिकूल एवं विषैली हवा जन के लिए घातक सिद्ध नहीं, तभी तो वह जनप्रतिनिधियों को यथार्थ का ज्ञान कराने के लिए व्याकुल है। संग्रह के गीत अलग-अलग भाव-भूमि के हैं। किन्तु समग्रतः इन गीतों में भारतीय जनमानस की पीड़ा, हताशा, कुंठा एवं लोकजीवन की त्रासदी एवं विडंबना के स्वर गुंजायमान हैं। व्यवस्था के प्रति रचनाकार का विक्षोभ एवं आक्रोश ज्वलित शब्दों में अभिव्यंजित है। प्रत्येक गीत की सुगंध मन-मस्तिष्क में ताज़गी भरने वाली है, साथ ही देश-समाज के प्रति उदासीनता का भाव रखने वाले जन को उत्तेजित करने वाली है। एक बादल, आग की कथा, नदी की धार, सागर मंथन, यक्ष प्रश्न, दुख है ऐसा अतिथि, आहटें, दो धूप के अुकड़े, एक नदी बनकर, जानती है सच नदी भी, पाँखुरी नोची गई, दिन हताहत आदि विशेष रूप से रेखांकित किए जाने योग्य हैं। सरल भाषा, चित्रात्मकता, नवीन बिंब, अद्यतन प्रतीक, आंचलिकता, मिथकों आदि विशेषताओं से युक्त यह कृति गीत-ग्राहकों के मध्य चर्चित एवं उल्लिखित होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

किसी उत्सव या मेले में : वेदप्रकाश अमिताभ * भारत प्रकाशन मंदिर, रेलवे रोड, अलीगढ़-202001, पृष्ठ : 72, मूल्य : 120/- मात्र

वरिष्ठ कवि एवं समालोचक डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ की इस पठनीय पुस्तक में 31 गीत, 16 ग़ज़लें, 23 मुक्तक और 2 व्यंग्य पद हैं। गीतों में जहाँ शहरी ज़िंदगी का संत्रास, बिखराव, एकाकीपन एवं विषमताएँ मार्मिक ढंग से अभिव्यंजित हुए हैं, वहीं ग़ज़लों में समकालीन बोध एवं व्यवस्था-विरोधी तेवर सांकेतिकता एवं व्यंजना-शक्ति के माध्यम से पूर्णता को प्राप्त हुए हैं। मुक्तकों में दार्शनिकता के साथ अद्भुत मारक-क्षमता है। अंत में दिल्ली पर केंद्रित दो व्यंग्य पद हैं, जिनमें विषयानुकूल शब्द-चयन प्रशंसनीय है। मात्र 72 पृष्ठीय इस कृति में वर्तमान कालखण्ड को प्रतिबिंबित करके अमिताभजी ने अपने अद्भुत काव्य-कौशल का परिचय दिया है। शोभनम्!

कुछ बेलपत्र कुछ तुलसी दल : जंग बहादुर श्रीवास्तव * पहले पहल प्रकाशन, 25 ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल, पृष्ठ : 147, मूल्य : 280/- मात्र

वरिष्ठ गीत साधक 'बंधु' जी की इस कृति से गुज़रना प्रत्येक गीतप्रेमी के लिए सुखद होगा, क्योंकि रचनाकार जन चेतना के सृजनधर्मी हैं। यथार्थ के ठोस धरातल पर मज़बूती से अपने पाँव टिकाए वे अपनी संवेदनात्मक ऊर्जा को जाग्रत् कर अपने समय की नज़्म टटोलते हैं। उनके गीतों में पाठक को अपने भीतर डुबो लेने का सामर्थ्य है।

मूल्यह्रास एवं लोप होती संवेदना के इस दौर में गीतकार की बहुत कुछ बचा लेने की चिंता प्रणम्य है। विसंगतियों, अनाचार एवं खोखलेपन व कृत्रिमता पर प्रहार करने की उनकी विशिष्ट शैली है। अनूठे बिंबविधान, भावप्रवणता, प्रतीकात्मकता, तरलता, मिथकों का प्रयोग एवं अद्भुत व्यंजना आदि इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ हैं। समय का खारापन, पुराने अक्षर, यह कैसी राजधानी है, सोलह दूनी आठ, बंधु मैं कैसे जीता हूँ, थोड़ा सा जापान, आग का गुणधर्म, बाबूजी, बाणभट्ट के बाप, आने लगा उबाल, शरण ब्रजेत, शाम शिखरणी छंद सहित अनेक गीत रेखांकित किए जाने योग्य हैं।

कट्टा निकाल के (हास्य-व्यंग्य ग़ज़ल-गीत संग्रह) : अशोक अंजुम * संवेदना प्रकाशन, स्ट्रीट-2, चन्द्र- विहार कॉलोनी, क्वारसी बाईपास, अलीगढ़-202001, पृष्ठ : 96, मूल्य : 150/- मात्र

बहुमुखी प्रतिभा के धनी चर्चित कवि अशोक अंजुम की इस नवीनतम कृति में हास्य-व्यंग्य की 13 ग़ज़लें एवं 33 गीत हैं। रचनाकार सहज हास्य में व्यंग्य एवं धारदार व्यंग्य में सहज हास्य का सृजन करने में दक्ष हैं। राजनीति, प्रशासन एवं समाज के विविध क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रहार करना इस पुस्तक का प्रतिपाद्य है। ग़ज़लों में नए रदीफों एवं नई शब्दावली का प्रयोग पुस्तक को अलग रंग प्रदान करता है, वहीं गीतों की चित्रात्मकता, प्रभावोत्पादकता, विषयानुकूल शब्द-चयन एवं संप्रेषण-शक्ति प्रशंसनीय है। गुंडा वन्दन, दारोगा वन्दन, स्वामी वन्दन, लहरी बम, ताक धिना-धिन, वया राष्ट्र धर्म, मंत्रीजी का साला बन जा, रिश्वत देवी, कलुआ मंत्री भयौ आदि विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।

ग़ज़ल संग्रह

सहरा के फूल : ए० एफ० नज़र * बोधि प्रकाशन, एफ० 77, सेक्टर-9, रोड नं० 11, करतारपुर इंडस्ट्रियल एरिया, बाईपास गोदाम, जयपुर-302006, पृष्ठ : 88, मूल्य : 100/- मात्र

युवा ग़ज़लकार ए० एफ० नज़र एक परिपक्व रचनाकार हैं। ग़ज़लों के लिए शिल्प के साथ-साथ जिस गंभीर कथ्य की आवश्यकता होती है, वह इनके पास है। विशिष्ट अंदाज़, हिंदुस्तानी ज़बान (जो ग़ज़ल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है), नए प्रतीक, सूक्ष्म दृष्टि, जीवनानुभव, गहन संवेदना, विषमताओं के प्रति आक्रोश एवं दार्शनिक चेतना इस कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं। दिलकश अंदाज़ में ज़िंदगी की शायरी करने वाले इस ग़ज़लकार से साहित्य जगत् को बहुत उम्मीदें हैं। अशआर की धार की बानगी देखने योग्य है- 'पड़ोसी के मकाँ की आग आ सकती है तेरे घर, हवा का रुख़ बदलने में मियाँ पल भर नहीं लगता।'

बादल बंद लिफाफे हैं : अभिनव अरुण * अंजुमन प्रकाशन, 942, आर्य कन्या चौराहा, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-211003, पृष्ठ : 160, मूल्य : 140/- मात्र

दुष्यंत की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले ग़ज़लकारों में अभिनव अरुण का नाम रेखांकित किए जाने योग्य है। अभिनव के पास आम आदमी के दुःख-दर्द को अनुकूल शब्दावली एवं विशिष्ट अंदाज़ में अभिव्यक्त करने की भरपूर क्षमता है। उनकी प्रेमाभिव्यक्ति में भी नवीनता है। वक़्त की तल्ख़ियों एवं समाज व परिवार के यथार्थ को उन्होंने ग़ज़ल के शे'रो में बखूबी ढाला है। गहन संवेदना, चित्रात्मकता, नवीन प्रतीक, अर्थगाम्भीर्य लक्षणा एवं व्यंजना का विषयानुकूल प्रयोग, क्रांतिकारी तेवर, नये मुहावरे आदि विशेषताओं से युक्त यह कृति असंदिग्ध रूप से ग़ज़लकार की प्रतिनिधि रचना है। अनेक ग़ज़लों में संभाषण में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का बड़ा सटीक प्रयोग हुआ है, यथा 'फफोले हैं 'करप्शन' के उन्हें भी इल्म है इसका, न जाने क्यों भला बनकर कभी नश्तर नहीं आता।' पुस्तक में अनेक अशआर मारक-क्षमता से युक्त हैं। शीर्षक मुखड़ा 'बारिश के खत लाते हैं, बादल बंद लिफाफे हैं' अत्यंत नवीन बिंब प्रस्तुत कर, संग्रह की नवीनता की ओर इंगित करता है। अभिनव की रचनाशीलता विकास के पथ पर अग्रसर है।

तू मुझमें धड़कता है : मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' * उद्‌भावना प्रकाशन, एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाज़ियाबाद, पृष्ठ : 103, मूल्य : 100/- मात्र

मंजुला उपाध्याय अपने सृजन-धर्म के प्रति गम्भीर रहने वाली कवयित्री हैं। यह सत्य उनके सद्यःप्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह से उद्‌घाटित होता है। कवयित्री के भावजगत् में एक विराट् संसार है, जहाँ प्रेम है, मित्रता है, संबंध है, समाज है, देश है या यूँ कहें कि मानव-जीवन के संपूर्ण चित्र चलायमान हैं। कवयित्री ने जहाँ प्रेम के नर्मो-नाज़ुक अहसास को अपने विशिष्ट अंदाज़ एवं निजी शब्दावली में अभिव्यक्त किया है, वहीं सर्वहारा वर्ग की पीड़ा, उपेक्षा एवं तिरस्कार को भी मार्मिक प्रस्तुति दी है। विद्रूपता एवं विडंबना को व्यक्त करने में भी वे कमनीय शब्दों को माध्यम बनाती हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि एवं समकाल के प्रति सजगता प्रशंसनीय है।

दस्तख़त (हिन्दी ग़ज़ल-संग्रह) : ऋषिवंश * नमन प्रकाशन, 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृष्ठ : 107, मूल्य : 200/- मात्र

चर्चित कवि ऋषिवंश की यह कृति 99 ग़ज़लों की एक ऐसा समुच्चय है, जिसमें जीवन के अनेक रूप-रंग दार्शनिकता, माधुर्य एवं सांकेतिकता के साथ चित्रित हुए हैं। अनेक ग़ज़लें छोटी बहर की हैं। कुछ ग़ज़लों में प्रत्येक पंक्ति में अधिकतम दो या तीन शब्द हैं किन्तु रचनाकार ने इनमें भी ग़ज़लियल का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। रूमानियत के साथ-साथ वर्तमान जीवन के खुरदुरे यथार्थ को भी ग़ज़लकार ने गंभीरता से अभिव्यक्त किया है।

ग़ज़ल ऐसी सुनाओ तुम : महेन्द्र जैन * सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड, कैथल-136027, पृष्ठ : 79, मूल्य : 200/- मात्र

महेन्द्र जैन ग़मे-जानाँ और ग़मे-दौराँ दोनों को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। बोल-चाल की भाषा में कही गई इस संग्रह की अधिसंख्य ग़ज़लों में मानव-मन की सहज अभिव्यंजना दृष्टिगत होती है। छोटी बहर की ग़ज़लों में भी मर्म को छूने की क्षमता है। सादगी लालित्य, प्रतीकात्मकता, संप्रेषणीयता आदि विशेषताओं से युक्त इस पुस्तक में कवि का गहन चिंतन एवं देश-समाज की चिंता भी सार्थक ढंग से दीप्तिमान है।

पंछियों के संग गाते : डॉ० नलिन * फ्रेण्डस हेल्पलाइन, 48 ए, शिवपुरा, कोटा-324009, पृष्ठ : 114, मूल्य : 100/- मात्र

वरिष्ठ ग़ज़लकार डॉ० नलिन की इस सरस कृति में 108 ग़ज़लें हैं, जिनमें रचनाकार का दर्शन, चिंतन, मनन उनकी संवेदना एवं अनुभूति की तीव्रता सहज प्रकाशित हुए हैं। वे आस्था के कवि हैं व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श का दर्शन करने के लिए व्याकुल हैं। मानव-कल्याण के लिए वे मूल्य-संरक्षण को सर्वोपरि मानते हैं।

कविता-संग्रह

यहाँ से देखो अपने को : डॉ० मालती शर्मा * क्षितिज प्रकाशन, 16, कोहिनूर प्लाज़ा, एलफिन्स्टन रोड, खड़की, पुणे-411003, पृष्ठ : 104, मूल्य : 120/- मात्र

वरिष्ठ कवयित्री डॉ० मालती शर्मा की इस मोहक कृति में मुख्य रूप से वर्तमान नारी के जीवन-यथार्थ को व्याख्यायित्-रूपायित करने वाली कविताएँ हैं। कवयित्री ने विविध रूपों में नारी के सामाजिक योगदान एवं उसकी महत्ता को चित्रित किया है। साथ ही पुरुष समाज द्वारा उसकी उपेक्षा एवं तिरस्कार से उसके टूटने की सच्चाई एवं सबके रहते हुए भी जीवन की संध्या में उसके एकाकीपन को भी कवयित्री ने मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। भावानुकूल शब्द-चयन, लालित्य, चित्रात्मकता, विचार-सौन्दर्य एवं प्रवाह आदि विशेषताओं से सुशोभित यह कृति अपनी पठनीयता सिद्ध करती है। दीर्घ कविताओं में भी पाठकों को बाँधने-मोहने की अद्‌भुत क्षमता है।

संघर्ष का छोर नहीं : शुभदर्शन * सम्या प्रकाशन, डब्ल्यू एच 44, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110064, पृष्ठ : 140, मूल्य : 250/- मात्र

वरिष्ठ कवि शुभदर्शन की यह कृति एक सच्चे और संवेदनशील मनुष्य के जीवन का प्रतिबिंब है, जो मूल्य-संरक्षण के लिए आस्था को टूटने से बचाने के लिए, विसंगतियों को मिटाने के लिए सतत संघर्षरत है और उसके संघर्ष का क़ोई छोर दृष्टिगत नहीं हो रहा है। कवि की संवेदना की ऊष्मा, उनका युगबोध, उनकी भाषा एवं सहज संप्रेषण की क्षमता प्रशंसनीय हैं। प्रत्येक रचना अर्थगाम्भीर्य से युक्त है। बहन की आँखें, बेजान लोग, इक उम्मीद, रक्तबीज, विराट की तलाश, कमलगट्टा उदास है, संबंधों की तलाश में गाँव लौटूँगा, माँ तुम कहाँ हो, संघर्ष तो करना होगा आदि विशेष रूप से पठनीय हैं।

माँद से बाहर : अभिनव अरुण * अंजुमन प्रकाशन, 942, आर्य कन्या चौराहा, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-211003, पृष्ठ : 160, मूल्य : 140/- मात्र

अभिनव अरुण युगबोध के कवि हैं। उनका सामाजिक सरोकार बहुत व्यापक है। उनकी दृष्टि अपने कालखंड के संपूर्ण परिदृश्य पर है। यद्यपि उनकी मुख्य विधा ग़ज़ल है तथापि अनेक ऐसे ज्वलंत बिंदु हैं, जिनकी अभिव्यक्ति के लिए छंदमुक्त कविता को माध्यम बनाना उन्होंने उचित समझा। इस कृति में अभिनव का विद्रोही कवि मुखर है। सामाजिक विषमता, राजनीतिक अव्यवस्था, पर्यावरण-क्षरण, बाजारवाद, भौतिकता, नारी-दशा, ग्राम्य जीवन की त्रासदी, वर्तमान समय में साहित्य की दशा सहित अनेक ऐसे विषयों को अभिनव ने नए प्रतीकों, नए मुहावरों एवं शिल्पगत सौंदर्य के साथ मार्मिक ढंग से अभिव्यंजित किया है। जलकुंभी, कतार में खड़ा कवि, लाल चूड़ियाँ, खेत, जरूरी है, बोनसाई, हम राक्षस, देहभ्रम, औरत, प्रेम और कविता, रोटियाँ, अथ से इति तक, माँद से बाहर, शब्ददीप, सही समय, मस्तूल, लोकतंत्र की ढिबरी आदि कविताएँ विशेष रूप से पठनीय हैं।

नील गगन के राही : संध्या श्रीवास्तव * नारायण प्रकाशन, के० 65/33, जालपा देवी रोड, कबीरचौरा, वाराणसी, पृष्ठ : 80, मूल्य : 125/- मात्र

संध्या श्रीवास्तव के व्यक्तित्व की सहजता उनकी कविताओं में स्पष्ट परिलक्षित होती है। बिना किसी भूमिका के वे अपने मनोभावों को सहज-सरल ढंग से प्रस्तुत करती हैं। शारदा-स्तुति से प्रारम्भ इस कृति में कवयित्री ने नारी-शोषण, प्रदूषण, राजनीतिक व सामाजिक विचलन एवं देशप्रेम को अभिव्यक्त किया है। रागात्मक कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बेटियाँ, कंत बिन बसंत, गाँधी का देश, इंतज़ार, काशी महिमा, नव बसंत, चाँद आदि कविताएँ प्रभावपूर्ण हैं।

हवा में शब्द (हाइकु-संग्रह) : सारिका मुकेश * एस० कुमार एण्ड कंपनी, 3613, श्याम भवन, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृष्ठ : 112, मूल्य : 200/- मात्र

प्रतिष्ठित कवयित्री सारिका मुकेश की यह कृति इस अर्थ में महत्वपूर्ण हैं कि उन्होंने काव्य की अत्यंत लघु विधा के माध्यम से वर्तमान कालखंड के समग्र यथार्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी लेखनी ने मानव-जीवन के अनेक आयामों का स्पर्श सार्थक ढंग से किया है। वर्तमान जीवन में व्याप्त विसंगतियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि है। संग्रह के अनेक हाइकु मारक क्षमता से युक्त हैं। शीर्षक हाइकु द्रष्टव्य है। यहाँ न कुछ / गूँजते हैं तो सिर्फ़ / हवा में शब्द। कवयित्री का गहन चिंतन, दर्शन एवं जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बड़ी सहजता से संप्रेषित हुए है।

चूँ-चूँ-चूँ (हाइकु-संग्रह) : सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य' * नमन प्रकाशन, 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02, पृष्ठ : 136, मूल्य : 150/- मात्र

हाइकु व्यंजना एवं संकेतों की विधा है। मात्र सत्रह अक्षरों में बड़ी से बड़ी बात कहना अत्यंत कठिन है, किन्तु सूर्य-नारायण गुप्त की इस हाइकु पुस्तक का रसास्वादन कर यह संतोष हुआ कि रचनाकार ने हाइकु की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति करते हुए वर्तमान समय के अनेक मार्मिक चित्र उकेरे हैं- मेरे समीप/दूर तक फैले हैं/पीड़ा के द्वीप/व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र सब पर रचनाकार की सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि है। भाषा का संस्कार भी है।

संघर्षों का ताप : मुक्तिबोध (नामवर सिंह से बातचीत) : महावीर अग्रवाल * श्रीजी प्रकाशन, ए-14, आदर्शनगर, दुर्ग (छत्तीसगढ़), पृष्ठ : 208, मूल्य : 460/- मात्र

क्रांतिधर्मी कवि मुक्तिबोध की जन्मशताब्दी के सुअवसर पर इस पुस्तक का प्रकाश में आना काव्य प्रेमियों के लिए सुखद है। वरिष्ठ कवि, लेखक एवं संपादक डॉ. महावीर अग्रवाल ने इस कृति में शिखर आलोचक नामवीर सिंह से वार्ता के माध्यम से मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं उनके बहुआयामी कृतित्व को इस ढंग से प्रस्तु किया है कि पाठक पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ से अपने को बँधा पाता है, साथ ही जैसे-जैसे मुक्तिबोध के सृजन का प्रकाश प्रस्फुटित होता है आगे के पृष्ठों को पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। लेखकीय प्रयास जहाँ प्रश्न-चयन के लिए प्रशंसनीय है वहीं प्रश्नोत्तर दाता के द्वारा समीचीन उत्तर एवं मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशद व्याख्या श्लाघनीय है।

पत्रिकाएँ

संस्कृति संवाद (त्रैमा.) सं. डॉ. राजेश रावल 'सुशील'
* 100, ग्राम-गोन्दिया, पो. लेकोड़ा, तहसील व जिला- उज्जैन-456006, वार्ता : 09926233477, sanskritisanvad@gmail.com

साहित्यायन (त्रैमा.) सं. डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्ता
* 'उत्थान', म-12, त्रिवटीनाथ बी.डी.ए. कॉलोनी, बरेली-243005, वार्ता : 09568714129

अनुगुंजन (त्रैमा.) सं. डॉ. लवलेश दत्त
* 'शिवछाँह', 165-ब, बुखारपुरा, पुराना शहर, बरेली-243005, वार्ता : 09412345679, sampadakanugunjan@gmail.com

संप्रेषण (त्रैमा.) सं. चंद्रभानु भारद्वाज
* 119, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018
वार्ता : 09414517842, cbhanusam@gmail.com

अक्सर (त्रैमा.) सं. हेतु भारद्वाज
* ए-243, त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018, वार्ता : 09414752039, aksar.tramasik@gmail.com

मोमदीप (त्रैमा.) सं. डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'
* 1436, बी. सरस्वती कॉलोनी, चेरीताल वार्ड, जबलपुर-482002, वार्ता : 09425899232

जन-आकांक्षा (षट्मा.) सं. महेन्द्रनारायण पंकज
* वार्ड नं.-01, मधेपुरा-852113 (बिहार)
वार्ता : 09470289807

समकालीन अभिव्यक्ति (त्रैमा.) सं. उपेन्द्र कुमार मिश्र
* फ्लैट नं.5, तृतीय तल, 984, वार्ड नं.7, महरौली
नई दिल्ली-110030 वार्ता : 09350899583
E-mail : samkaleenabhivyakti@gmail.com

संकल्प रथ (मा.) सं. राम अधीर
* 108/1, शिवाजीनगर, भोपाल-462016
वार्ता : 08518090098

राष्ट्रवाणी (द्वैमा.) सं. सु. मो. शाह
* राष्ट्रभाषा भवन, 387, नारायण पेठ, पुणे-411030
वार्ता : 020-24458947

नए क्षितिज (त्रैमा.) सं. डॉ. सतीशचन्द्र शर्मा 'सुधांशु'
* 'बाबू कुटीर', ब्रह्मपुरी, पिंदारा रोड, बिसौली-243720
वार्ता : 08394034005

अनवरत वाणी (त्रैमा.) सं. कन्हैयालाल गुप्त 'सलिल'
* 29-ए/2, कर्मचारीनगर, कानपुर-208007
वार्ता : 09307455504, klgsalil@gmail.com

ग़ज़ल गरिमा (त्रैमा.) सं. भानुमित्र
* 1-द-8, नन्दन वन, जोधपुर-342008
वार्ता : 09413521354, gajalgarima@yahoo.in

चिंतन दिशा (त्रैमा.) सं. हृदयेश मयंक
* ए-701, आशीर्वाद-1, पूनम सागर काम्प्लेक्स, मीरा रोड (पूर्व), मुम्बई-401107, वार्ता : 09869118707

सोच विचार (मा.) सं. नरेन्द्र नाथ मिश्र
* के. 67/135 (ए.), ईश्वरगंगी, वाराणसी-221001
वार्ता : 0542-2211586

प्रेरणा अंशु (मा.) सं. प्रताप सिंह
* समाजोत्थान संस्थान, वार्ड नं.3, दिनेशपुर, ऊधम सिंह नगर-263160, वार्ता : 09719957008

अविरल (त्रैमा.) सं. संजय कुमार
* चकिया, बाईपास चौराहा, मुगलसराय, चन्दौली-232101
वार्ता : 09125326505, 9335459587

साहित्य समीर दस्तक (मा.) सं. कीर्ति श्रीवास्तव
* 242, सर्वधर्म कॉलोनी, सी.सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-342042
वार्ता : 07415999621

अनन्तिम (त्रैमा.) सं. सतीश गुप्ता
* के. 221, यशोदानगर, कानपुर-208011
वार्ता : 09793547629, 08052111125
E-mail : ababtuimm@gmail.com

शब्द शिल्पियों के आस-पास (मा.) सं. राजुरकर राज
* एच 3, उद्धवदास मेहता परिसर नेहरू नगर, भोपाल-462003
वार्ता : 09425007710, shabdashilpi@yahoo.com

परिन्दे (द्वैमा.) सं. कुसुमलता सिंह
* सी.54 रिट्रीट अपार्टमेन्ट, 20 आई.पी.एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092, वार्ता : 09968288050

गीत प्रिया (त्रैमा.) सं. शिव शंकर यजुर्वेदी
* 517, कटरा चाँद खाँ, बरेली-243005
वार्ता : 09319467998

अदबनामा (त्रैमा.) सं. नासिर अली 'नदीम'
* 219, नारो भास्कर, जालौन-285123 (उ.प्र.)
वार्ता : 09838337386

मेकल सुता (त्रैमा.) सं. कृष्ण स्वरूप शर्मा
* शिवाजी नगर, उपनिवेशिका नर्मदा पुरम्-461001 (म.प्र.)
वार्ता : 09424471249, printersamaya@gmail.com

अदबी उड़ान (त्रैमा.) सं. ख़ुर्शीद शेख 'ख़ुर्शीद'
* पल मोबाइल शॉपी, 08 कियोस्क, पानी टंकी, जलदाय विभाग, हिरण मगरी, सेक्टर-04, उदयपुर, वार्ता : 09782110950
E-mail : khurshidahmedshek45@gmail.com

पहला अंतरा (त्रैमा.) सं. नरेन्द्र दीपक
* 4, पारिका-2, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल-16 (म.प्र.)
वार्ता : 09827201609

समकालीन सांस्कृतिक प्रस्ताव (त्रैमा.) सं. कैलाश बाजपेयी
* 128/862, वाई ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर
वार्ता : 09453286556

दोहे



राजेश जैन 'राही'

छूकर तूने नैन से, किया मुझे मकरंद
प्रेम कहानी ने रचे, प्यारे-प्यारे छंद

तू मन की मंदाकिनी, जीने की तू चाह
सिंचित करता है मुझे, तेरा सरल प्रवाह

लिखूँ चाँद की चाँदनी, कहूँ भोर की धूप
कुदरत की जादूगरी, प्रियतम तेरा रूप

ग़ज़ल थकी, मुक्तक थके, हुए गीत असहाय
रूप तुम्हारा काव्य में, प्रियतम नहीं समाय

शब्द पिरोकर भाव में, गीत बनायें एक
करें कलम से आज हम, भारत का अभिषेक

शब्द डुबोकर प्यार में, गीत बनाऊँ खास
कलम कहीं अटके नहीं, दिलबर दिल के पास

भैया के माथे करे, खुशियों का अभिषेक
मिले ईश आशीष से, बहन सभी को एक

निर्मल गंगा नेह की, बहती है दिन-रात
बहना मंगल कामना, ईश्वर की सौगात

नीर-नदी सा हो प्रिये, अपना भी अनुबंध
सावन का मौसम रहे, सूखों ना तटबंध

तू है कली गुलाब की, मैं प्रातः की धूप
मेरे आते ही खिले, तेरा रूप अनूप

□ आई-1, राजीवनगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
वार्ता : 09425286241

हाइकु

डॉ. गोपालबाबू शर्मा

उन्मन मन,
दहकता है जैसे,
ढाक का वन।

चलता कहाँ,
आदमी शहर में,
दौड़ती ज़्यादा।

गाँव की छाँव,
अब कहाँ नसीब?
दौड़ते पाँव।

ग़ैर या सगा,
आदमी से आदमी
डरने लगा।

ख़ूनी सड़कें,
दहकते मकान,
मासूम चीखें।

गहने जड़े,
कहीं बदन पर,
मात्र चिथड़े।

हाय रे पैसा,
पेट नहीं भरता,
हाज़मा ऐसा।

अँधेरी बस्ती,
बदनुमा चेहरे,
आईना मौन।

कहाँ वे गाँव,
चौपालें-पनघट,
नीम की छाँव।

साँपों को सज़ा?
उदासीन खुद ही,
जनमेजय।

बदनसीबी,
समझी क्या फूलों ने,
कभी काँटों की?

जनतंत्र में,
तंत्र के ठाट-बाट,
जन ही दुःखी।

□ 46, गोपाल विहार, देवरी रोड, आगरा- 282001 (उ.प्र.)
वार्ता : 09259267929

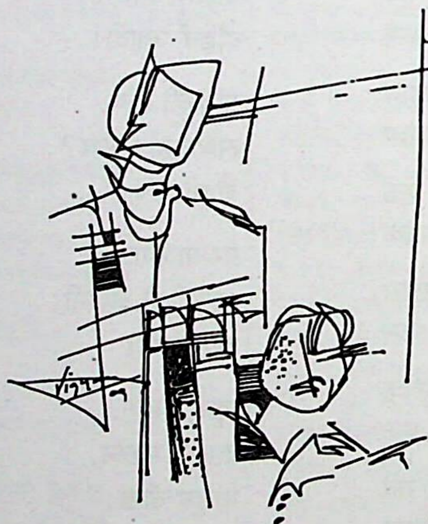
कविताएँ



डॉ. मालती शर्मा

रक्षात्मक युद्ध

तप्त कढ़ाई में
राई और तिल-सा चटकने को
मैनें अपनी उम्र का हर पल
लिख दिया है
एक चौखट
एक छत के नाम,
चली गई हूँ
स्वयं ही
सिंह के जबड़ों में
वनतंत्र से रक्षा के लिए!
इन्हें,
बलिदान, आत्मत्याग
और निडरता की
प्रशस्तियाँ मत दो
कि मैं भी जीने के लिए
रक्षात्मक युद्ध ही लड़ी हूँ,
समझौता जिंदगी नहीं
घसीटन हैं
परंपरा या इतिहास की,
जिंदगी वहीं से शुरू होती है।
जहाँ समझौते खत्म होते हैं।



एक ज्वार में

मैं मछली थी
तुम्हारी आँखों के
अथाह काले समुद्र की
सोन मछली!
सीप, शंख,
चोंचों के प्रवाल द्वीप में
पानी नमकीन था
पर खारे पानी में था
मेरा अपना सलोनापन....!
पहले
तुमने मुझे
एक ज्वार में
आँखों के
बाहर निकाल पटका,
फिर डाल दिया
दुनिया की आँखों के
मीठे पानी के
रंग-बिरंगे ग्लास टैंक में
रख दिया प्रदर्शनी में,
अब शिकायत क्यों करते हो
कि मेरा सलोनापन गायब है!

◻ फ्लैट नं.- 8, मधु अपार्टमेन्ट, 1034/1 मॉडल कॉलोनी, कैनाल रोड, पुणे- 411016 (महाराष्ट्र)
वार्ता : 09423247033



डॉ. हेमन्त कुमार

इन्तज़ार

इस जंगल के
दरख़्तों से
क्यों पूछते हो
इनकी ख़ैरियत।
इनके
दहशतगर्ज चेहरों पर तो
खुद ही चस्पा है
रोज तिल-तिल कर
मरते हुये
अपने जिबह होने के
इन्तजार
की तस्वीरें।

बारूद

हाथ के फ़फ़ोले
सूख गये सब
आंसुओं के तेज़ाब में।
अब तो
आंखें
उगलती हैं आग
और हाथ
सहलाते हैं
हंसिये की पैनी धार को
किसी बलात्कारी को देखकर।



सन्नाटा

कमरे का सन्नाटा
टूटता है कबूतरों की गुटरगूं
और चमगादडड़ों की
फ़ड़फ़डाहट से
कमरे में तरतीब से
रखा हर सामान
बयां करता है
कमरे में कभी आबाद
रहने की कहानियां।

लड़कियां

लड़कियां हर सुबह
रोपती हैं
सपनों के कुछ पौधे
अपनी हथेलियों पर।
चलों सींचो ऊन पौधों को
डालो कुछ खाद और पानी
बनाओ उनके सपनों को
वटवृक्ष
जो दे सके
शीतल छांव
हम सभी को
उन सभी सपने रोपने वाली
लड़कियों के
हर अपनों को।

खुशियां

आँगन के बीच
धूप के छौनों पर
चिड़ियों का फुदकना
जैसे घर की सभी बेटियों का
सपनों के पंखों पर
एक साथ थिरकना।

□ आर एस- 2/108, राज्य सम्पत्ति आवासीय परिसर, सेक्टर-21, इंदिरानगर, लखनऊ- 226016
वार्ता : 09451250698



निशांत

एक छोटे से जीव में

पोष-माघ की सर्द रात में
प्रवासी पक्षियों का एक झुंड
उड़ा जा रहा है
पूर्व की ओर
छोटे से जीव में
कितना जीवट!
कितना उछाह!
कितनी समझ!
कितनी ऊर्जा!
आने-जाने में करते
हज़ारों मील का सफर

हद हो गई

ज़ोर-जबरदस्ती की भी
हद हो गई है
सरेराह चलती लड़की को
उठा ले जाते हैं गुंडे
और बलात्कार के बाद
छोड़ देते हैं
लहूलुहान
ऐसी करतूत
परजीवी लोग करते हैं
लगाम लगनी चाहिए
परजीवीपन पर



घड़ी

घड़ी कहती है
टिक! टिक
कोई उसकी बात
माने क्यूँ
वह खुद तो
टिकती नहीं
एक सेकिंड

बेपरवाही

वह उतना ही हो सकता था मेरा
जितना कि हुआ विरोधियों का
छुटपन से
कोशिश ही नहीं की मैंने
उसे अपनी ओर मोड़ने की

□ वार्ड-6, निकट वन विभाग, पीलीबंगा-335803
जिला- हनुमानगढ़ (राज.)
वार्ता : 08104473197



अंजना वर्मा

लिफ्ट ऊपर चली गयी

ऑपरेशन के लिए उसे पहनाया गया है
एक आसमानी सूट-पैंट और बुश शर्ट
उसने अपने जीवन में साड़ी छोड़कर
नहीं पहना है कोई दूसरा परिधान
इसीलिए यह पहनकर वह
सहज नहीं महसूस कर रही है
एक अजीब संकोच से भर गयी है वह
शरमा रही है अपनी बीमारी में भी

इन अटपटे कपड़ों को देखकर भी,
उसने इन्हें पहनने से इनकार नहीं किया
एक अनुशासित स्कूल के बच्चे की तरह
यूनिफॉर्म पहन कर तैयार हो गयी
पहनना तो है ही- यही सोचकर
उसने अपने आप को कर दिया
अस्पताल के तौर-तरीके के हवाले

वह डॉक्टर को देखकर
औपचारिकता से मुस्कुराती है
पता नहीं क्या छुपा है
उसके झुर्रीदार चेहरे और
कच्चे आम की पतली फाँकों के जैसे
रक्तहीन सफेद ओठों के भीतर
न जाने क्या चल रहा होगा
उसके अंतर में उस समय
जबकि ऑपरेशन के लिए जा रही है वह

अपने अतीत में
उसने कितने बीमार रिश्तेदारों को
दिलासा दिया था
जब वह उन्हें अस्पताल में देखने जाया करती थी
उनसे बातें करती थी
बोलती थी, "आप ठीक हो जाइयेगा
बिल्कुल मत घबराइये"
लेकिन अभी तो वह खुद एक मरीज है
न जाने क्या सोच रही है
या अपने को समझा रही है आप ही

उसे घेरे हुए हैं उसके ढेरों परिजन
पर वह इन सबसे अकेली है
कहीं दूर चिंता के वीराने में भटकती
सबके प्रश्नों का "हाँ-हूँ" में उत्तर देती है

उसका ध्यान सिर्फ एक आदमी पर है,
जो अभी-अभी बात करके
औपचारिकतावश उससे दूर जा बैठा है
उसका पति, उसका हमसफर
वह बहुत कुछ कहना चाहती है
अपने उससे
जो जीवन-भर उसका साथ निभाता आया
पर कह नहीं पाती है
क्या बात करे वयस्क बच्चों के सामने
और बोलेगी भी क्या मुँह से
आँखों से सबकुछ कह देने को बैचेन है
पर इन चार आँखों के दरम्यान
कितनी आकृतियाँ घूम रही हैं

अब वह औरत ऑपरेशन थियेटर में
जाने वाली है
जाने का इंतजार करती हुई
शांत बैनी बैठी है
भीतर से तितली के पंखों की तरह
काँपती हुई

तभी दो सफेदपोश
उसे लिफ्ट मे ले जाने के लिए
आ पहुँचते हैं
वह बहुत घबरायी हुई नहीं दिख रही है
ऐसा नहीं है कि वह बहुत ज्ञानी है
कि जीवन-मृत्यु से असंपृक्त रहे
या बहुत बहादुर और निडर है
कि मौत से डरे नहीं
ऐसा कुछ नहीं है
बल्कि इसके विपरीत
हवा मिठाई जैसा कलेजा है उसका

उसके बच्चे जब पड़ते थे बीमार
तो वह
धूप में पड़े हुए साग की तरह
कुम्हला जाती थी
बच्चे को चिड़िया की तरह
घेरकर बैठी रहती थी
घबराकर डॉक्टर से तरह-तरह के प्रश्न
पूछती थी
बेवकूफी-भरे भी हो जाते थे उसके सवाल
घबराहट और चिन्ता से

पर अभी तो उसने
अपने जीवन का दीया दे दिया है
काँपते हुए
काल की शून्य हथेलियों में
जैसे पूछती हो
"बुझाओगे य़ा जलने दोगे?"
अपने कई देवता-पितरों को वह
गुहरा रही होगी आदतन
जैसे बच्चों कें बीमार पड़ने पर
गुहराने लगती थी

जैसे ही दो सफेदपोश
उसे लिफ्ट में ले जाने के लिए तत्पर होते हैं
वह उन्हें रुकने का संकेत देती है
इशारे से बुलाती है अपनी बेटियों को
"सुनो, मैं रहूँ न रहूँ
अपने पापा का ख्याल रखना"
यह कहकर वह अपने को कर देती है
उन दोनों के हवाले
उसकी व्हील चेयर
लिफ्ट के अन्दर समा जाती है
लिफ्ट का दरवाजा बन्द हो जाता है
'घूँ ऽऽऽ' करती हुई
लिफ्ट ऊपर चली जाती है

□ कृष्णा टोला, ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर-842003
वार्ता : 09572991995



संतोष सुपेकर

गिरेबाँ

अपनों से हमेशा उम्मीद रखता है आदमी
अपनों की उम्मीद पर ही सदा जीता है आदमी।
अपनों की अपेक्षा में, कल्पना के पर-
फैलाता है आदमी।
अपनों की, अपनों से अनुराग की
आशा में सदा खुश होता है, आदमी।
पर इसके विपरीत,
ठीक विपरीत
हमेशा अपनों से ही धोखा खाता है आदमी।
अपनों से अपेक्षाओं को पूरा न पाकर-
सदा रोता है आदमी
अपनों का धोखा सबसे ज्यादा सालता है, उसे
अपनों के धोखे में, परायों से प्रीत पालता है आदमी।
पर ये सब इसलिए भी तो होता है
क्योंकि 'खुद'
अपनों का भी कभी कहाँ हुआ है आदमी।

पर

आसमाँ में उड़ने की ख्याहिशें हैं मेरी
पर जमीन से रिश्तों में तल्खी
डरा देती है मुझे
मंजिलों के बाद मंजिलें पाना चाहता हूँ मैं
पर शॉर्टकट की चिकनी सीढ़ी
गिरा देती है मुझे
वक्त का पैमाना, घड़ी ही माना करता था कभी
पर वक्त, बालों की सफेदी भी
दिखा देती है मुझे
मिलन की ख्याहिशें भीड़ बनकर थीं आसपास
पर तुम्हारी बेवजह बेरूखी
आँसू गैस सा छितरा देती है मुझे।।

◻ 31, सुदामानगर, उज्जैन (म.प्र.), वार्ता : 09424816096



राजीव कुमार त्रिगर्ती

अभी समय है

हो इक दिन ऐसा कि
इस नाले को बहने के लिए मिले खुली जगह
खुलकर चढ़ सके दोनों पाटों पर
ले सके मर्ज़ी की गति।
हवा बह सके पेड़ों और सिर्फ़ पेड़ों के बीच
तरह-तरह के परागों से लदी हुई
भरपूर सुगंधित।
इक दिन आए ऐसा
कि हम अपने से हट कर सोचें
पेड़-जंगल कटान पर
पत्थर-बालू खनन पर
नदी-नहर औद्योगिक अवकरों के बारे में
बैंगन-लौकी, दूध-तेल
जहरीले टीकों घटिया मिलावट के बारे में
यह भी तो सोचें हम
कि यही सोचना हमारे हित में है
ज़िंदगी के बारे में सोचने से
हम बच सकते हैं
एक घटिया इतिहास बनने से
अगली सभ्यताओं के सामने।

भेड़िये

टपकाते हुए जीभ के बीच से लार
बरसाते हुए आँखों से भयानक आग
दौड़ते हैं
दौड़ते हैं बस
सब कुछ देखते हुए भी
एक अंधी दौड़
आँतों की होड़ पर
बरसाते हैं कहर
किसी भी निरीह जानवर पर
बहुत खूँखार हैं भेड़िये
इतने खूँखार कि मर गए हैं अन्दर से, लेकिन
एक भेड़िये का भेड़ बन जाना, वैसा ही है
जैसे एक गुमनाम मौत मर जाना।

◻ गाँव लंघू, डाकघर गाँधीग्राम, वाया बैजनाथ
जिला- काँगड़ा-176125 (हि०प्र०)
वार्ता : 09418193024



मंजुला उपाध्याय 'मंजुल'

चाँद और मैं

बैठ छप्पर पर मुझे
झाँकता है चाँद
प्यारा है बहुत
बड़ी प्यारी है खुली, चंदन-सनी मुस्कान उसकी
कभी मेरी हथेली पर
कभी गालों पर
कभी चुपके खेलने लगता है बालों पर
कभी चुंबन
कभी बिंदी
कभी थिरकन
और बाँहों में
अभी लो जग उठी धड़कन
कि अपने वक्ष से मैं बाँध लूँ उसको
मगर खंजन-सा फुदक कर
भाग गया क्षण में।
सोंचती मैं रह गई टूटे हुए मन से-
चाँद रे, मुझको चिढ़ाता है
दूर हटकर, मुझी पर तू
मुस्कुराता है
इस तरह का पल, पलक में बीत जाता है।
सोंचती हूँ
चाँद, हाँ, यह चाँद शीतल है बहुत
मन भींग जाता है,
गान मेरा,
ताप धो लेता, नहाता है....
वह नहीं, तब मैं स्वयं बेसुध हुई चुपचाप
देखती उसको, मिटा लेती हदय का ताप!

धरातल

पलती रही
ढलती रही
सदियों से
तुम्हारी कैद बस छलती रही
दूर, और दूर
होता ही गया
मेरा आकाश
तड़पते रहे पंख
और तुम
करते रहे निर्गम उपहास।
नाचती रही कठपुतली-सी
तुम्हारे इशारों पर
और देखती ही रह गई मैं
झूठ में सच
और हो गई तुम्हारी निगाह में
पूरी की पूरी झूठ।
मगर, अब और नहीं
बस समेटो अपना जाल
अपना फरेब
अपना दलदल
क्योंकि अब
पा लिया है मैने अपना धरातल।

□ सम्राट चौक, पूर्णिया- 854301 (बिहार)
वार्ता : 09431865979



डॉ. मीरा श्रीवास्तव

हवा तो हवा है

तेज चलती यह हवा
बिन लाग लपेट,
बिना रोक-टोक के,
बवंडर-सी उड़ी जा रही;
शुक्र है, गाहे-बगाहे
बरसती बूँदों ने, दबा रखा है
अपने नीचे;
वरना ये खेत-खलिहान,
बाग और बागान, बालू से तोप दिये जाते;
माटी से लीप दिये जाते।
खिड़कियों की खड़्-खड़्,
टूटते शीशे की चट्-चट्
तेज हो जाती है और भी तब
जब मेरे कदमों को भाँपते ही
क्लास के बच्चे शोर-गुल को
तब्दील कर लेते हैं पल भर में
दम साधी चुप्पी में।
ढीठ हवा ठेलती है, जैसे बच्चों की चुप्पी
उसे नागवार-सी लगती हो।
अपनी उठा-पटक से चुनौती दे रही हो
गोया इस चुप्पी को।
हवा तो हवा है, कभी गुजर जाती है
बिन कहे, बिन सुने, बिन दिखे भी,
और वही जब कहने पर आती है तब
न कोई ओर न कोई छोर उसकी कहानी का।
गर अपने को दिखाने पर उतर आए तो
डोल उठती है जमीं, काँप उठता है आसमान,
थर्रा उठता है आदमी।
हवा तो हवा है, छुए तो गुदगुदा दे,
दिखे तो सुगबुगा दे,
हवा तो हवा है।

अनदेखा डर

इस साल-
माँ से बात हुई दूसरी बार,
आशीष लिया था पहली बार,
साल के पहले दिन-
अचल सौभाग्य का,
धन-धान्य का
स्वास्थ्य, दीर्घायु का,
दुलराते से स्वर में कहा था माँ ने
आना तो मिलना जरूर!
हँसी थी मैं, माँ! अब मेरी बहू है,
मेरा जामाता है,
माँ ने पलटते ही कहाँ था-
फिर भी तुम तो मेरी बेटी ही हो,
और मैं तुम्हारी माँ हूँ।
हाँ माँ, जीवन के यही सच तो
जोड़े रखते हैं एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से
माँ तुम्हें लगता है इतने सालों मैंने जो
बेटी से माँ बनने का सफर तय किया,
इसका एक दिन भी तुम्हारी यादो से खाली रहा होगा?
रोज ही बतियाती हूँ तुमसे
बिना तुम्हें सुनाये।
जब भी कोई वजह मिलती है
हँसने की, तुम्हें बिन बताये
उस हँसी की मिठास घोल देती हूँ
तुम्हारे कानों में चुपचाप।
भर देती हूँ आँखों को
आँसुओं के नमकीन पानी से कोई वजह,
नमक की कन्री-सी रख देती हूँ
तुम्हारी जीभ पर चुपचाप।
हाँफती, टूटती फोन पर आती
तुम्हारी आवाज से मैं डर गई हूँ,
सहम गया है एकबारगी मेरा मन,
क्यों ऐसा लगने लगा है मुझे
पल-छिन मुझे सँभारने वाले हाथ
अब होते जा रहे मुझसे
दूर-दूर-दूर.........

□ द्वारा- प्रो० सुरेश श्रीवास्तव, राजेन्द्रनगर, आरा-802301 (भोजपुर) बिहार, वार्ता : 09576250555, 09612309770



फूलचंद गुप्ता

चावल के दाने

चावल के सफ़ेद दाने
काली मिट्टी में छिपे होते हैं
काले-काले हाथ तलाशकर
बाहर निकाल लाते हैं उन्हें
फिर अपनी काली-काली पीठ पर ढोकर
उन्हें कोठारों तक पहुँचाते हैं
काफी मशक्कत के बाद
थाली तक पहुँचते हैं
चावल के सफ़ेद दाने
काली रात के बाद
सुबह की तरह सफ़ेद दिखाई देते।

पतंगें और खुशियाँ

पतंगें झूठी होती हैं
वे बाज़ार से आती हैं और
बहकाकर ले जाती हैं
अनंत आकाश में
बच्चों को
खुशियों का ग़लत पता बताकर।
बच्चे उनके पीछे-पीछे उड़ते
जा पहुँचते हैं
खुशियों की तलाश में!
अचानक पतंगें
वापस चली आती हैं
ज़मीन पर।
मायूस बच्चे अकेले
अनंत आकाश में
ढूँढते रहते हैं
खुशियों का ठिकाना
हाथों में ग़लत पता लिए!

❑ बी/7, आनंद बंगला, गायत्री मंदिर रोड
महावीर नगर, हिम्मतनगर-383001 (गुजरात)
वार्ता : 09426379499



किरन अरोड़ा 'कीर्ति'

साहब का खाना

ट्रे में सज कर आया
साहब का खाना
उसे देख कर कभी
जी मत ललचाना,
हवा चले और
ट्रे के कोने से पर्दा उठे
यह भी कामना मत कर मूर्ख,
क्योंकि
ये साहब लोग
न जाने क्या खाते हैं
जो निवृत्ति के लिए
ताले लगे टॉयलेटों में
जाते हैं!

सिटिंग अरेंजमेंट

दफ्तर का
सिटिंग अरेंजमेंट
मैंनेजमेंट ने कुछ यूँ किया
कि
कुर्सियाँ तो
पास आ गईं,
पर,
स्टाफ के बीच की
दूरियाँ और
बढ़ गईं।

❑ मालवीय नगर, नई दिल्ली-17
वार्ता : 09999388959



कृष्ण कुमार यादव

शब्दों की गति

कागज पर लिखे शब्द
कितने स्थिर से दिखते हैं
आड़ी-तिरछी लाइनों के बीच
सकुचाये-शर्माये से बैठे।
पर शब्द की नियति
स्थिरता में नहीं है
उसकी गति में है
और जीवंतता में है।
जीवंत होते शब्द
रचते हैं एक इतिहास
उनका भी और हमारा भी
आज का भी और कल का भी
सभ्यता व संस्कृति की परछाइयों को
अपने में समेटते शब्द
सहते हैं क्रूर नियति को भी
खाक कर दिया जाता है उन्हें
पर, प्रकृति की नियत
कभी खत्म नहीं होते शब्द
खत्म होवे हैं दस्तावेज
और उनकी सूखती स्याहियाँ
पर शब्द अभी-भी जीवंत खड़े हैं।

❑ निदेशक, डाक सेवाएँ, राजस्थान-पश्चिमी क्षेत्र,
जोधपुर-342001 (राज.)
वार्ता : 09413666599



रविप्रकाश वोहरा

नई दिशा

काँच का था दिल मेरा,
ग़लती की पत्थर से लगाने की,
पत्थर का नहीं कसूर,
शीशे की फ़ितरत है टूट जाने की।

समझा था उसे फूल,
मगर वह तो पत्थर निकला,
अपनी ही थी भूल,
किसी से क्या शिकवा, कैसा गिला?

जब टूट ही गया दिल,
क्या बात है रही पछताने की?
चलो ढूँढें कोई और दर,
कोशिश करें नया घर बनाने की।

❑ द्वारा- मे. प्रेस्टिज इलेक्ट्रॉनिक्स, 23/62
तिलक मैदान रोड, मुजफ्फरपुर-842001
वार्ता : 09771397721



पुरूषोत्तम व्यास

एक खुला आसमान

संघर्ष अपने आप से
कभी इधर....
कभी उधर...
थक जाता हूँ....
मैं चाहता
एक ठहराव
शांति.....
चुगना चाहता शब्दों को....
लिखना चाहता कविता
जिसमें
उम्मीद...
खुशबू.... इतनी आत्मीयता
जिसमें डर न हो बिछड़ने का
एक खुला आसमान...
साँसें लूँ जी भर के....
जी भर के....।

भटकते रहना

भटकते रहते हम
हर सुख-सुविधा के लिए...
भटकते रहते हम
इसके- उसके प्यार के लिए...
भटकते रहते हम
एक रोटी के लिए...
भटकते रहते हम
अपनी अनंत इच्छाओं के लिए
जिसका अंत कभी नहीं होता...
हम बैठते नही
एक जगह और सोचा नहीं करते
ईश्वर ने यह अमूल्य जीवन
किस लिए दिया...
भटकते रहते हम...।

□ द्वारा- घनश्याम व्यास, एल.जी.63, नानक बगीचे के पास,
शक्तिनगर कॉलोनी, नागपुर (महाराष्ट्र)
वार्ता : 08087452426



केदारनाथ 'सविता'

पीपल की छाँव

स्मृतियों का पीपल देता है छाँव
मौसम की तरुणाई को,
कितने दिन बीते, कितनी रातें बलि चढ़ीं
चाहत की अँगड़ाई को,

नभ में मन बादल बन डोल रहा
उर चातक बन विरह की गाँठ खोल रहा

आँखों ने जो देखा मन नहीं है तैयार
देने सफाई को,
बात-बात में बात बढ़ी आँसू बहे हजार,
किसको किससे क्या मिला
शिकायत करने वाले की ही शिकायत है हजार,
बहुत समझाया बहुतेरे रिश्तों को मनाया
मगर न बंद करना चाहते वे इस लड़ाई को।

□ पुलिस चौकी रोड, लालडिग्गी, सिंहगढ़ वाली गली
(चिकाने टोला), मीरजापुर - 231001 (उ०प्र०)
वार्ता : 09935685068



मोतीप्रसाद साहू

धरती-अंबर

ओस नहीं आँसू है मानों
अंबर ने ढारे जो 'भू' पर
चमक रहे हैं मोती बनकर
तृण-ऊपर अरुणोदय पाकर

मोती लुट जायेंगे दिन में
समा लिया धरती ने उर में
अंबर भी स्तब्ध रह गया
रवि आ धमका उभय मध्य में



पुनः निशा आयेगी लेकर
आस मिलन की होगी पूरी
जाने कितनी गईं निशाएँ
रही चाह भी आज अधूरी

नैसर्गिक यह चक्र चल रहा
रुका नहीं है कोई कार्य
बसर कर रही उभय मध्य में
सृष्टि सनातन बारंबार

धरतीं-अंबर मिलन शेष है
मिलवायेंगे उषा-हिमेश
सृजन करेंगे मिलकर दोनों
नई सुबह का नया दिनेश

□ प्रवक्ता- राजकीय इण्टर कॉलेज, हवाल बाग,
अल्मोड़ा-263636 (उत्तराखंड)
वार्ता : 09411703669



मदन देवड़ा

दर्द

दर्द!
क्या जलन है,
रुदन है, घुटन है
नहीं.......नहीं.....
वह तो संवेग है-
अनुभूतियों की-
पुलकन का!
और.....
जब भी मैं!
इसमें डूबकर
ढूँढता हूँ स्वयं को
तब-
अनुभूति होती है
एक अलौकिक सुख-बोध की
तब, मेरी प्रज्ञाएँ।
पूछती हैं मुझसे-
दर्द! क्या सचमुच ही
रुदन है, घुटन है, जलन है।

सवेरा

जाने क्यों!
जाना-अजाना
लग रहा है।
अब-देखता हूँ सिर्फ,
बूढ़ी रात के
छितराए मेघों में,
छिपा चाँद!
भ्रम की फिसलती
अधेड़ चाँदनी के
सफेद बालों को
उखाड़ रहा है।

□ मालीखेड़ी मार्ग (ऑफिसर्स कॉलोनी के निकट)
तराना - 456665, जिला- उज्जैन (म.प्र.)
वार्ता : 09752045248, 09758045248



ज्योति पांडेय

धरती और आकाश

धरती के प्यार में, उससे मिलने की आस में,
बन के आकाश के आँसू वर्षा,
बताने आयी धरती को आकाश की हालत
तड़प में धरती के रो रहा है आकाश
सुन लो हमारे द्वारा उसके दिल की हालत,
हमने तो समझाया बहुत, कि नामुमकिन है,
धरती से मिलने की आस।
फिर भी जी रहा है, वो इस विश्वास में
कभी तो ज़िंदगी साथ बितायेंगे तेरे साथ
पागल है जो प्यार कर बैठा,
तो यह भी समझ न सका,
मिलता नहीं कभी नीचे का प्यार ऊपर वाले को,
चाहे मर मिटे उसकी याद में वो,
तब धरती ने कहा वर्षा की बूँदों से
शुक्रिया है तुम्हारा
मगर जाते वक्त मेरा संदेश ले जाना,
कहना आकाश से मैं भी तड़पती हूँ,
बस मिलने की दुआ दिन-रात करती हूँ,
लेकिन तुम ये भूल न जाना,
दुनिया में आज भी प्यार अमर है हमारा
हर दिल की आवाज है ये,
है सच्चे प्यार की परिभाषा,
हम दूर रहकर भी देखते हैं एक-दूसरे को,
मगर कर्त्तव्य तो निभाना है।
माँ बनकर मैं पालूँगी धरतीवासी को गोद में,
पिता बनकर तुम हरा-भरा करते रहना सदा इसे।
क्योंकि धरती का शृंगार तो आकाश से आयी बूँदों से है।

❑ के० 47/208, कतुआपुरा, विश्वेश्वरगंज
वाराणसी-221001, वार्ता : 09838993139



संध्या श्रीवास्तव

चल पंछी अब बस उड़ चल

दूर देश का गामी बन
चल पंछी अब बस उड़ चल।
अब तक जितनी भी भरी उड़ानें
वो सब थीं दूसरों की खातिर
कुछ अपनी खातिर भी तो कर
कुछ मत सोच विचार भी मत कर
पंख पसार, अकेले उड़
पकड़ मत साथ, अकेले उड़
मंजिल की तू कुछ मत सोच
दूर गगन का राही बन
उड़ता चल बस उड़ता चल
हर क्षण हर पल उड़ता चल
अब तक की जो भी थकान है
उसको पीछे करता चल
इस धरती पर तूने अब तक
जो घरौंदे सजाये
उनकी यादों से मुक्त हो
रिश्ते-नाते औ' धन-दौलत
भेद भरे सब तेरे मन में
तू भेदभाव के जंगल से निकल
अपनी मंजिल पर उड़ता चल
चल पंछी अब बस उड़ चल।

❑ प्लॉट नं.-4, डॉ. भगवानदास कॉलोनी, सिगरा,
वाराणसी (उ.प्र.), वार्ता : 09838527352



श्रुति चतुर्वेदी

पुस्तक

स्वाध्याय ज़रूरी है
प्रत्येक व्यक्ति के लिए
प्रत्येक समस्या का समाधान है
पुस्तकों में
जीवन में उत्थान के लिए
पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है
अध्ययनशील
प्रगति-पथ पर
निरंतर बढ़ता जाता है
ऊँचा और ऊँचा
स्थान पाता है।
ईश्वर का
अनुपम
वरदान हैं पुस्तकें।

❑ द्वारा- कलाधर प्रसाद फार्मा एजेन्सी
सुड़िया, बुलानाला, वाराणसी
वार्ता : 09235888037

प्रतिबिम्ब

☐ वर्ष के प्रथम माह में श्रीमठ के तत्वावधान में आयोजित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयंती महोत्सव के सुअवसर पर भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ मनीषी साहित्यकार **प्रो. पूर्णमासी राय** को **जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पुरस्कार** स्वरूप स्वामी श्री रामनरेशाचार्य द्वारा एक लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान कर अलंकृत किया गया। वाराणसी स्थित श्रीविहारम् में आयोजित इस सम्मान समारोह में काशी के प्रबुद्ध विद्वानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और संगोष्ठी को संबोधित किया, जिनमें प्रो. रामचन्द्र पांडेय, प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रो. महेन्द्र नाथ राय, प्रो. चन्द्रमा पांडेय, डॉ. हरेन्द्र राय एवं अमूल्य शर्मा आदि प्रमुख रहे। इस अवसर पर अवन्तिका सिंह रचित 'हिन्दी गद्य साहित्य में बौद्ध संस्कृति' तथा डॉ. महेन्द्र नाथ राय द्वारा सम्पादित 'पुराण पुरुष गंगासागर राय स्मृति ग्रंथ' का लोकार्पण भी हुआ। स्वामी श्री रामनरेशाचार्यजी के मुख्य सान्निध्य में सम्पन्न इस आयोजन का आरंभ पं. वल्लभ पाठक एवं पं. उपेन्द्र मिश्र के स्वस्तिवाचन तथा डॉ. उदय प्रताप सिंह के स्वागत उद्‌बोधन से हुआ, जिसका सफल संचालन प्रो. अवधेश प्रधान ने किया।

☐ काशी की चिरपरिचित साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था **'नवरंग'** द्वारा 9 अप्रैल 2017 को स्थानीय कन्हैया लाल गुप्त स्मृति भवन में लेखिका एवं कवयित्री **डॉ. मुक्ता** को **श्रीमती श्यामा देवी बेरी स्मृति सम्मान** से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पांडेय एवं डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न इस समारोह में विधि संकाय (का०हि०वि०वि०) के से०नि० प्रो. सुशील कुमार वर्मा ने श्यामा देवी जी के जीवनवृत्त का वाचन किया। तदुपरांत 'नवरंग' के अध्यक्ष एवं स्मृतिशेष श्यामा देवी बेरी के यशस्वी सुपुत्र श्री राजेन्द्र बेरी ने मुख्य अतिथि की अगुवाई में डॉ. मुक्ता को उत्तरीय, प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न सहित इक्यावन सौ रुपये की नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया। सुश्री प्रतिमा सिन्हा के संचालन में संपन्न इस आयोजन का आरंभ फैजाबाद से पधारी लोकगायिका सुश्री वन्दना मिश्रा की सरस्वती वंदना एवं श्रीमती किरन बेरी के स्वागत उद्‌बोधन से हुआ, जिसमें काशी महानगर के बहुतायत लेखक, कवि एवं विद्वत्जनों ने अपनी सहभागिता प्रदान की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं आयोजन अध्यक्ष ने समारोह को संबोधित करते हुए नारी के सम्मान पर विशेष बल दिया और कहा कि नारी का सम्मान ही संस्कृति का सम्मान है। जिससे समाज का उत्थान होता है। कार्यक्रम का समापन श्री राजेन्द्र बेरी के धन्यवाद प्रकाश से हुआ।

☐ भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा संचालित प्रतिष्ठित **ज्ञानपीठ पुरस्कार** इस वर्ष पश्चिम बंगाल के ख्यातिलब्ध कवि **श्री शंख घोष** को नई दिल्ली में विगत अप्रैल 2017 को राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने ससमारोह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

☐ साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा विगत फरवरी 2017 को 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को उनकी महत्वपूर्ण कृति के लिए अकादमी पुरस्कार 2016 प्रदान किया गया। हिन्दी में प्रसिद्ध लेखिका **नासिरा शर्मा** को उनकी कृति **'पारिजात'** के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार-2016 प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उपस्थित अन्य विशिष्ट लेखकों को भी सम्मान प्रदान करते हुए अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आज साहित्यकारों को सामाजिक व व्यवहारिक क्षेत्र में नित्य बढ़ती नई चुनौतियों व कुरीतियों के संदर्भ में निष्पक्षता व निर्भीकता से कलम उठानी चाहिए। आज का साहित्य व सामाजिक जगत् विद्वानों से यही अपेक्षा करता है।

☐ भावनगर विश्वविद्यालय, गुजरात में हिन्दी विभाग के से.नि. अध्यक्ष मूर्धन्य साहित्यकार व 45 से अधिक स्तरीय ग्रंथों के लेखक **डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया** को संस्कारधानी, जबलपुर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'कादंबरी' ने वर्ष 2016 का सर्वोच्च **सम्मान स्वामी प्रज्ञानन्द प्रज्ञाभूषण सम्मान** से नवाजा। सम्मानस्वरूप उन्हें मोतियों का हार, प्रशस्ति-पत्र एवं 21 हज़ार रुपये की मानराशि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्र एवं विद्वान समालोचक आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी ने प्रदान की। इस अवसर पर डॉ. कथूरिया का परिचय देते हुए संस्था के

अध्यक्ष डॉ. गार्गी शरण मिश्र 'मराल' ने कहा कि 45 वर्षों तक अध्यापन से जुड़े एवं कुशल प्रशासक रहे डॉ. कथूरिया 80 से अधिक सम्मानों व पुरस्कारों से विभूषित हो चुके हैं तथा निर्भीक पत्रकार, समालोचक, वैदिक चिंतक, सहृदय कवि एवं भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ के रूप में देश-देशांतर में ख्यातिलब्ध हैं।

❑ साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की सामान्य परिषद् की बैठक के निर्णयानुसार हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक **नामवर सिंह** को अकादमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा उत्तरीय एवं ताम्रफलक देकर साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान के रूप में अकादमी की **महत्तर सदस्यता** प्रदान की गई है। का०हि०वि०वि० से पी एच-डी की उपाधि प्राप्त डॉ. नामवर सिहं एक लंबे अरसे से साहित्य सेवा में तल्लीन हैं और लेखक, आलोचक तथा हिन्दीसेवी के रूप में ख्यातिलब्ध विद्वान् हैं।

❑ भाषाविज्ञान के प्रख्यात विद्वान् पुणे (महाराष्ट्र) वासी **डॉ. दामोदर खड़के** द्वारा मराठी से हिन्दी में अनूदित पुस्तक **'बारोमास'** का साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने वर्ष 2015 के लिए अनुवाद पुरस्कार हेतु चयन किया है। डॉ. खड़के की 45 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें अनूदित कृतियाँ भी सम्मिलित हैं। पूर्व में भी आपको अनेक सम्मान व पुरस्कार से अलंकृत किया गया है, जिनमें केंद्रीय हिन्दी संस्थान का 'गंगा शरण सिंह पुरस्कार', महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का 'मुक्तिबोध सम्मान', उ.प्र. हिंदी संस्थान का 'सौहार्द्र सम्मान', केंद्रीय हिंदी निदेशालय का 'राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार', म०प्र० साहित्य परिषद् का 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार', महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का 'हिंदी सेवा सम्मान' विशेष उल्लेखनीय है।

❑ वरिष्ठ कवि एवं लेखक कानपुरवासी **श्री हरीलाल 'मिलन'** को उनकी सतत साहित्य-साधना एवं हिंदी की राश्वत सेवा हेतु विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद ने साहित्य मेला आयोजन के सुअवसर पर **'हिंदी सेवी सम्मान'** से नवाजा, जिसकी अध्यक्षता उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के पूर्व न्यायाधीश माननीय सुधीर नारायण ने की तथा मुख्य अतिथि का पद इलाहाबाद के एस.एस.पी. श्री जुगुलकिशोर तिवारी ने सुशोभित किया। विशिष्ट अतिथि स्वरूप श्री अशोक नाथ, रीडर आई.ए.एस.ई., इलाहाबाद एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री बुद्धिसेन शर्मा ने मंच का मान बढ़ाया। अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को कई पुस्तकें देने वाले यशस्वी गीत, ग़ज़ल व उपन्यासकार श्री मिलन को वर्ष 2012 एवं 2014 में भी विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर का विशिष्ट सम्मान प्राप्त हो चुका है और इस वर्ष उपन्यास 'प्रिया' पर उन्हें 'भारत गौरव' सम्मानोपाधि प्रदान की गई है। इसके पूर्व कोलकाता की राष्ट्रीय संस्था 'परिवार मिलन' का प्रतिष्ठित 'काव्य वीणा सम्मान 2016' विगत हिंदी दिवस के अवसर पर भारतीय भाषा परिषद् के सभागार में आयोजित समारोह में उनके छंदबद्ध खंड-काव्य 'परित्यक्ता' को प्राप्त हुआ था, जिसमें प्रतीक चिह्न, उत्तरीयसहित इक्यावन हजार की सम्मानित राशि से उन्हें विभूषित किया गया था।

❑ सुप्रसिद्ध लेखिका एवं कवयित्री पुणे निवासी 85 वर्षीय **डॉ. मालती शर्मा** को उनके लोक साहित्यिक ग्रंथ **'परम्परा का लोक'** के लिए विगत माह पूर्व महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी द्वारा **'फणीश्वरनाथ रेणु' पुरस्कार-2016** प्रदान कर सम्मानित किया गया।

❑ उपन्यासकार एवं 'समयांतर' पत्रिका के संपादक **श्री पंकज विष्ट** को 9वाँ **'अध्योध्याप्रसाद ख़त्री स्मृति सम्मान'** प्राप्त हुआ। मुजफ्फरपुर के क्लब रोड स्थित एक सभागार में आयोजित समारोह में विष्ट को प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति-पत्र तथा ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये की सम्मानित राशि का चेक प्रदान करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. वीरभारत तलवार सहित मंचासीन डॉ. रवीन्द्र कुमार रवि, वीरेन नन्दा, रामाज्ञा शशिधर, राजेश कुमार एवं सीमा नन्दा ने संयुक्त रुप से शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर भारी संख्या में नगर के साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों ने अपनी सहभागिता प्रदान की।

□ हिंदी व अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक पद्मश्री **डॉ. श्याम सिंह 'शशि'** को विगत 19 मार्च 2017 को हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के शिलांग में सम्पन्न 69वें अधिवेशन में सम्मेलन की सर्वोच्च उपाधि **'साहित्य वाचस्पति'** से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर साहित्यकार **प्रो. नन्दकिशोर पांडेय** एवं **श्री गोविन्द मिश्र** को भी सम्मान से नवाजा गया।

□ प्रख्यात साहित्यकार क़वि **डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल** को उनके नवगीत-संग्रह **'खोई-खोई गंध'** के लिए सुधा शर्मा स्मृति **'हिंदी विभूषण श्री सम्मान'** के.बी. हिन्दी साहित्य समिति के तत्वावधान में सुदामा देवी इंटर कॉलेज, चंदौसी में आयोजित एक भव्य समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' ने प्रदान किया। सम्मान स्वरूप में डॉ. अग्रवाल को प्रशस्त्रि-पत्र, शॉल, स्मृति-चिह्न एवं मानराशि से अलंकृत किया गया।

□ वाराणसी महानगर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'काव्यायनी' एवं आध्यात्मिक, साहित्यिक व सामाजिक संस्था 'शंखनाद' के संयुक्त तत्वावधान में विगत 14 अप्रैल को दिल्ली से पधारे प्रसिद्ध ग़ज़लकार **डॉ. दरवेश भारती** को **'साहित्य साधक' सम्मान** एवं लुधियाना से पधारे चर्चित ग़ज़लकार **दानिश भारती** को **'साहित्य श्री' सम्मान** से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित विद्वानों ने दोनों सम्मानित साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला, तदोपरांत "हिंदी ग़ज़ल : आलोचना के बहाने" विषयक परिचर्चा आयोजित की गई, जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात गीतकार पं. हरिराम द्विवेदी ने हिंदी ग़ज़ल के प्रति आलोचकों की उदासीनता को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि डॉ. दरवेश भारती ने हिंदी ग़ज़ल में वर्तमान कालखंड की अभिव्यंजना की सराहना की एवं आलोचकों का ध्यान ग़ज़ल की आलोचना पर केंद्रित करने की बात कही। चर्चित ग़ज़लकार प्रो. वशिष्ठ अनूप ने हिन्दी ग़ज़लों में सामाजिक चेतना एवं युगबोध को उल्लिखित करते हुए समालोचना की अनिवार्यता पर बल दिया। डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र ने वर्तमान साहित्य में ग़ज़ल की महत्ता एवं उसकी भूमिका को व्याख्यायित किया। वरिष्ठ गीतकार एवं अपर आयुक्त, वाराणसी मण्डल श्री ओम धीरज ने कहा कि समकालीन ग़ज़ल समय के साथ चल रही है अतः उसकी समीक्षा होनी चाहिए। पूर्व न्यायाधीश एवं वरिष्ठ ग़ज़लकार डॉ. चंद्रभाल सुकुमार ने कहा कि हिंदी ग़ज़ल की आलोचना के लिए विद्वान् समालोचकों को आगे आना चाहिए। दानिश भारती एवं मऊ से पधारे ख्यात ग़ज़लकार डॉ. मधुर नज़्मी ने भी हिन्दी ग़ज़ल की आलोचना संदर्भित आवश्यकता पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ ग़ज़लकार परमानन्द आनन्द ने हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में काशी के योगदान की चर्चा की। इस अवसर पर सम्मानित रचनाकारों ने अपनी चुनिंदा रचनाओं का पाठ भी किया। स्थानीय पराड़कर स्मृति भवन के गर्दे सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारम्भ कु. समृद्धि गुप्ता द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। अतिथियों का स्वागत चर्चित ग़ज़लकार एवं वरिष्ठ उद्घोषक, आकाशवाणी श्री अभिनव अरुण ने किया। गौतम अरोड़ा 'सरस' के संयोजन एवं धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल' के संचालन में आयोजित इस कार्यक्रम में वाराणसी की चिरपरिचित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'नवरंग' के अध्यक्ष राजेन्द्र बेरी, अनूप नागर, खत्री हितकारिणी सभा के अध्यक्ष राकेश टंडन व महामंत्री आलोक कपूर, सरस्वती इंटर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. महेश तिवारी व उप प्रबन्धक दिनेश मेहरोत्रा, वरिष्ठ गीतकार सुरेन्द्र वाजपेयी, अलकबीर, वाचस्पति उपाध्याय, केशव शरण, नरोत्तम शिल्पी, प्रकाश श्रीवास्तव, राजेन्द्र आहुति, योगेश चतुर्वेदी, विनय कूल आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

□ युवा कवि **विजेन्द्र मिश्र 'दमदार'** के सम्पादन में प्रकाशित काशिका के कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं की काव्यकृति **'काशिका'** का लोकार्पण प्रख्यात गीतकार पं. हरिराम द्विवेदी की अध्यक्षता में श्री रामानन्दाचार्य पीठ के पीठाधीश्वर आचार्य श्री रामनरेशाचार्यजी के कर-कमलों द्वारा विगत जनवरी के अंतिम सप्ताह में संपन्न हुआ, जिसमें काशी के साहित्यकारों, कविजनों, समीक्षकों एवं प्रबुद्ध साहित्य सुधियों ने अपनी सहभागिता प्रदान की। कृति का लोकार्पण करते हुए आचार्यश्री ने संकलनकर्ता विजेन्द्र मिश्र 'दमदार' की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वाराणसी में बड़ी पियरी स्थित 'श्रीविहारम्' के सभाकुंज में संपन्न इस आयोजन का संचालन डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र तथा आभार प्रकाश धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल' ने किया।

❑ प्रतिभाशाली रचनाकार **श्रीमती संध्या श्रीवास्तव** की प्रथम काव्यकृति **'नील गगन के राही'** का लोकार्पण वाराणसी स्थित भारत माता मंदिर के प्रांगण में विगत 27 जनवरी को समीक्षक डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र एवं डालिम्स सनबीम स्कूल के प्राचार्य व लेखक डॉ. अम्बिका प्रसाद गौड़ ने संयुक्त रुप से किया। डॉ. मन्जरी पांडेय के संचालन में संपन्न इस आयोजन में नगर के गणमान्य जन, कवि एवं साहित्यकार आदि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

❑ कानपुर नगर के कवि/हाइकुकार **कैलाश वाजपेयी** के हाइकु-संग्रह **'तीन टिप्पे'** का लोकार्पण 'प्रस्ताव' सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में मुख्य अतिथि साहित्यकार डॉ. मिथिलेश दीक्षित एवं आयोजन के अध्यक्ष वरिष्ठ गीतकार कृष्णकान्त शुक्ल ने किया। कानपुर के किदवई नगर स्थित एक सभाकक्ष में चक्रधर शुक्ल के संचालन में संपन्न इस आयोजन में गीतकार एवं लेखकों में हरीलाल मिलन, जयराम जय, अशोक शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्त 'सीकर', राजकुमार सचान आदि ने अपनी सहभागिता प्रदान की।

❑ अलवर (राज०) की सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्था 'सृजक संस्थान' के तत्वावधान में विगत 30 अप्रैल 2017 को नगर के युवा कवि **श्री रामचरण 'राग'** के प्रथम गीत-संग्रह **'समय कठिन है'** का लोकार्पण वरिष्ठ जनधर्मी, चिंतक एवं कवि श्री रामकुमार कृषक की अध्यक्षता एवं वाराणसी से पधारे वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं संस्कृति सेवक श्री परमानन्द आनन्द के मुख्य आतिथ्य में ससमारोह सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारीं 'कवि-कुंभ' पत्रिका की संपादक श्रीमती रंजीता सिंह 'फलक' एवं देहरादून से पधारे पत्रकार श्री जयप्रकाश त्रिपाठी ने अपनी सहभागिता प्रदान की। लोकार्पण समारोह में मंचासीन अतिथियों ने काव्यकृति की सराहना करते हुए गीतकार का उत्साहवर्धन किया और कहा कि वास्तव में कृतिकार के गीतों में अपने समय का यथार्थ है, जिसकी अनुभूति गीतकार ने बखूबी की है, जो उनकी कृति में परिलक्षित होती है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथिद्वय तथा मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. जीवन सिंह मानवी ने भी समारोह को संबोधित करते हुए गीतकार श्री राग की प्रशंसा की। माँ सरस्वती का स्मरण एवं संस्थान की अध्यक्षा डॉ. अन्जना अनिल के स्वागत उद्‌बोधन से आरंभ इस समारोह में नगर के सभी वरिष्ठ एवं युवा साहित्यकार, कलाधर्मी, कविगण एवं प्रबुद्धजन आदि उपस्थित रहे। श्री खेमेन्द्र सिंह चन्द्रावत के संचालन में संपन्न इस आयोजन में अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन श्री बालाप्रसाद सैनी ने किया।

❑ सृजन साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था, बरेली के कार्यालय में 20 मई 2017 को एक काव्य गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन विनय सागर जायसवाल की अध्यक्षता तथा विशिष्ट अतिथि संजय शाकी एवं भावना जी (दिल्ली) की गौरवमयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। विद्वान् समीक्षक डॉ. नितिन सेठी के संचालन में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का पद श्री रणधीर प्रसाद गौड़ 'धीर' ने सुशोभित किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने कवयित्री **सुषमा भंडारी (नई दिल्ली)** को **'सृजन साहित्य सम्मान'** से नवाजा और उनकी सशक्त लेखनी की प्रशंसा की। आयोजन में काव्यपाठ का सत्र भी आयोजित किया गया था, जिसमें नग़मा बरेलवी, मीरा प्रियदर्शिनी, आबिद मिस्बही, सुभाष राहत, लवलेश पवन आदि ने अपने काव्यपाठ से समारोह को भव्यता प्रदान की।

इस अंक के चित्रकार

विज्ञान व्रत

वार्ता : 09810224571



समस्त सम्मानित एवं लोकार्पित कृतियों के सृजनधर्मियों को पत्रिका परिवार की बधाई

❑ वाराणसी में धार्मिक अनुष्ठान के तहत विगत वर्षों से निरंतर जारी श्री महामृत्युञ्जय महोत्सव का बीसवाँ उत्सव इस वर्ष अप्रैल 2017 के प्रथम सप्ताह में हर्षोल्लास सहित मनाया गया, जिसके अंतर्गत शिवाञ्जलि परिक्रमा, ज्ञानगंगा, शास्त्रीय संगीत संध्या, काव्यगंगा, युवा संगीत संध्या एवं नागरिक अभिनंदन आदि के गरिमामय कार्यक्रम श्री महामृत्युञ्जय महोत्सव प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में सम्पन्न हुए। संस्था के संरक्षक जवाहरलाल शास्त्री के निर्देशन एवं कंचन कुमार कुशवाहा के संयोजन में हुए इस आयोजन में विशेष रूप से काव्यगंगा का सत्र साहित्यकार आचार्य धर्मशील चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति को समर्पित रहा। तीन दिनी इस उत्सव में धर्म-ज्ञान, साहित्य-संगीत एवं काव्यगंगा में डुबकी लगाकर काशीवासी एवं विभिन्न नगरों से पधारे विद्वत्जनों ने पुण्य-लाभ अर्जित किया।

❑ विगत अनेक वर्षों से वाराणसी नागरिक संघ के तत्वावधान में रामनवमी के सुपर्व पर आयोजित होने वाली 'राममय रात' का आयोजन इस वर्ष रजत जयंती के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद घाट के मुक्ताकाशीय मंच पर सुरेश प्रसाद पाण्डेय (अध्यक्ष, वाराणसी नागरिक मंच) के संयोजन में भजन, नृत्य, सुगम संगीत एवं काव्यनिशा के मध्य हर्षोल्लास सहित मनाया गया। आयोजन में प्रख्यात सितारवादक देवव्रत मिश्र, लाला रामकिशुन गुप्ता, सुधीर कुमार रस्तोगी, प्रमोद शाह आदि सहित साहित्यकारों एवं प्रबुद्ध नागरिकों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

❑ साहित्य संगीत परिषद् काशी के संस्थापक अध्यक्ष, ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् एवं कवि डॉ. पवन कुमार शास्त्री का षष्टिपूर्ति समारोह 16 अप्रैल 2017 को श्री आर्य महिला इंटर कॉलेज, वाराणसी के सभागार में श्री रामानन्दाचार्य पीठ के आचार्य एवं विद्वान् धर्मोपदेशक स्वामी श्री रामनरेशाचार्य के प्रधान सान्निध्य तथा महामहोपाध्याय प्रो. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. शास्त्री की कृति **'राम जनम सुलमूल'** की पुस्तक का विमोचन भी मंचासीन विभूतियों ने किया और डॉ. शास्त्री को सुदीर्घ जीवन का शुभाशीष प्रदान किया। समारोह में उपस्थित डॉ. पवन कुमार शास्त्री के अनेकानेक मित्रों, शुभचिंतकों एवं साहित्यकारों ने उन्हें पुष्पहार, उत्तरीय एवं उपहार आदि प्रदान करते हुए काशी अधिपति से उनकी उत्तरोत्तर उन्नति एवं दीर्घायु की कामना की।

❑ श्री महामृत्युञ्जय महोत्सव समिति के संरक्षक एवं सजग संस्कृति सेवक तथा डॉ. लक्ष्मीनारायण कुशवाहा स्मृति सेवा संस्थान के संस्थापक न्यासी जवाहरलाल शास्त्री (एडवोकेट) 'चंचल' की 83वीं वर्षगाँठ उनके कार्यालय 'लक्ष्मी प्रियाय', डॉ. भगवान दास नगर कॉलोनी, सिगरा, वाराणसी में 15 मई 2017 को साहित्यिक आयोजन के मध्य धूमधाम से मनाई गई जिसमें वाराणसी के प्रमुख अधिवक्ताओं, संगीतकारों, कलाविदों, संस्कृतिप्रेमियों, साहित्यकारों एवं शुभचिंतकों ने उपस्थित होकर उन्हें बधाई दी एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन करके श्री शास्त्री के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना की। इस अवसर पर डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ. अत्रि भारद्वाज, नरोत्तम शिल्पी, मोतीलाल, डॉ. पवन कुमार शास्त्री, कंचन कुमार कुशवाहा आदि की प्रमुख उपस्थिति रही।

❑ हास्य-व्यंग्य एवं पत्रकारिता के शिखर पुरुष तथा नव रचनाकारों हेतु प्रेरणास्रोत रहे मोहनलाल गुप्त 'भैय्याजी बनारसी' की 103वीं जयंती काशी सेवा समिति, वाराणसी के सभागार में 11 मई 2017 की सायं गीतपुरुष पं. हरिराम द्विवेदी की अध्यक्षता में मनाई गई। भैय्याजी बनारसी स्मृति न्यास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत न्यास के सचिव एवं भइयाजी के कवि पुत्र राजेन्द्र गुप्त ने किया। तदुपरान्त भइयाजी के चित्र पर अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा की गई। सिद्धनाथ शर्मा के संचालन में संपन्न इस आयोजन में उपस्थित कविजनों ने अपनी काव्यांजलि श्रद्धेय भैय्याजी की स्मृति को समर्पित की। इस अवसर पर डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र, नरोत्तम शिल्पी, डॉ. पवन कुमार शास्त्री, रामगोपाल सर्राफ, बृजेश पांडेय, शंभूनाथ श्रीवास्तव, अपूर्व नारायण तिवारी, धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल' एवं जयशंकर जय आदि की विशेष सहभागिता रही।

अपूरणीय क्षति

❑ चिरपरिचित उपन्यासकार एवं फिल्मों के स्क्रिप्ट राइटर मेरठवासी 62 वर्षीय **'वेदप्रकाश शर्मा'** का फेफड़े में संक्रमण के कारण विगत 18 फरवरी 2017 को निधन हो गया। 06 जून 1955 को जन्में वेदप्रकाश के 'वर्दी वाला गुंडा' उपन्यास ने काफी धूम मचाई थी। उन्होंने लगभग 170 से अधिक उपन्यास साहित्य जगत को दिये हैं।

❑ प्रख्यात हास्य लेखक एवं रंगकर्मी 87 वर्षीय **'पद्मश्री तारक मेहता'** लम्बी बीमारी के चलते विगत अप्रैल 2017 को दिवंगत हो गए। उन्होंने गुजराती स्तंभ 'दुनिया ने ऊंधा चश्मा' से काफी ख्याति अर्जित की थी। उनके पार्थिव शरीर को चिकित्सा अनुसंधान हेतु उनके परिवार के सदस्यों द्वारा दान कर दिया गया।

❑ उर्दू के मशहूर कवि एवं गीतकार **'नक्श लायलपुरी'** जीवन के 89वें पड़ाव पर अपनी बीमारी के चलते दुनिया से कूच कर गए। मौजूदा पाकिस्तान के लायलपुर में जन्में **जसवंत राय शर्मा (नक्श लायलपुरी)** 1940 के दशक में फिल्मों में कैरियर बनाने की सोच से मुंबई आ गए थे और बतौर गीतकार वर्ष 1952 में उन्हें पहली बार एक हिन्दी फिल्म में काम मिला था।

❑ ख्यात कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित लोकप्रिय उपन्यास 'काशी का अस्सी' के प्रमुख किरदार रहे **'तन्नी गुरु'** ने विगत फरवरी में यह नश्वर संसार त्याग दिया। 92 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी **तन्नी गुरु (वास्तविक नाम नरेन्द्र उपाध्याय)** विगत अरसे से किडनी की बीमारी से ग्रसित थे। होमगार्ड कमांडेंट पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे गंगा सेवा सहित विभिन्न सामाजिक व साहित्यिक संगठनों व कार्यों से जीवन पर्यन्त जुड़े रहे।

❑ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में वरिष्ठ प्रवक्ता रहे 85 वर्षीय मूर्धन्य साहित्यकार **प्रो० सूर्यनारायण द्विवेदी** का विगत जनवरी 2017 में हार्ट अटैक से निधन हो गया। वे विगत 2 वर्षों से फाजिल से भी ग्रसित थे। चर्चित कवि एवं से०नि० प्रवक्ता ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी 'शैलेश' के अग्रज पुण्यश्लोक प्रो० द्विवेदी हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत के प्रखर ज्ञाता व विद्वान थे उनकी 'रीति काव्य सिद्धान्त', कहानी संग्रह एवं उपन्यास सहित 16 कृतियाँ प्रकाशित थी।

❑ राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के से०नि० अध्यक्ष प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक **प्रो० बालेंदु शेखर तिवारी** विगत अप्रैल 2017 में गोलोक प्रस्थान कर गए। व्यंग्यालोचक, हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान, हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य आदि कई पुस्तकें उन्होंने साहित्य जगत को दी थी।

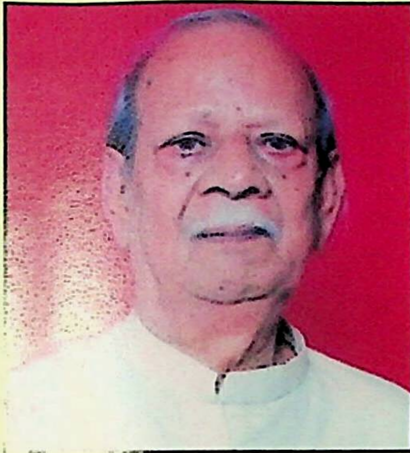
❑ बिनानी कॉलेज मिर्जापुर के सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं सामाजिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक क्षेत्र के अग्रणी सेवाव्रती साहित्यकार **डॉ० छविनाथ पाण्डेय** का विगत फरवरी 2017 को पक्षाघात जनित बीमारी के कारण 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

❑ मुजफ़्फरपुर के वरिष्ठ साहित्यकार 81 वर्षीय **अमरनाथ मेहरोत्रा** ने मई 2017 में शिवसायुज्य प्राप्त किया। अनेक कृतियों के रचयिता मेहरोत्रा जी शिक्षा के स्तर पर एम०ए० दर्शनशास्त्र एवं एल०एल०बी० की डिग्री धारक थे। उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'धारा और किनारा', 'कुण्ठा के कैक्टस', 'खोया हुआ शहर', 'माँ के दूध' ने विशेष रुप से विपुल ख्याति अर्जित की थी। अनेक सम्मानों से अलंकृत मेहरोत्रा जी ने कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादन का दायित्व भी निभाया था।

❑ काशी के अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के सूत्राधार एवं संस्थापक प्रतिष्ठित प्रकाशक **उमाशंकर सिंह** ने 81वर्ष की आयु में विगत 7 मार्च 2017 को गोलोक प्रस्थान किया। 7 अगस्त 1936 को काशी में जन्में श्रीयुत् उमाशंकर जी ने निच्छल संस्कृति सेवक के रुप में अपार ख्याति अर्जित की थी।

❑ वरिष्ठ छायाकार (प्रिन्ट मीडिया) **मंसूर आलम** का 8 मई 2017 को किडनी जनित व्याधि के कारण वाराणसी के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। हर दिल अज़ीज 52 वर्षीय छायाकार श्री आलम प्रिन्ट मीडिया के अतिरिक्त इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं जन सामान्य के बीच अपने कुशल व्यवहार से काफी लोकप्रिय थे।

❑ चर्चित ग़ज़लकार नरहरि अमरोहवी की धर्मपत्नी एवं शायरा **श्रीमती शैलजा नरहरि** का गत 24 अप्रैल को निधन हो गया। पिछले दो महीने से वह गंभीर रुप से आस्थमा से पीडित थीं। उन्होंने लगभग 500 ग़ज़लों की रचना की थी।



प्रेरक स्पंदन

राजशेखर

एहसास की घुटन है.......

गाँव परदेस घर कटघरे हो गये
घाव सीने के फिर से हरे हो गये
हम व्यवस्था का ताबूत ढोते हुए
बोझ से यूँ दबे अधमरे हो गये
ख़ूब है रहबरों की किनाराकशी
आग घर में लगा कर परे हो गये
दूध के गाछ काँटो से उलझे हुए
बेसबब ख़ून के पोखरे हो गये
ऐसी बदनाम है गीत की यह गली
जो भी आये यहाँ...सिरफिरे हो गये

•••

मेरी कंदील, जलो आज रात भर के लिए
दर्द इतना ही बहुत है नयी उमर के लिए
जिसके सीने का ज़ख्म है ये चाँद का टुकड़ा
तरस रहा वो सितारों की इक नज़र के लिए
अपने हाथों में लिए तल्ख़ अँधेरा अपना
उम्र भर भीख माँगते रहे ज़हर के लिए
लगी हैं आँधियाँ बजने कहीं कछारों में
खड़ा है कारवाँ शायद नये सफ़र के लिए
आ गये इतनी दूर पार कर अपनी मंजिल
रोटियाँ भी नहीं हैं आज दोपहर के लिए
सरे-बाज़ार यों नीलाम मत करो यारो
कोई कीमत बड़ी नहीं है मेरे सर के लिए

जो भी हुआ है, दर्द से अपना बड़ा हुआ
कोई तो सही पाँव पे अपने खड़ा हुआ
मँडला रहे हैं गिद्ध सुबह से मुँडेर पर
कमरे में कहीं है कोई मुर्दा पड़ा हुआ
कुत्ता है बहल जायेगा चुपके फेंक दो
दुर्गन्धयुक्त मांस का टुकड़ा सड़ा हुआ
हर घोंसला शिकारगाह है ग़रीब का
हर जिस्म में है बाज़ का चंगुल गड़ा हुआ
इस गंदे सियासत के भेड़िये के हाथ में
हड्डी की अँगूठी में है हीरा जड़ा हुआ

•••

एहसास की घुटन है, यह सूना मकान है
कमरे में मेरे पाँव का ताजा निशान है
पर्दे के पार कैद कोई साँस है मगर
खिड़की की निगाहों में हरा आसमान है
चेहरे की दरारों से झाँकती है एक कब्र....
मीनार के सीने में दर्द बेजुबान है
आईने पे जमी हुई ये धूल की परत....
तूफ़ान भरी जिन्दगी की दास्तान है
जिनकी पहेलियों में सुबह-शाम हो गई,
उनकी गली में आज मेरा इम्तहान है

▫ एस. 2/394ए, सिकरौल, वाराणसी (उ.प्र.), वार्ता : 09889941895